

[शास्त्र] पुस्तकालय

॥ श्रीहरिः ॥

1627

शुक्लयजुर्वेदीय

रुद्राष्टाध्यायी

सानुवाद

[अभिषेक-विधि एवं पूजा-विधानसहित]



गीताप्रेस गोरखपुर
GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

गीताप्रेस, गोरखपुर

शुक्लयजुर्वेदीय
रुद्राष्टाध्यायी

सानुवाद

[अभिषेक-विधि एवं पूजा-विधानसहित]

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥

गीताप्रेस, गोरखपुर

सं० २०७२ तीसवाँ पुनर्मुद्रण २०,०००
कुल मुद्रण ४,२८,०००

❖ मूल्य— ₹ ३०
(तीस रुपये)

प्रकाशक एवं मुद्रक—

गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५

(गोविन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान)

फोन : (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०; फैक्स : (०५५१) २३३६१९७

web: gitapress.org e-mail : booksales@gitapress.org

गीताप्रेस प्रकाशन gitapressbookshop.in से online खरीदें।

सम्पादकीय निवेदन

‘वेदः शिवः शिवो वेदः’ वेद शिव हैं और शिव वेद हैं अर्थात् शिव वेदस्वरूप हैं। यह भी कहा है कि वेद नारायणका साक्षात् स्वरूप है—‘वेदो नारायणः साक्षात् स्वयम्भूरिति शुश्रुम’। इसके साथ ही वेदको परमात्मप्रभुका निःश्वास कहा गया है। इसीलिये भारतीय संस्कृतिमें वेदकी अनुपम महिमा है। जैसे ईश्वर अनादि-अपौरुषेय हैं, उसी प्रकार वेद भी सनातन जगत्में अनादि-अपौरुषेय माने जाते हैं। इसीलिये वेद-मन्त्रोंके द्वारा शिवजीका पूजन, अभिषेक, यज्ञ और जप आदि किया जाता है।

‘शिव’ और ‘रुद्र’ ब्रह्मके ही पर्यायवाची शब्द हैं। शिवको रुद्र इसलिये कहा जाता है—ये ‘रुत्’ अर्थात् दुःखको विनष्ट कर देते हैं—‘रुतम्—दुःखम्, द्रावयति—नाशयतीति रुद्रः।’

रुद्रभगवान्की श्रेष्ठताके विषयमें रुद्रहृदयोपनिषद्में इस प्रकार लिखा है—

सर्वदेवात्मको रुद्रः सर्वे देवाः शिवात्मकाः ।

रुद्रात्प्रवर्तते बीजं बीजयोर्निर्जनार्दनः । यो रुद्रः स स्वयं ब्रह्मा यो ब्रह्मा स हुताशनः ॥

ब्रह्मविष्णुमयो रुद्र अग्नीषोमात्मकं जगत् ॥

—इस प्रमाणके अनुसार यह सिद्ध होता है कि रुद्र ही मूलप्रकृति-पुरुषमय आदिदेव साकार ब्रह्म हैं। वेदविहित यज्ञपुरुष स्वयम्भू रुद्र हैं।

इसीसे भगवान् रुद्र (साम्ब सदाशिव)-की उपासनाके निमित्त 'रुद्राष्टाध्यायी' ग्रन्थ वेदका ही सारभूत संग्रह है। जिस प्रकार दूधसे मक्खन निकाल लिया जाता है, उसी प्रकार जनकल्याणार्थ शुक्लयजुर्वेदसे रुद्राष्टाध्यायीका भी संग्रह हुआ है। इस ग्रन्थमें गृहस्थधर्म, राजधर्म, ज्ञान-वैराग्य, शान्ति, ईश्वरस्तुति आदि अनेक सर्वोत्तम विषयोंका वर्णन है।

मनुष्यका मन विषयलोलुप होकर अधोगतिको प्राप्त न हो और व्यक्ति अपनी चित्तवृत्तियोंको स्वच्छ रख सके— इसके निमित्त रुद्रका अनुष्ठान करना मुख्य और उत्कृष्ट साधन है। यह रुद्रानुष्ठान प्रवृत्ति-मार्गसे निवृत्ति-मार्गको प्राप्त करानेमें समर्थ है।

इस ग्रन्थमें ब्रह्मके निर्गुण एवं सगुण—दोनों रूपोंका वर्णन हुआ है। जहाँ लोकमें इसके जप, पाठ तथा अभिषेक आदि साधनोंसे भगवद्भक्ति, शान्ति, पुत्र-पौत्रादिकी वृद्धि, धन-धान्यकी सम्पन्नता तथा सुन्दर स्वास्थ्यकी प्राप्ति होती है; वहीं परलोकमें सद्गति एवं परमपद (मोक्ष) भी प्राप्त होता है।

वेदके ब्राह्मण-ग्रन्थोंमें, उपनिषदोंमें, स्मृतियों और पुराणोंमें शिवार्चनके साथ 'रुद्राष्टाध्यायी' के पाठ, जप, रुद्राभिषेक आदिकी विशेष महिमाका वर्णन प्राप्त होता है।

वायुपुराणमें लिखा है—

यश्च सागरपर्यन्तां सशैलवनकाननाम् । सर्वात्रात्मगुणोपेतां सुवृक्षजलशोभिताम् ॥
दद्यात् काञ्चनसंयुक्तां भूमिं चौषधिसंयुताम् । तस्मादप्यधिकं तस्य सकृद्रुद्रजपाद्भवेत् ॥
यश्च रुद्राञ्जपेन्नित्यं ध्यायमानो महेश्वरम् । स तेनैव च देहेन रुद्रः सञ्जायते ध्रुवम् ॥

अर्थात् जो व्यक्ति समुद्रपर्यन्त वन, पर्वत, जल एवं वृक्षोंसे युक्त तथा श्रेष्ठ गुणोंसे युक्त ऐसी पृथ्वीका दान करता है, जो धन-धान्य, सुवर्ण और औषधियोंसे युक्त है, उससे भी अधिक पुण्य एक बारके 'रुद्रीजप' एवं 'रुद्राभिषेक'-का है। इसलिये जो भगवान् रुद्रका ध्यान करके रुद्रीका पाठ करता है अथवा रुद्राभिषेक यज्ञ करता है, वह उसी देहसे निश्चित ही रुद्ररूप हो जाता है, इसमें संदेह नहीं है।

इस प्रकार साधन-पूजनकी दृष्टिसे 'रुद्राष्टाध्यायी' का विशेष महत्त्व है। बहुत दिनोंसे यह चर्चा चल रही थी कि गीताप्रेसद्वारा किसी वेदके ग्रन्थका समुचित प्रकाशन अभीतक नहीं हो सका है। इस बार निर्णय लिया गया कि वेदका सारभूत ग्रन्थ 'रुद्राष्टाध्यायी' जो शिवपूजकों एवं द्विजमात्रके लिये अत्यन्त कल्याणकारी है, उसका सर्वप्रथम प्रकाशन किया जाय। अतः गीताप्रेसके द्वारा वेदके प्रकाशनका यह प्रथम प्रयास है।

प्रायः कुछ लोगोंमें यह धारणा है कि मूलरूपसे वेदमन्त्र पुण्यप्रदायक हैं, अतः इन मन्त्रोंका केवल पाठ और श्रवणमात्र

ही आवश्यक है। वेदार्थ एवं वेदके गम्भीर तत्त्वोंसे वे विद्वान् प्रायः अनभिज्ञ रहते हैं। वास्तवमें उनकी यह धारणा उचित नहीं है। वैदिक विद्वानोंको वेदके अर्थ एवं उनके तत्त्वोंसे पूर्णतः परिचित होना चाहिये। प्राचीन ग्रन्थोंमें भी वेदार्थ एवं वेद-तत्त्वार्थकी बड़ी महिमा गायी गयी है। निरुक्तकार कहते हैं कि जो वेद पढ़कर उसका अर्थ नहीं जानता, वह भारवाही पशुके समान है अथवा निर्जन वनके सुमधुर उस रसाल वृक्षके समान है, जो न स्वयं उस अमृतरसका आस्वादन करता है और न किसी अन्यको ही देता है। अतः वेदमन्त्रोंके अर्थका ज्ञाता पूर्णरूपसे कल्याणका भागी होता है—

स्थाणुरयं भारहारः किलाभूदधीत्य वेदं न विजानाति योऽर्थम्।

योऽर्थज्ञ इत् सकलं भद्रमश्नुते नाकमेति ज्ञानविधूतपाप्मा ॥ (निरुक्त)

इन सब दृष्टियोंसे 'रुद्राष्टाध्यायी' का अर्थसहित प्रकाशन किया गया है। सर्वसाधारणके समझनेकी दृष्टिसे मन्त्रोंका सरल भावार्थ देनेका प्रयास किया गया है। सविधि पाठ एवं अनुष्ठान करनेकी दृष्टिसे प्रारम्भमें मन्त्रोंके विनियोग तथा अङ्गन्यास भी दिये गये हैं तथा अभिषेक और पाठके पूर्व शिवार्चनकी विधि और उसके प्रकारका भी यथासाध्य निरूपण करनेका प्रयास किया गया है। आशा है, सुधीगण इससे लाभान्वित होंगे।

—राधेश्याम खेमका

शुक्लयजुर्वेद-संहितामें रुद्राष्टाध्यायी एवं रुद्रमाहात्म्यका अवलोकन

‘वेदोऽखिलो धर्ममूलम्’—श्रीमनु महाराजके कथनानुसार भगवान् वेद सर्वधर्मोंके मूल हैं या सर्वधर्ममय हैं। वेदों एवं उनकी विभिन्न संहिताओंमें प्रकृतिके अनेक तत्त्वों—आकाश, जल, वायु, उषा, संध्या इत्यादिके तथा इन्द्र, सूर्य, सोम, रुद्र, विष्णु आदि देवोंके वर्णन और स्तुति-सूक्त प्राप्त होते हैं। इनमें कुछ ऋचाएँ निवृत्तिप्रधान एवं कुछ प्रवृत्तिप्रधान हैं। शुक्लयजुर्वेद-संहिताके अन्तर्गत ‘रुद्राष्टाध्यायी’के रूपमें भगवान् रुद्रका विशद वर्णन निहित है। भक्तगण इस रुद्राष्टाध्यायीके मन्त्रपाठके साथ जल, दुग्ध, पञ्चामृत, आम्ररस, इक्षुरस, नारिकेलरस, गङ्गाजल आदिसे शिवलिङ्गका अभिषेक करते हैं।

शिवपुराणमें सनकादि ऋषियोंके प्रश्नपर स्वयं शिवजीने रुद्राष्टाध्यायीके मन्त्रोंद्वारा अभिषेकका माहात्म्य बतलाया है, भूरि-भूरि प्रशंसा की है और बड़ा फल बताया है। धर्मशास्त्रके विद्वानोंने रुद्राष्टाध्यायीके छः अङ्ग निश्चित किये हैं, तदनुसार रुद्राष्टाध्यायीके प्रथमाध्यायका शिवसङ्कल्पसूक्त हृदय है। द्वितीयाध्यायका पुरुषसूक्त सिर एवं उत्तरनारायणसूक्त शिखा है। तृतीयाध्यायका अप्रतिरथसूक्त कवच है, चतुर्थाध्यायका मैत्रसूक्त नेत्र है एवं पञ्चमाध्यायका शतरुद्रियसूक्त अस्त्र कहलाता है। जिस प्रकार एक योद्धा युद्धमें अपने अङ्गों एवं आयुधोंको सुसज्ज-सावधान करता है, उसी प्रकार अध्यात्ममार्गी साधक रुद्राष्टाध्यायीके पाठ एवं अभिषेकके लिये सुसज्ज होता है। अतः हृदय, सिर, शिखा, कवच, नेत्र, अस्त्र इत्यादि नामाभिधान दृष्टिगोचर होते हैं। रुद्राष्टाध्यायीके प्रत्येक अध्यायका किञ्चित् अवगाहन यहाँ प्रस्तुत है—

प्रथमाध्यायका प्रथम मन्त्र—‘गणानां त्वा गणपतिः हवामहे’ बहुत ही प्रसिद्ध है। कर्मकाण्डके विद्वान् इस मन्त्रका विनियोग श्रीगणेशजीके ध्यान-पूजनमें करते हैं। यह मन्त्र ब्रह्मणस्पतिके लिये भी प्रयुक्त होता है। शुक्लयजुर्वेद-संहिताके भाष्यकार श्रीउच्चटाचार्य एवं महीधराचार्यने इस मन्त्रका एक अर्थ अश्वमेधयज्ञके अश्वकी स्तुतिके रूपमें भी किया है।

द्वितीय एवं तृतीय मन्त्रमें गायत्री आदि वैदिक छन्दों तथा छन्दोंमें प्रयुक्त चरणोंका उल्लेख है। पाँचवें मन्त्र 'यज्जाग्रतो'-से दशम मन्त्र 'सुषारथि' पर्यन्तका मन्त्रसमूह 'शिवसङ्कल्पसूक्त' कहलाता है। इन मन्त्रोंका देवता 'मन' है। इन मन्त्रोंमें मनकी विशेषताएँ वर्णित हैं। प्रत्येक मन्त्रके अन्तमें 'तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु' पद आनेसे इसे 'शिवसङ्कल्पसूक्त' कहा गया है। साधकका मन शुभ विचारवाला हो, इसमें ऐसी प्रार्थना की गयी है। परम्परानुसार यह अध्याय श्रीगणेशजीका माना जाता है।

द्वितीयाध्यायमें 'सहस्रशीर्षा पुरुषः' से 'यज्ञेन यज्ञम्' पर्यन्त १६ मन्त्र पुरुषसूक्तके रूपमें हैं। इन मन्त्रोंके नारायण ऋषि हैं एवं विराट् पुरुष देवता हैं।

विविध देवपूजामें आवाहनसे मन्त्र-पुष्पाञ्जलितकका षोडशोपचार-पूजन प्रायः इन्हीं मन्त्रोंसे सम्पन्न होता है। विष्णुयागादि वैष्णवयज्ञोंमें भी पुरुषसूक्तके मन्त्रोंसे यज्ञ होता है।

पुरुषसूक्तके प्रथम मन्त्रमें विराट् पुरुषका अति भव्य-दिव्य वर्णन प्राप्त होता है। अनेक सिरोंवाले, अनेक आँखोंवाले, अनेक चरणोंवाले वे विराट् पुरुष समग्र ब्रह्माण्डमें व्याप्त होकर दस अंगुल ऊपर स्थित हैं।

द्वितीयाध्यायके १७वें मन्त्र 'अद्भ्यः सम्भृतः' से 'श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च' अन्तिम मन्त्रपर्यन्त—ये ६ मन्त्र उत्तरनारायण सूक्तके रूपमें प्रसिद्ध हैं। 'श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च' यह मन्त्र श्रीलक्ष्मीदेवीके पूजनमें प्रयुक्त होता है। द्वितीयाध्याय भगवान् विष्णुका माना जाता है।

तृतीयाध्याय अप्रतिरथसूक्तके रूपमें ख्यात है। कतिपय मनीषी 'आशुः शिशानः' से आरम्भ करके 'अमीषाञ्चित्तम्' पर्यन्त द्वादश मन्त्रोंको स्वीकारते हैं। कुछ विद्वान् इन मन्त्रोंके उपरान्त 'अवसृष्टा' से 'मर्माणि ते' पर्यन्त ५ मन्त्रोंका भी समावेश करते हैं।

तृतीयाध्यायके देवता देवराज इन्द्र हैं। इस अध्यायको अप्रतिरथसूक्त माननेका कारण कदाचित् यह है कि इन मन्त्रोंके

ऋषि अप्रतिरथ हैं। भावात्मक दृष्टिसे विचार करें तो अवगत होता है कि इन मन्त्रोंद्वारा इन्द्रकी उपासना करनेसे शत्रुओं-स्पर्धकोंका नाश होता है, अतः यह 'अप्रतिरथ' नाम सार्थक प्रतीत होता है। उदाहरणके रूपमें प्रथम मन्त्रका अवलोकन करें—

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतशः सेना अजयत् साकमिन्द्रः ॥

अर्थात् 'त्वरसे गति करके शत्रुओंका नाश करनेवाला, भयंकर वृषभकी तरह सामना करनेवाले प्राणियोंको क्षुब्ध करके नाश करनेवाला, मेघकी तरह गर्जना करनेवाला, शत्रुओंका आवाहन करनेवाला, अति सावधान, अद्वितीय वीर, एकाकी पराक्रमी देवराज इन्द्र शतशः सेनाओंपर विजय प्राप्त करता है।'

चतुर्थाध्यायमें सप्तदश मन्त्र हैं। जो मैत्रसूक्तके रूपमें ज्ञात हैं। इन मन्त्रोंमें भगवान् मित्र—सूर्यकी स्तुति है। मैत्रसूक्तमें भगवान् भुवनभास्करका मनोरम वर्णन प्राप्त होता है—

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

अर्थात् रात्रिके समयमें अन्धकारमय तथा अन्तरिक्ष लोकमेंसे पुनः-पुनः उदीयमान, देवोंको तथा मनुष्योंको स्व-स्व कार्योंमें नियोजित करनेवाले, सबके प्रेरक, प्रकाशमान भगवान् सूर्य सुवर्णरंगी रथमें बैठ करके सर्वभुवनोंके लोगोंकी पाप-पुण्यमयी प्रवृत्तियोंका निरीक्षण करते हैं।

रुद्राष्टाध्यायीके पाँचवें अध्यायमें ६६ मन्त्र हैं। यह अध्याय प्रधान है। विद्वान् इसको 'शतरुद्रिय' कहते हैं। 'शतसंख्याता रुद्रदेवता अस्येति शतरुद्रियम्।' इन मन्त्रोंमें भगवान् रुद्रके शतशः रूप वर्णित हैं।

कई ग्रन्थोंमें शतरुद्रियके पाठका महत्त्व वर्णित है। कैवल्योपनिषद्में कहा गया है कि शतरुद्रियके अध्ययनसे मनुष्य अनेक पातकोंसे मुक्त होता है एवं पवित्र बनता है। जाबालोपनिषद्में ब्रह्मचारियों और श्रीयाज्ञवल्क्यजीके संवादमें ब्रह्मचारियोंने तत्त्वनिष्ठ

ऋषिसे पूछा कि किसके जपसे अमृतत्व प्राप्त होता है? तब ऋषिका प्रत्युत्तर था कि 'शतरुद्रियके जपसे'—'शतरुद्रियेणेति।' विद्वानोंकी परम्पराके अनुसार पञ्चमाध्यायके एकादश आवर्तन और शेष अध्यायोंके एक आवर्तनके साथ अभिषेकसे एक 'रुद्र' या 'रुद्री' होती है। इसे 'एकादशिनी' भी कहते हैं। एकादश रुद्रीसे लघुरुद्र, एकादश लघुरुद्रसे महारुद्र एवं एकादश महारुद्रसे अतिरुद्रका अनुष्ठान होता है। इन सबका अभिषेकात्मक, पाठात्मक एवं होमात्मक त्रिविध विधान मिलता है। मन्त्रोंके क्रमसे रुद्राभिषेकके नमक-चमक आदि प्रकार हैं। प्रदेशभेदसे भी कुछ विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

शतरुद्रियको 'रुद्रसूक्त' भी कहते हैं। इसमें भगवान् रुद्रका भव्यातिभव्य वर्णन हुआ है। प्रथम मन्त्रका आस्वाद लें—
ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥

'हे रुद्रदेव! आपके क्रोधको हमारा नमस्कार है। आपके बाणोंको हमारा नमस्कार है एवं आपकी बाहुओंको हमारा नमस्कार है।' भगवान् शिवका रुद्रस्वरूप दुष्टनिग्रहणार्थ है, अतः इस मन्त्रमें रुद्रदेवके क्रोधको, बाणोंको एवं उनको चलानेवाली बाहुओंको नमस्कार समर्पण किया गया है।

'रुद्र' शब्दकी निरुक्तिके अनुसार भगवान् रुद्र दुःखनाशक, पापनाशक एवं ज्ञानदाता हैं। रुद्रसूक्तमें भगवान् रुद्रके विविध स्वरूप वर्णित हैं, यथा—गिरीश, अधिवक्ता, सुमङ्गल, नीलग्रीव, सहस्राक्ष, कपर्दी, मीढुष्टम, हिरण्यबाहु, सेनानी, हरिकेश, अन्नपति, जगत्पति, क्षेत्रपति, वनपति, वृक्षपति, औषधीपति, सत्त्वपति, स्तेनपति, गिरिचर, सभापति, श्वपति, गणपति, व्रातपति, विरूप, विश्वरूप, भव, शर्व, शितिकण्ठ, शतधन्वा, ह्रस्व, वामन, बृहत्, वृद्ध, ज्येष्ठ, कनिष्ठ, श्लोक्य, आशुषेण, आशुरथ, कवची, श्रुतसेन, सुधन्वा, सोम, उग्र, भीम, शम्भु, शंकर, शिव, तीर्थ्य, ब्रज्य, नीललोहित, पिनाकधारी, सहस्रबाहु तथा ईशान इत्यादि।

—इन विविध स्वरूपोंद्वारा भगवान् रुद्रकी अनेकविधता एवं अनेक लीलाओंका दर्शन होता है। रुद्रदेवताको स्थावर-जंगम

सर्वपदार्थरूप, सर्ववर्ण, सर्वजाति, मनुष्य-देव-पशु-वनस्पतिरूप मान करके सर्वात्मभाव, सर्वान्तर्यामित्वभाव सिद्ध किया गया है। इस भावसे ज्ञात होकर साधक अद्वैतनिष्ठ जीवन्मुक्त बनता है।

षष्ठाध्यायको 'महच्छिर' के रूपमें जाना जाता है। प्रथम मन्त्रमें सोमदेवताका वर्णन है। सुप्रसिद्ध महामृत्युञ्जय-मन्त्र इसी अध्यायमें संनिविष्ट है—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥

प्रस्तुत मन्त्रमें भगवान् त्र्यम्बक शिवजीसे प्रार्थना है कि जिस प्रकार ककड़ीका परिपक्व फल वृन्तसे मुक्त हो जाता है, उसी प्रकार हमें आप जन्म-मरणके बन्धनसे मुक्त करें, हम आपका यजन करते हैं।

सप्तमाध्यायको 'जटा' कहा जाता है। 'उग्रश्चभीमश्च' मन्त्रमें मरुत् देवताका वर्णन है। इस अध्यायके 'लोमभ्यः स्वाहा' से 'यमाय स्वाहा' तकके मन्त्र कई विद्वान् अभिषेकमें ग्रहण करते हैं और कई विद्वान् इनको अस्वीकार करते हैं; क्योंकि अन्त्येष्टि-संस्कारमें चिताहोममें इन मन्त्रोंसे आहुतियाँ दी जाती हैं।

अष्टमाध्यायको 'चमकाध्याय' कहा जाता है, इसमें कुल २९ मन्त्र हैं। प्रत्येक मन्त्रमें 'च' कार एवं 'मे' का बाहुल्य होनेसे कदाचित् चमकाध्याय अभिधान रखा गया है।

चमकाध्यायके ऋषि 'देव' स्वयं हैं। देवता अग्नि हैं, अतः यह अध्याय अग्निदैवत्य या यज्ञदैवत्य माना जाता है। प्रत्येक मन्त्रके अन्तमें 'यज्ञेन कल्पन्ताम्' यह पद आता है। यज्ञ एवं यज्ञके साधनरूप जिन-जिन वस्तुओंकी आवश्यकता हो, वे सभी यज्ञके फलसे प्राप्त होती हैं। ये वस्तुएँ यज्ञार्थ, जनसेवार्थ एवं परोपकारार्थ उपयुक्त हों, ऐसी शुभभावना यहाँ निहित है।

रुद्राष्टाध्यायीके उपसंहारमें 'ऋचं वाचं प्रपद्ये' इत्यादि २४ मन्त्र शान्त्याध्यायके रूपमें एवं 'स्वस्ति न इन्द्रो' इत्यादि १२ मन्त्र

स्वस्ति-प्रार्थनाके रूपमें ख्यात हैं। शान्त्याध्यायमें विविध देवोंसे अनेकशः शान्तिकी प्रार्थना की गयी है। मित्रताभरी दृष्टिसे देखनेकी बात बड़ी उदात्त एवं भव्य है—

ॐ दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥

साधक प्रभुप्रीत्यर्थ एवं सेवार्थ अपनेको स्वस्थ बनाना चाहता है। स्वकीय दीर्घजीवन आनन्द एवं शान्तिपूर्ण व्यतीत हो, ऐसी आकाङ्क्षा रखता है—‘पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतम्’॥’

स्वस्ति-प्रार्थनाके निम्न मन्त्रमें देवोंका सामञ्जस्य सुचारुरूपमें वर्णित है। ‘एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति’, यह उपनिषद्-वाक्य यहाँ चरितार्थ होता है—

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता॥

इस प्रकार शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायीमें भगवान् रुद्रका माहात्म्य विविधता-विशदतासे सम्पूर्णतया आच्छादित है। कविकुलगुरु कालिदासने ‘अभिज्ञानशाकुन्तल’ नाटकके मङ्गलश्लोक ‘या सृष्टिः स्रष्टुराद्या’ द्वारा शिवजीकी जिन अष्टविभूतियोंका वर्णन किया है, वे रुद्राष्टाध्यायीके आठ अध्यायोंमें भी विलसित हैं।

अन्तमें शिवजीकी वन्दना वैदिक मन्त्रद्वारा की जा रही है—

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥

‘ॐ तत्सत्’।

जाननेयोग्य आवश्यक बातें

रुद्रपाठकी महिमा

आशुतोष भगवान् सदाशिवकी उपासनामें रुद्राष्टाध्यायीका विशेष माहात्म्य है। शिवपुराणमें सनकादि ऋषियोंके प्रश्न करनेपर स्वयं शिवजीने रुद्राष्टाध्यायीके मन्त्रोंद्वारा अभिषेकका माहात्म्य बतलाते हुए कहा है कि मन, कर्म तथा वाणीसे परम पवित्र तथा सभी प्रकारकी आसक्तियोंसे रहित होकर भगवान् शूलपाणिकी प्रसन्नताके लिये रुद्राभिषेक करना चाहिये। इससे वह भगवान् शिवकी कृपासे सभी कामनाओंको प्राप्त करता है और अन्तमें परम गतिको प्राप्त होता है। रुद्राष्टाध्यायीद्वारा रुद्राभिषेकसे मनुष्योंकी कुलपरम्पराको भी आनन्दकी प्राप्ति होती है—

मनसा कर्मणा वाचा शुचिः संगविवर्जितः। कुर्याद् रुद्राभिषेकं च प्रीतये शूलपाणिनः॥

सर्वान् कामानवाप्नोति लभते परमां गतिम्। नन्दते च कुलं पुंसां श्रीमच्छम्भुप्रसादतः॥

वायुपुराणमें आया है कि रुद्राष्टाध्यायीके नमक (पञ्चम अध्याय) और चमक (अष्टम अध्याय) तथा पुरुषसूक्तका प्रतिदिन तीन बार जप (पाठ) करनेसे मनुष्य ब्रह्मलोकमें प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। जो नमक, चमक, होतृमन्त्रों और पुरुषसूक्तका सर्वदा जप करता है, वह उसी प्रकार महादेवजीमें प्रवेश करता है, जिस प्रकार घरका स्वामी अपने घरमें प्रवेश करता है। जो मनुष्य अपने शरीरमें भस्म लगाकर, भस्ममें शयनकर और जितेन्द्रिय होकर निरन्तर रुद्राध्यायका पाठ करता है, वह परा मुक्तिको प्राप्त करता है। जो रोगी और पापी जितेन्द्रिय होकर रुद्राध्यायका पाठ करता है, वह रोग और पापसे मुक्त होकर अद्वितीय सुख प्राप्त करता है—

नमकं चमकं चैव पौरुषं सूक्तमेव च। नित्यं त्रयं प्रयुञ्जानो ब्रह्मलोके महीयते॥

नमकं चमकं होतृन् पुरुषसूक्तं जपेत् सदा । प्रविशेत् स महादेवं गृहं गृहपतिर्यथा ॥
 भस्मदिग्धशरीरस्तु भस्मशायी जितेन्द्रियः । सततं रुद्रजाप्योऽसौ परां मुक्तिमवाप्स्यति ॥
 रोगवान् पापवांश्चैव रुद्रं जप्त्वा जितेन्द्रियः । रोगात् पापाद्विनिर्मुक्तो ह्यतुलं सुखमश्नुते ॥
 शतरुद्रियपाठ*

शतरुद्रिय रुद्राष्टाध्यायीका मुख्य भाग है। शतरुद्रियका माहात्म्य रुद्राष्टाध्यायीका ही माहात्म्य है। मुख्यरूपसे रुद्राष्टाध्यायीका पञ्चम अध्याय शतरुद्रिय कहलाता है। इसमें भगवान् रुद्रके शताधिक नामोंद्वारा उन्हें नमस्कार किया गया है। 'शतं रुद्रा देवता अस्येति शतरुद्रीयमुच्यते' (भट्टभास्करका उपोद्धात भाष्य)। शतरुद्रियका पाठ अथवा जप समस्त वेदोंके पारायणके तुल्य माना गया है। शतरुद्रियको रुद्राध्याय भी कहा गया है। भगवान् वेदव्यासजीने अर्जुनको इसकी महिमा बताते हुए कहा है—

धन्यं यशस्यमायुष्यं पुण्यं वेदैश्च सम्मितम् ।

सर्वार्थसाधनं पुण्यं सर्वकिल्बिषनाशनम् । सर्वपापप्रशमनं सर्वदुःखभयापहम् ।

पठन् वै शतरुद्रीयं शृण्वंश्च सततोत्थितः ॥

भक्तो विश्वेश्वरं देवं मानुषेषु च यः सदा । वरान् कामान् स लभते प्रसन्ने त्र्यम्बके नरः ॥

(महा०, द्रोणपर्व २०२।१४८-१४९, १५१-१५२)

पार्थ! वेदसम्मित यह शतरुद्रिय परम पवित्र तथा धन, यश और आयुकी वृद्धि करनेवाला है। इसके पाठसे सम्पूर्ण मनोरथोंकी

* कुछ लोग समयाभावके कारण कम समयमें अभिषेक करना चाहते हैं, उनके लिये शास्त्रोंमें शतरुद्रियपाठका भी विधान बतलाया गया है।

सिद्धि होती है। यह पवित्र, सम्पूर्ण किल्बिषोंका नाशक, सब पापोंका निवारक तथा सब प्रकारके दुःख और भयको दूर करनेवाला है। जो सदा उद्यत रहकर शतरुद्रियको पढ़ता और सुनता है तथा मनुष्योंमें जो कोई भी निरन्तर भगवान् विश्वेश्वरका भक्तिभावसे भजन करता है, वह उन त्रिलोचनके प्रसन्न होनेपर समस्त उत्तम कामनाओंको प्राप्त कर लेता है।

अथर्ववेदीय जाबालोपनिषद्में महर्षि याज्ञवल्क्यजीने शतरुद्रियको अमृतत्वका साधन कहा है। * कृष्णयजुर्वेदीय कैवल्योपनिषद्में शतरुद्रियको कैवल्यपदप्राप्तिका साधन बताया गया है। पितामह भगवान् ब्रह्माजीने महर्षि आश्वलायनसे शतरुद्रियकी महिमा इस प्रकार बतायी है—

यः शतरुद्रियमधीते सोऽग्निपूतो भवति स वायुपूतो भवति स आत्मपूतो भवति स सुरापानात्पूतो भवति स ब्रह्महत्यायाः पूतो भवति स सुवर्णस्तेयात्पूतो भवति स कृत्याकृत्यात्पूतो भवति तस्मादविमुक्तमाश्रितो भवत्यत्याश्रमी सर्वदा सकृद्वा जपेत् ॥
अनेन ज्ञानमाप्नोति संसारार्णवनाशनम् । तस्मादेवं विदित्वैनं कैवल्यं पदमश्नुते कैवल्यं पदमश्नुत इति ॥

अर्थात् जो शतरुद्रियका पाठ करता है, वह अग्निपूत होता है, वायुपूत होता है, आत्मपूत होता है, सुरापानके दोषसे छूट जाता है, ब्रह्महत्याके दोषसे मुक्त हो जाता है, स्वर्णकी चोरीके पापसे छूट जाता है, शुभाशुभ कर्मोंसे उद्धार पाता है, भगवान् सदाशिवके आश्रित हो जाता है तथा वह अविमुक्तस्वरूप हो जाता है। अतएव जो आश्रमसे अतीत हो गये हैं, उन परमहंसोंको सदा-सर्वदा अथवा कम-से-कम एक बार इसका पाठ अवश्य करना चाहिये। इससे उस ज्ञानकी प्राप्ति होती है, जो भवसागरका नाश कर देता है। इसलिये इसको इस प्रकार जानकर मनुष्य कैवल्यरूप मुक्तिको प्राप्त होता है, कैवल्यपदको प्राप्त होता है।

* अथ हैनं ब्रह्मचारिण ऊचुः किं जप्येनामृतत्वं ब्रूहीति ॥ स होवाच याज्ञवल्क्यः ॥ शतरुद्रियेणेत्येतान्येव ह वा अमृतस्य नामानि ॥ एतैर्ह वा अमृतो भवतीति एवमेवैतद्याज्ञवल्क्यः ॥ (जाबालोपनिषद् ३)

शतरुद्रिय नामसे एक सौ मन्त्रोंके पाठकी परम्परा भी कहीं-कहीं है। इस संदर्भमें निम्न श्लोक प्रसिद्ध है—

षट्षष्टिर्नीलसूक्तं च पुनः षोडशमेव च। एष ते द्वे नमस्ते द्वे न तं विदद्वयमेव च॥

मीढुष्टमेति चत्वारि वयः सोमाष्टमेव च। वेदवादिभिराख्यातमेतद्वै शतरुद्रियम्॥

अर्थात् रुद्राष्टाध्यायीके पञ्चम अध्यायके 'नमस्ते रुद्र०' इत्यादि ६६ मन्त्र, फिर उसी पञ्चम अध्यायके प्रारम्भिक १६ मन्त्र, तदनन्तर रुद्राष्टाध्यायीके छठे अध्यायके 'एष ते०' और 'अवरुद्र०' ये दो मन्त्र, फिर रुद्राष्टाध्यायीके पञ्चम अध्यायके 'नमस्ते' और 'या ते०' ये दो मन्त्र, फिर शुक्ल यजुर्वेदसंहिताके १७वें अध्यायके ३१वें तथा ३२वें मन्त्र ('न तं विद०' तथा 'विश्वकर्मा०') तदनन्तर रुद्राष्टाध्यायीके पञ्चम अध्यायके ५१वें मन्त्रसे ५४वें मन्त्र ('मीढुष्टम शिवतम०' से 'असंख्याता सहस्त्राणि०')—तक और फिर रुद्राष्टाध्यायीके सम्पूर्ण छठे अध्यायके आठ मन्त्रोंका यथोक्त रूपसे आनुपूर्वी पाठ करनेपर सौ मन्त्र हो जाते हैं। सौ मन्त्र होनेसे इसे शतरुद्रिय कहा जाता है। [रुद्रकल्पद्रुम आदिमें इस पक्षको निर्मूल बताया गया है—'तन्निर्मूलमिति' (रुद्रकल्पद्रुम १८१)।] इनके अनुसार पञ्चम अध्यायके ६६ मन्त्रके पाठसे ही शतरुद्रिय पूरी हो जाती है। सामान्यतः सम्पूर्ण रुद्राष्टाध्यायीके द्वारा रुद्राभिषेकादि कार्य अधिक प्रचलित एवं प्रशस्त है।

रुद्रपाठके भेद [अभिषेक-विधि]

शास्त्रोंमें रुद्रपाठके पाँच प्रकार बताये गये हैं—१-रूपक या षडङ्गपाठ, २-रुद्री या एकादशिनी, ३-लघुरुद्र, ४-महारुद्र तथा ५-अतिरुद्र।* यहाँ संक्षेपमें इनका विवरण दिया जा रहा है—

* रुद्राः पञ्चविधाः प्रोक्ता देशिकैरुत्तरोत्तरम्। साङ्गस्त्वाद्यो रूपकाख्यः सशीर्षो रुद्र उच्यते॥
एकादशगुणैस्तद्वद् रुद्री संज्ञो द्वितीयकः। एकादशभिरेताभिस्तृतीयो लघुरुद्रकः॥

१-रूपक या षडङ्गपाठ—सम्पूर्ण रुद्राष्टाध्यायीमें १० अध्याय हैं, प्रथम आठ अध्यायोंमें भगवान् रुद्र—शिवकी विशेष महिमा तथा उनकी कृपाशक्तिका वर्णन होनेसे ये आठ अध्याय रुद्राष्टाध्यायीके नामसे प्रसिद्ध हैं। ९वें अध्यायमें 'ऋचं वाचं प्रपद्ये०' इत्यादि २४ मन्त्र हैं। यह अध्याय शान्त्यध्यायके नामसे जाना जाता है। अन्तिम १०वें अध्यायमें 'स्वस्ति न इन्द्रो०' इत्यादि बारह मन्त्र हैं, जो स्वस्तिप्रार्थनाध्यायके नामसे प्रसिद्ध हैं। दस अध्याय होनेपर भी नाम रुद्राष्टाध्यायी ही है।

इस प्रकार पूरे दस अध्यायोंकी एक सामान्य आवृत्ति रूपक या षडङ्गपाठ कहलाता है। रुद्रके छः अङ्ग कहे गये हैं, इन छः अङ्गोंका यथाविधि पाठ ही षडङ्गपाठ कहा जाता है। ये छः अङ्ग इस प्रकार हैं*—

रुद्राष्टाध्यायीके प्रथम अध्यायके 'यज्जाग्रतो०' से लेकर छः मन्त्रोंको शिवसङ्कल्पसूक्त कहा गया है। यह सूक्त रुद्रका प्रथम हृदयरूपी अङ्ग है। द्वितीय अध्यायके प्रारम्भसे १६ मन्त्रोंको पुरुषसूक्त कहते हैं, यह पुरुषसूक्त रुद्रका द्वितीय सिररूपी अङ्ग है। इसी द्वितीय अध्यायके अन्तिम छः मन्त्रोंको उत्तरनारायणसूक्त कहते हैं। यह शिखास्थानीय रुद्रका तीसरा अङ्ग है। तृतीयाध्यायके 'आशुः शिशानः०' से लेकर द्वादश मन्त्रोंको अप्रतिरथसूक्त कहा जाता है। यह रुद्रका कवचरूप चतुर्थ अङ्ग है। चतुर्थाध्यायके 'बिभ्राद् बृहत्०' मन्त्रसे लेकर पूरा चतुर्थ अध्याय मैत्रसूक्त कहलाता है। यह रुद्रका नेत्ररूप पञ्चम अङ्ग

लघ्वेकादशभिः प्रोक्तो महारुद्रश्चतुर्थकः । पञ्चमः स्यान्महारुद्रैकादशभिरन्तिमः ॥

अतिरुद्रः समाख्यातः सर्वेभ्यो ह्युत्तमोत्तमः ॥ (रुद्रकल्पद्रुम)

- * शिवसंकल्पहृदयं सूक्तं स्यात् पौरुषं शिरः । प्राहुर्नारायणीयं च शिखा स्याच्चोत्तराभिधम् ॥
आशुः शिशानः कवचं नेत्रं बिभ्राद् बृहत्स्मृतम् । शतरुद्रियमस्त्रं स्यात् षडङ्गक्रम ईरितः ॥
हृच्छिरस्तु शिखा वर्म नेत्रं चास्त्रं महामते । प्राहुर्विधिज्ञा रुद्रस्य षडङ्गानि स्वशास्त्रतः ॥

है। 'नमस्ते रुद्र०' से प्रारम्भकर पूरा पञ्चम अध्याय शतरुद्रिय कहलाता है। यह रुद्रका अस्वरूप षष्ठ अङ्ग है। पञ्चम अध्यायके मन्त्रोंमें 'नमस्ते' पदके प्राधान्यसे इसे 'नमकाध्याय' भी कहा जाता है।

इन छः अङ्गों (पाँच अध्यायों)-का पाठ करनेके पश्चात् षष्ठाध्याय तथा सप्तम अध्यायका पाठ होता है। 'वयः सोम०' आदि अष्ट-मन्त्रात्मक षष्ठाध्याय रुद्रके 'महच्छिर' के नामसे जाना जाता है। 'उग्रश्च०' इत्यादि सप्त-मन्त्रात्मक सप्तम अध्याय 'जटा' नामसे विख्यात है। इन दो अध्यायोंके पाठके अनन्तर आठवें चमकाध्यायका पाठ करना चाहिये। इस अध्यायके मन्त्रोंमें 'च' कार और 'मे' का बाहुल्य होनेसे यह अध्याय 'चमकाध्याय' कहलाता है। इस अध्यायके पाठके अनन्तर अन्तमें शान्त्यध्याय तथा स्वस्तिप्रार्थनाध्यायका पाठ करना चाहिये। इस प्रकार सम्पूर्ण रुद्राष्टाध्यायीके दस अध्यायोंका पाठ षडङ्ग या रूपकपाठ कहलाता है। षडङ्गपाठमें विशेष बात यह है कि इसमें आठवें अध्यायके साथ पाँचवें अध्यायकी आवृत्ति नहीं होती।

२. रुद्री या एकादशिनी—षडङ्गपाठमें नमकाध्याय (पञ्चम) तथा चमकाध्याय (अष्टम)-का संयोजन कर रुद्राध्यायकी की गयी ग्यारह आवृत्तिको रुद्री या एकादशिनी कहते हैं। आठवें अध्यायके साथ पाँचवें अध्यायकी जो आवृत्ति होती है, उसके लिये शास्त्रोंका निश्चित विधान है, * तदनुसार आठवें अध्यायके क्रमशः चार-चार तथा फिर चार मन्त्रों, तीन-तीन तथा पुनः तीन मन्त्रों; तदनन्तर दो मन्त्र, फिर एक-एक मन्त्र और पुनः दो मन्त्रोंके अनन्तर पूरे पाँचवें अध्याय (नमक)-की एक-एक आवृत्ति होती है। अन्तमें शेष दो मन्त्रोंका पाठ होता है। इस प्रकार आठवें अध्यायके कुल उन्तीस मन्त्रोंको रुद्रोंकी संख्या

* नमक-चमकका क्रम—

वेदवेदाङ्गिरामाश्च

रामरामद्विकैककम्। द्वौ द्वौ पृथग्भिर्मन्त्रैस्तु नमकाश्चमकाः स्मृताः॥

वाजश्च सत्यमूकश्चाश्मा

चाग्निंरंशुषं

तथाग्निः०।

एका चैव चतस्रश्च त्र्यविर्वाजा इति क्रमः॥

ग्यारह होनेके कारण ग्यारह अनुवाकोंमें विभक्त किया गया है—ऐसा रुद्रकल्पद्रुममें बताया गया है। इसके बाद नवें और दसवें अध्यायका पाठ होता है। इस प्रकार की गयी एक आवृत्तिको रुद्री या एकादशिनी कहते हैं।

३. लघुरुद्र—एकादशिनी रुद्रीकी ग्यारह आवृत्तियोंके पाठको लघुरुद्रपाठ कहा जाता है। यह लघुरुद्र-अनुष्ठान एक दिनमें ग्यारह ब्राह्मणोंका वरण करके एक साथ सम्पन्न किया जा सकता है तथा एक ब्राह्मणद्वारा अथवा स्वयं ग्यारह दिनोंतक एक एकादशिनी-पाठ नित्य करनेपर भी लघुरुद्रकी सम्पन्नता होती है।

४. महारुद्र—लघुरुद्रकी ग्यारह आवृत्ति अर्थात् एकादशिनी रुद्रीका १२१ आवृत्तिपाठ होनेपर महारुद्र-अनुष्ठान होता है। यह पाठ ११ ब्राह्मणोंद्वारा ग्यारह दिनोंतक कराया जा सकता है तथा एक दिनमें भी ब्राह्मणोंकी संख्या बढ़ाकर १२१ पाठ होनेपर महारुद्र-अनुष्ठान सम्पन्न हो जाता है।

५. अतिरुद्र—महारुद्रकी ग्यारह आवृत्ति अर्थात् एकादशिनी रुद्रीका १३३१ आवृत्तिपाठ होनेसे अतिरुद्र-अनुष्ठान सम्पन्न होता है।

ये अनुष्ठान पाठात्मक, अभिषेकात्मक तथा हवनात्मक तीनों प्रकारसे किये जा सकते हैं। शास्त्रोंमें इन अनुष्ठानोंकी अत्यधिक महिमाका वर्णन है।

रुद्राभिषेकमें प्रयुक्त होनेवाले प्रशस्त द्रव्य

अपने कल्याणके लिये भगवान् सदाशिवकी प्रसन्नताके निमित्त निष्कामभावसे यजन करना चाहिये, इसका अनन्त फल है। शास्त्रोंमें विविध कामनाओंकी पूर्तिके लिये रुद्राभिषेकके निमित्त अनेक द्रव्योंका निर्देश हुआ है। जिसे यहाँ

प्रस्तुत किया जा रहा है*—

जलसे रुद्राभिषेक करनेपर वृष्टि होती है, व्याधिकी शान्तिके लिये कुशोदकसे अभिषेक करना चाहिये। पशुप्राप्तिके लिये दही, लक्ष्मीकी प्राप्तिके लिये इक्षुरस (गन्नेका रस), धनप्राप्तिके लिये मधु तथा घृत एवं मोक्षप्राप्तिके लिये तीर्थके जलसे अभिषेक करना चाहिये। पुत्रकी इच्छा करनेवाला दूधद्वारा अभिषेक करनेपर पुत्र प्राप्त करता है। वन्ध्या, काकवन्ध्या (मात्र एक संतान उत्पन्न करनेवाली) अथवा मृतवत्सा स्त्री (जिसकी संतान उत्पन्न होते ही मर जाय या जो मृत संतान उत्पन्न करे) गोदुग्धके द्वारा अभिषेक करनेपर शीघ्र ही पुत्र प्राप्त करती है।

जलकी धारा भगवान् शिवको अति प्रिय है। अतः ज्वरके कोपको शान्त करनेके लिये जलधारासे अभिषेक करना चाहिये। एक हजार मन्त्रोंसहित घृतकी धारासे रुद्राभिषेक करनेपर वंशका विस्तार होता है, इसमें संशय नहीं है। प्रमेहरोगके विनाशके लिये

* (क) जलेन वृष्टिमाप्नोति व्याधिशान्त्यै कुशोदकैः॥

दध्ना च पशुकामाय श्रिया इक्षुरसेन च। मध्वाज्येन धनार्थं स्यान्मुमुक्षुस्तीर्थवारिणा॥
पुत्रार्थं पुत्रमाप्नोति पयसा चाभिषेचनात्। वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याङ्गना॥

सद्यः पुत्रमवाप्नोति पयसा चाभिषेचनात्।

(ख) ज्वरप्रकोपशान्त्यर्थं जलधारा शिवप्रिया॥

घृतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्रसहस्रकम्। तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः॥
प्रमेहरोगशान्त्यर्थं प्राप्नुयान्मानसेप्सितम्। केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः॥
शर्करामिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत्। श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत्तस्य कृपया शङ्करस्य च॥
सार्षपेणैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह। मधुना यक्ष्मराजोऽपि गच्छेद्द्वै शिवपूजनात्॥
पापक्षयार्थं मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा। जीवनार्थं तु पयसा श्रीकामोक्षुरसेन वै॥
पुत्रार्थं शर्करायास्तु रसेनार्चेच्छिवं तथा। महालिङ्गाभिषेकेण सुप्रीतः शङ्करो मुदा॥
कुर्याद्विधानं रुद्राणां यजुर्वेदविनिर्मितम्।

विशेषरूपसे केवल दूधकी धारासे अभिषेक करना चाहिये, इससे मनोभिलषित कामनाकी पूर्ति भी होती है। बुद्धिकी जड़ताको दूर करनेके लिये शक्कर मिले दूधसे अभिषेक करना चाहिये, ऐसा करनेपर भगवान् शंकरकी कृपासे उसकी बुद्धि श्रेष्ठ हो जाती है। सरसोंके तेलसे अभिषेक करनेपर शत्रुका विनाश हो जाता है तथा मधुके द्वारा अभिषेक करनेपर यक्षमारोग (तपेदिक) दूर हो जाता है। पापक्षयकी इच्छावालेको मधु (शहद)-से, आरोग्यकी इच्छावालेको घृतसे, दीर्घ आयुकी इच्छावालेको गोदुग्धसे, लक्ष्मीकी कामनावालेको ईख (गन्ने)-के रससे और पुत्रार्थीको शर्करा (चीनी)-मिश्रित जलसे भगवान् सदाशिवका अभिषेक करना चाहिये। उपर्युक्त द्रव्योंसे महालिङ्गका अभिषेक करनेपर भगवान् शिव अत्यन्त प्रसन्न होकर भक्तोंकी तत्तत् कामनाओंको पूर्ण करते हैं। अतः भक्तोंको यजुर्वेदविहित विधानसे रुद्रोंका अभिषेक करना चाहिये।

भट्टभास्कराचार्यकृत रुद्रनमकके भाष्यके अन्तमें रुद्रमन्त्रोंके अनेक प्रयोग निर्दिष्ट हैं। सब प्रकारकी सिद्धिके लिये वहाँ बताया गया है कि रुद्राध्यायके केवल पाठ अथवा जपसे ही समस्त कामनाओंकी पूर्ति हो जाती है—‘अस्य रुद्राध्यायस्य जपमात्रेणैव सर्वसिद्धिः।’ सूतसंहिताका कहना है कि रुद्रजापी महापातकरूपी पञ्जरसे मुक्त होकर सम्यक्-ज्ञान प्राप्त करता है और अन्तमें विशुद्ध मुक्ति प्राप्त करता है। रुद्राध्यायके समान जपनेयोग्य, स्वाध्याय करनेयोग्य वेदों और स्मृतियों आदिमें अन्य कोई मन्त्र नहीं है—

रुद्रजापी विमुच्येत महापातकपञ्जरात्। सम्यग्ज्ञानं च लभते तेन मुच्येत बन्धनात्॥

अनेन सदृशं जप्यं नास्ति सत्यं श्रुतौ स्मृतौ।

भगवान् रुद्रकी प्रसन्नताके लिये निष्कामभावसे रुद्रपाठका अनन्त फल है। वायुपुराणके अनुसार वह जीव उसी देहसे निश्चितरूपसे रुद्रस्वरूप हो जाता है अर्थात् सायुज्यमुक्तिको प्राप्त होता है—

मम भावं समुत्सृज्य यस्तु रुद्राञ्जपेत् सदा। स तेनैव च देहेन रुद्रः सञ्जायते ध्रुवम्॥

॥ श्रीहरिः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शिवपूजनविधि*

भगवान् शंकरकी पूजाके निमित्त पवित्र आसनपर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठ जाय। पूजन तथा अभिषेककी सामग्रियोंको अपने दाहिनी ओर रख ले। गायत्रीमन्त्रसे शिखाबन्धन कर ले। यदि शिखा बँधी हो तो स्पर्श कर ले।

पवित्रीकरण—निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा पूजनादिकी सामग्रियोंपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

पवित्री-धारण—निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले—

* ब्राह्मणोंद्वारा लघुरुद्र, महारुद्र आदि अनुष्ठान करायें अथवा स्वयं करें, इस दृष्टिसे यहाँ शिवपूजनकी विधि यथासाध्य विस्तारपूर्वक लिखी जा रही है, जो लोग रुद्राभिषेक स्वयं प्रतिदिन करें, वे यथासम्भव संक्षिप्तरूपमें भी पूजन कर सकते हैं।

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

आचमन—ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः । ॐ माधवाय नमः—इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे । 'ॐ हृषीकेशाय नमः' कहकर हाथ धो ले ।

प्राणायाम—प्राणायामका मन्त्र याद न हो तो गायत्रीमन्त्रसे प्राणायाम कर ले ।

रक्षादीप-प्रज्वालन—अक्षतोंके ऊपर घृतदीपकको रखकर प्रज्वलित करे । हाथ धो ले तथा गन्ध-पुष्पाक्षतसे दीपककी पूजा करे ।

सर्वप्रथम शिवपूजन तथा रुद्राभिषेककी अधिकारप्राप्तिके लिये प्रायश्चित्तरूपमें गोनिष्क्रयका सङ्कल्प करे ।

अधिकारप्राप्त्यर्थ प्रायश्चित्तसङ्कल्प*—हाथमें जल, अक्षत, पुष्प, कुश तथा द्रव्य लेकर निम्न सङ्कल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्यगोत्रःशर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं क्रियमाणरुद्राभिषेककर्मणि अधिकारप्राप्त्यर्थं
कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकचतुर्विधपापशमनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं च गोनिष्क्रयद्रव्यंगोत्रायशर्मणे आचार्याय
भवते सम्प्रददे (बादमें देना हो तो दातुमुत्सृज्ये) कहकर हाथका सङ्कल्पजल तथा द्रव्य ब्राह्मणके हाथमें दे दे ।

* यहाँ दिया गया प्रायश्चित्तरूपमें गोनिष्क्रयका सङ्कल्प प्रतिदिन करनेकी आवश्यकता नहीं है ।

गोप्रार्थना—निम्न मन्त्रसे प्रत्यक्ष गौकी भावनाकर प्रार्थना करे—

गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश । यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिहलोके परत्र च ॥

अनेन गोदानेन पापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्, न मम ।

यदि गणेशाम्बिकाकी प्रतिष्ठित मूर्ति न हो तो किसी पात्रमें अक्षतोंके ऊपर कुमकुमसे अष्टदलकमल बनाकर सुपारीमें मौली लपेटकर गणेश तथा गोमयकी गौरीको अक्षतोंपर स्थापित कर दे ।

स्वस्तिवाचन—हाथमें पुष्पाक्षत लेकर निम्न स्वस्तिवाचन करे—

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः । अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमनिह ॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः । विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मा शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ सुशान्तिर्भवतु ॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिः हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिः हवामहे
निधीनां त्वा निधिपतिः हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्चकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । उमामहेश्वराभ्यां नमः । वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः ।
शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो
नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । ॐ
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव । विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥
 यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्धुवा नीतिर्मतिर्मम ॥
 अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥
 स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते । पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥
 सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः । देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥
 विश्वेशं माधवं दुर्गिन्दं दण्डपाणिं च भैरवम् । वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥
 वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥
 गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ॥ (हाथके पुष्पाक्षत गणेशाम्बिकापर चढ़ा दे ।)

तदनन्तर शिवपूजन तथा रुद्राभिषेकका सङ्कल्प करे—

प्रतिज्ञा-सङ्कल्प—

(क) सकाम—दाहिने हाथमें जल, अक्षत, पुष्प तथा कुश लेकर निम्न प्रतिज्ञा-सङ्कल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्वैतस्य विष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपराब्दे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे

जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डेक्षेत्रे (यदि क्षेत्रका नाम मालूम न हो तो 'विष्णुप्रजापतिक्षेत्रे' बोले)स्थाने (यदि काशी हो तो अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे आनन्दवने महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या वामभागे) बौद्धावतारेनाम संवत्सरे उत्तरायणे/दक्षिणायनेऋतौमासेपक्षेतिथौवासरेगोत्रःशर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ममात्मनः सर्वारिष्टनिरसनपूर्वकसर्वपापक्षयार्थं मनसेप्सितफल-प्राप्तिपूर्वकश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यादिवृद्ध्यर्थं श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थञ्चलिङ्गोपरि यथोपचारैः श्रीसाम्बसदाशिवपूजनपूर्वकं जलधारया * षडङ्गरुद्रेण/रुद्रैकादशिन्या/लघुरुद्रेण रुद्राभिषेकं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये। (यदि स्वयं करे तो 'ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये' के स्थानपर करिष्ये बोले)। कहकर हाथका सङ्कल्पजल आदि छोड़ दे। पुनः हाथमें जल, अक्षत, पुष्प तथा कुश लेकर बोले—तदङ्गत्वेन कार्यस्य निर्विघ्नतया सिद्ध्यर्थं आदौ गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये। कहकर हाथका जल आदि छोड़ दे।

(ख) निष्काम सङ्कल्प—यदि केवल भगवान् साम्बसदाशिवकी प्रीतिके लिये रुद्राभिषेक करना हो तो निम्न सङ्कल्प करे। पूर्वकी भाँति दाहिने हाथमें जल, अक्षत, पुष्प तथा कुश लेकर बोले—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य विष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपराद्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे

* जिस द्रव्यसे अभिषेक करना हो यहाँपर उसका उल्लेख करना चाहिये। जैसे जलसे अभिषेक करना हो तो 'जलधारया' कहे, दुग्धसे करना हो तो 'दुग्धधारया' कहे इत्यादि।

जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डेक्षेत्रे (यदि क्षेत्रका नाम मालूम न हो तो 'विष्णुप्रजापतिक्षेत्रे' बोले)स्थाने (यदि काशी हो तो अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे आनन्दवने महाशमशाने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या वामभागे) बौद्धावतारेनाम संवत्सरे उत्तरायणे/दक्षिणायनेऋतौमासेपक्षेतिथौवासरेगोत्रःशर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ममात्मनः समस्तपापक्षयपूर्वकं श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं श्रीसाम्बसदाशिवपूजनं जलधारया षडङ्गरुद्रेण/रुद्रैकादशिन्या/लघुरुद्रेण श्रीरुद्राभिषेकं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये (यदि स्वयं करे तो 'ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये' के स्थानपर करिष्ये बोले) । कहकर सङ्कल्पका जल आदि छोड़ दे । पुनः हाथमें जल, अक्षत, पुष्प तथा कुश लेकर बोले—

तदङ्गत्वेन कार्यस्य निर्विघ्नतया सिद्ध्यर्थं आदौ गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये । (कहकर हाथका जल आदि छोड़ दे ।)

श्रीगणेशाम्बिका-पूजन

भगवान् गणेशका आवाहन—हाथमें अक्षत लेकर ध्यान करे—

ॐ गणानां त्वा गणपतिः हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिः हवामहे निधीनां त्वा
निधिपतिः हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च । (हाथके अक्षत गणेशजीपर चढ़ा दे ।) पुनः अक्षत लेकर गणेशजीकी दाहिनी ओर भगवती गौरीका आवाहन करे—

भगवती गौरीका आवाहन—

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।

ससस्त्यश्चकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

प्राण-प्रतिष्ठा— अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्—(गौरी-गणेशपर अक्षत-पुष्प छोड़े।)

आसन— विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।

स्वर्णसिंहासनं चारु गृहीष्व सुरपूजितम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनं समर्पयामि। (आसनके लिये अक्षत समर्पित करे।)

पाद्य— ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (कहकर एक आचमनी पाद्य (जल) समर्पित करे।)

अर्घ्य— ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। (बोलकर गणेश-गौरीको अर्घ्य दे।)

आचमन— ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। (बोलकर आचमनीय जल अर्पित करे।)

स्नान—

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि। (बोलकर शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

पञ्चामृतस्नान—

पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। (बोलकर पञ्चामृतसे स्नान कराये।)

शुद्धोदकस्नान—

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।

नर्मदा सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (कहकर शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

वस्त्र—

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। (कहकर वस्त्र चढ़ाये और) 'वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि'। (कहकर आचमनीय जल समर्पित करे।)

यज्ञोपवीत—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। (बोलकर यज्ञोपवीत समर्पित करे और) 'आचमनीयं जलं समर्पयामि'। (बोलकर आचमनके लिये जल अर्पित करे।)

उपवस्त्र—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि। बोलकर उपवस्त्र चढ़ाये और 'आचमनीयं जलं समर्पयामि'। (कहकर आचमनीय जल अर्पित करे।)

चन्दन— श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। (बोलकर चन्दन चढ़ाये।)

अक्षत—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि। (कहकर गणेश-गौरीपर अक्षत चढ़ाये।)

पुष्पमाला— माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि। (बोलकर पुष्पमाला समर्पित करे।)

दूर्वाङ्कुर— दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतास्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। (बोलकर गणेशजीपर दूर्वाङ्कुर चढ़ाये।)

सिन्दूर— सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि। (कहकर गौरीपर सिन्दूर चढ़ाये।)

अबीर— नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारुं प्रगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। (कहकर अबीर चढ़ाये।)

धूप—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपमाग्रापयामि। (कहकर धूप अर्पण करे।)

दीप— साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्। (दीप दिखाये और हाथ धो ले।)

नैवेद्य— नैवेद्यको सामने रखकर उसमें दूर्वा-पुष्प आदि डालकर निम्न मन्त्रसे निवेदित करे—

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं समर्पयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (बोलकर नैवेद्य अर्पण करे और आचमनीय जल अर्पित करे।)

ऋतुफल—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलं समर्पयामि। (बोलकर ऋतुफल अर्पण करे।)

करोद्वर्तन—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि। (दोनों हाथोंकी अनामिका अँगुली और अँगूठेसे गौरी-गणेशपर चन्दन छिड़के।)

ताम्बूल— पूगीफलं महदिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थम् एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची, लौंग-सुपारीके साथ ताम्बूल अर्पित करे।)

दक्षिणा— हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थं द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (यथाशक्ति द्रव्य-दक्षिणा समर्पित करे।)

आरती— कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आरार्तिकं समर्पयामि। (कर्पूरकी आरती करे, आरतीके बाद जल गिरा दे।)

पुष्पाञ्जलि—

नानासुगन्धिपुष्पाणि

यथाकालोद्भवानि

च ।

पुष्पाञ्जलिर्मया

दत्तो

गृहाण

परमेश्वर ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि । (पुष्पाञ्जलि अर्पित करे ।)

प्रदक्षिणा—

यानि कानि च

पापानि

जन्मान्तरकृतानि

च ।

तानि सर्वाणि

नश्यन्तु

प्रदक्षिणा

पदे पदे ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि । (प्रदक्षिणा करे ।)

विशेषार्घ्य—

ताम्रपात्रमें जल, चन्दन, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा और दक्षिणा रखकर दोनों घुटनोंको जमीनपर लगा दे और दोनों हाथसे अर्घ्यपात्रको सिरतक ले जाय तथा निम्न मन्त्रसे गणेशको अर्पित करे—

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक । भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥

द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो । वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ॥

अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम ।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि । (विशेषार्घ्य दे ।)

प्रार्थना—

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।

नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ॥
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि। (साष्टाङ्ग नमस्कार करे।)

समर्पण—

गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम ॥

अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम्, न मम। (ऐसा कहकर समस्त पूजनकर्म भगवान्को समर्पित कर दे तथा पुनः नमस्कार करे।)

ब्राह्मण-वरण

यदि ब्राह्मणोंद्वारा रुद्राभिषेक कराना हो तो रुद्राभिषेककर्मके लिये ब्राह्मण-वरण करे। गन्धाक्षत तथा पुष्पमाला आदिसे उनका अर्चन करे, फिर वरणसामग्री तथा जल, अक्षत, कुश एवं द्रव्य हाथमें लेकर निम्न सङ्कल्पपूर्वक उनका वरण करे—

वरणसङ्कल्प— ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौगोत्रःशर्मा (वर्मा/गुप्तोऽहं)
अस्मिन् रुद्राभिषेकाख्ये कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैःगोत्रंशर्माणं ब्राह्मणं त्वां वृणे (यदि अधिक ब्राह्मणोंद्वारा रुद्राभिषेक कराना हो तोगोत्रंशर्माणं ब्राह्मणं त्वां वृणे के स्थानपर नानागोत्रान् नानाशर्मणो ब्राह्मणान् युष्मान् वृणे बोले।)।

ब्राह्मण वचन—ब्राह्मण बोले—‘वृतोऽस्मि’। (यदि अधिक ब्राह्मण करें तो ‘वृताः स्मः’ बोलें।)

पार्षदोंका पूजन

गणेशाम्बिका-पूजनके अनन्तर भगवान् शंकरके विशिष्ट अनुग्रहकी प्राप्तिके लिये उनके पूजनसे पूर्व उनके परिकर-परिच्छद एवं पार्षदोंका भी पूजन किया जाता है। संक्षेपमें उनकी पूजा और प्रार्थनाके मन्त्र भी यहाँ दिये जा रहे हैं। जल, गन्धाक्षत, पुष्प तथा बिल्वपत्र आदिसे निम्न मन्त्र बोलकर नन्दीश्वर आदिका पूजन करे—‘सर्वोपचारार्थे जलगन्धाक्षतपुष्पबिल्वपत्राणि समर्पयामि।’

नन्दीश्वर-पूजन

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्स्वः॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ	प्रैतु	वाजी	कनिक्रदन्नानदद्रासभः	पत्वा।
भरन्नग्रिं	पुरीष्यं	मा	पाद्यायुषः	पुरा॥
वृषाग्रिं	वृषणं	भरन्नपां	गर्भं	समुद्रियम्।
अग्र	आ	याहि		वीतये॥

वीरभद्र-पूजन

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ भद्रो नो अग्रिराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः । भद्रा उत प्रशस्तयः ॥

कार्तिकेय-पूजन

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्तसमुद्रादुत वा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन् ॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव ।
तत्र इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥

कुबेर-पूजन

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय ।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति ॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ वयं सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥

कीर्तिमुख-पूजन

ॐ असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहा ऽभिभुवे स्वाहा ऽधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सःसर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा ॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूषि च मे शरीराणि च म आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

सर्प-पूजन

निम्न मन्त्रसे जलहरीमें सर्प-पूजन करे—

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।

ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

शिव-पूजन

पार्षदोंकी पूजाके बाद हाथमें बिल्वपत्र और अक्षत लेकर भगवान् शिवका पूजन करे।

भगवान् शिवका ध्यान—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं

रत्नाकल्योज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।

पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं

विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, ध्यानार्थे बिल्वपत्रं समर्पयामि। (ध्यान करके शिवलिङ्गपर बिल्वपत्र चढ़ाये।)

आवाहन— ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।

यावत् पूजां करिष्येऽहं तावत् त्वं संनिधौ भव॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि। (पुष्प चढ़ाये।)

आसन—

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥
अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम् ।
इदं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, आसनार्थे बिल्वपत्रं समर्पयामि । (आसनके लिये बिल्वपत्र चढ़ाये ।)

पाद्य—

ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत् ॥
गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम् ।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि । (जल चढ़ाये ।)

अर्घ्य—

ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मः सुमना असत् ॥
गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया ।
गृहाण भगवन् शम्भो प्रसन्नो वरदो भव ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि । (चन्दन, पुष्प, अक्षतयुक्त अर्घ्य समर्पण करे ।)

आचमन—

ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहींश्च सर्वाङ्गभयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराच्चीः परा सुव ॥
कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम् ।
तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि । (कर्पूरसे सुवासित शीतल जल चढ़ाये ।)

स्नान—

ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः ।
ये चैनः रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाः हेड ईमहे ॥
मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम् ।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि । स्नानान्ते आचमनीयं जलं च समर्पयामि (स्नानीय और आचमनीय जल चढ़ाये ।)

दुग्धस्नान—

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

कामधेनुसमुद्धूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानाय गृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, पयःस्नानं समर्पयामि, पयःस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (दूधसे स्नान कराये, पुनः शुद्ध जलसे स्नान कराये और आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

दधिस्नान—

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूःषि तारिषत्॥
पयसस्तु समुद्धूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, दधिस्नानं समर्पयामि, दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (दहीसे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये तथा आचमनके लिये जल समर्पित करे।)

घृतस्नान—

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥

नवनीतसमुत्पन्नं

सर्वसंतोषकारकम्।

घृतं

तुभ्यं

प्रदास्यामि

स्नानार्थं

प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, घृतस्नानं समर्पयामि, घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (घृतसे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये और पुनः आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

मधुस्नान—ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीनः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवः रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

पुष्परेणुसमुत्पन्नं

सुस्वादु

मधुरं

मधु।

तेजःपुष्टिकरं

दिव्यं

स्नानार्थं

प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, मधुस्नानं समर्पयामि, मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (मधुसे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये तथा आचमनके लिये जल समर्पित करे।)

शर्करास्नान—ॐ अपाः रसमुद्वयसः सूर्ये सन्तः समाहितम्। अपाः रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

इक्षुसारसमुद्भूतां	शर्करां	पुष्टिदां	शुभाम्।
मलापहारिकां	दिव्यां	स्नानार्थं	प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (शर्करासे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये तथा आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

पञ्चामृतस्नान— ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
 सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥
 पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
 पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि, पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (पञ्चामृतसे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये तथा आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

गन्धोदकस्नान— केसरको चन्दनसे घिसकर पीला द्रव्य बना ले और इस गन्धोदकसे स्नान कराये।

ॐ अः शुना ते अः शुः पृच्यतां परुषा परुः।
 गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ॥
 मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विमिश्रितम्।
 इदं गन्धोदकस्नानं कुंकुमाक्तं नु गृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि, गन्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
 (गन्धोदकसे स्नान कराकर आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

शुद्धोदकस्नान— ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्वेतः
 श्वेताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा
 अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥
 शुद्धं यत् सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम्।
 समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
 (शुद्ध जलसे स्नान कराये, तदनन्तर आचमनीय जल चढ़ाये।)

महाभिषेक-स्नान—रौद्राध्यायके 'नमस्ते०' इत्यादि निम्न षोडश मन्त्रोंसे महाभिषेक-स्नान कराये—

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः ।
 बाहुभ्यामुत ते नमः ॥
 या ते रुद्र शिवा तनूरधोराऽपापकाशिनी ।
 तथा नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥
 यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
 शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत् ॥
 शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।
 यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मः सुमना असत् ॥
 अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
 अहींश्च सर्वाङ्गभयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव ॥
 असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः ।
 ये चैनः रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाः हेड ईमहे ॥
 असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।
 उत्तैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
 अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः ॥
 प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्त्र्योर्ज्याम् ।
 याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप ॥
 विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँर उत ।
 अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥
 या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।
 तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज ॥
 परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः ।
 अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम् ॥
 अवतत्य धनुष्ट्वं सहस्राक्ष शतेषुधे ।
 निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥
 नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे ।
 उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।
 मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥
 मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
 मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे ॥

आचमन— भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, महाभिषेकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।
 (आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

वस्त्र— ॐ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।
 उत्तैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥
 शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ।
 देहालङ्करणं वस्त्रं धृत्वा शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि, वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि । (वस्त्र चढ़ाये तथा आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

यज्ञोपवीत— ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
 अथो ये अस्य सत्त्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः ॥

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । यज्ञोपवीतं समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।
(यज्ञोपवीत समर्पित करे तथा आचमनके लिये जल चढ़ाये ।)

उपवस्त्र— ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदस्वः ।
वासो अग्ने विश्वरूपः सं व्ययस्व विभावसो ॥
उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।
भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि, उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि । (उपवस्त्र चढ़ाये तथा आचमनके लिये जल दे ।)

चन्दन— ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्यौर्ज्याम् ।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वष ॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, गन्धानुलेपनं समर्पयामि । (चन्दन उपलेपित करे ।)

भस्म—

ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने ।
 सः सृज्य मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरा ऽसदः ॥
 सर्वपापहरं भस्म दिव्यज्योतिसमप्रभम् ।
 सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, भस्म समर्पयामि । (भस्म चढाये ।)

अक्षत—

ॐ व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे
 खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मे ऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे
 नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥
 अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ।
 मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि । (कुंकुमयुक्त अक्षत चढाये ।)

पुष्पमाला—

ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत ।
 अनेशत्रस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि भक्तिः ।
मयाहतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि । (पुष्प एवं पुष्पमाला चढ़ाये ।)

बिल्वपत्र—

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च
नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ॥
त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम् ।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः ।
शिवपूजां करिष्यामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
अखण्डबिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे ।
शुद्धयन्ति सर्वपापेभ्यो बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
शालग्रामशिलामेकां विप्राणां जातु अर्पयेत् ।
सोमयज्ञमहापुण्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
दन्तिकोटिसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥

लक्ष्म्याः स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम् ।
 बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
 दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम् ।
 अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
 मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे ।
 अग्रतः शिवरूपाय बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
 बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
 सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि । (बिल्वपत्रं समर्पितं करे ।)

दूर्वाङ्कुर—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
 एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च ॥
 दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् ।
 आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि । (दूर्वाङ्कुरं चढ़ाये ।)

सुगन्धित द्रव्य— ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि। (सुगन्धित द्रव्य चढ़ाये।)

एकादश-रुद्रपूजा— एकादश रुद्रों तथा एकादश शक्तियोंके नाममन्त्रोंसे भगवान् श्रीसाम्बसदाशिवपर गन्धाक्षतपुष्प तथा बिल्वपत्र चढ़ाये—

ॐ अघोराय नमः ॥ १ ॥ ॐ पशुपतये नमः ॥ २ ॥ ॐ शर्वाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥ ४ ॥
ॐ विश्वरूपिणे नमः ॥ ५ ॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥ ७ ॥ ॐ भैरवाय नमः ॥ ८ ॥
ॐ शूलपाणये नमः ॥ ९ ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ १० ॥ ॐ महेश्वराय नमः ॥ ११ ॥

एकादश-शक्तिपूजा— ॐ उमायै नमः ॥ १ ॥ ॐ शङ्करप्रियायै नमः ॥ २ ॥ ॐ पार्वत्यै नमः ॥ ३ ॥
ॐ गौर्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ काल्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ कालिन्द्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ कोट्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ विश्वधारिण्यै
नमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ १० ॥ ॐ गङ्गादेव्यै नमः ॥ ११ ॥

आभूषण—

ॐ युवं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तंतमिद्धतं
वज्रेण तंतमिद्धतम्। दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत्।

वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम् ।

पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, रत्नाभूषणं समर्पयामि। (रत्नाभूषण समर्पित करे।)

नानापरिमलद्रव्य— ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।

हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमां सं परि पातु विश्वतः ॥

दिव्यगन्धसमायुक्तं नानापरिमलान्वितम्।

गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरु शोभनम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। (परिमलद्रव्य चढ़ाये।)

सिन्दूर— ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यद्वाः।

घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, सिन्दूरं समर्पयामि। (सिन्दूर समर्पित करे।)

भगवान् सदाशिवके आगे चौकोर जलका घेरा लगाकर उसमें नैवेद्यादि वस्तुओंको रखे, इसके बाद धूप-दीप निवेदन करे।

धूप—

ॐ या ते हेतिर्मीदुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।
तयाऽस्मान्विश्रतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज ॥
वनस्पतिसोद्धूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आग्नेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, धूपमाग्रापयामि । (धूप आग्रापित करे ।)

दीप—

ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः ।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम् ॥
साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, दीपं दर्शयामि । (दीप दिखलाये और हाथ धो ले ।)

नैवेद्य—नैवेद्यमें बिल्वपत्र रखकर निम्नलिखित मन्त्र बोलकर भगवान्‌को भोग लगाये—

ॐ अवतत्य धनुष्यं सहस्राक्ष शतेषुधे ।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च ।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। 'ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा।' नैवेद्यान्ते ध्यानम्, ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि, मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि, उत्तरापोशनं मुखप्रक्षालनार्थं हस्तप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि। (नैवेद्य निवेदित करे, 'ॐ प्राणाय स्वाहा' आदि मन्त्रोंको पढ़े, तदनन्तर भगवान्का ध्यान करके आचमनके लिये जल चढ़ाये, पानीय जल चढ़ाये तथा उत्तरापोशन, मुखप्रक्षालन एवं हस्तप्रक्षालनके लिये पुनः जल चढ़ाये।)

करोद्धर्तन—

ॐ सिञ्चति परि षिञ्चन्त्युत्तिञ्चन्ति पुनन्ति च।

सुरायै बभ्रुवै मदे किन्त्वो वदति किन्त्वः॥

चन्दनं मलयोद्धूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्धर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, करोद्धर्तनार्थं चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। (चन्दनका अनुलेपन करे।)

ऋतुफल—

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वः सहसः॥

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावासिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, ऋतुफलानि निवेदयामि । (ऋतुफल चढ़ाये ।)

ताम्बूल—

ॐ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, मुखवासार्थम् एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि । (इलायची, लौंग-सुपारीके साथ पान समर्पित करे ।)

द्रव्य-दक्षिणा—

ॐ यद्वत्तं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः ।
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत् ॥
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, कृतायाः पूजायाः सादगुण्यार्थं द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि । (द्रव्य-दक्षिणा समर्पित करे ।)

स्तुति—हाथमें फूल लेकर निम्न स्तुति-पाठ करे—

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
 पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
 सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
 यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्॥
 करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
 श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
 विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
 जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥

(फूल भगवान्पर चढ़ा दे।)

[जिन्हें विस्तारपूर्वक विशेष पूजा न करनी हो, वे इसके अनन्तर पृ०-सं० ६७ के अनुसार न्यास-ध्यानके साथ रुद्राभिषेक प्रारम्भ कर सकते हैं। तदनन्तर पृ०-सं० ११६ के अनुसार उत्तरपूजन तथा आरती आदि सम्पन्न करें।]

विशेष पूजा

गन्ध, अक्षत और पुष्प अथवा बिल्वपत्र आदिसे भगवान् शिवकी अङ्गपूजा, गणपूजा तथा अष्टमूर्तिपूजा करे—

अङ्गपूजा—ॐ ईशानाय नमः, पादौ पूजयामि। ॐ शङ्कराय नमः, जङ्घे पूजयामि। ॐ शिवाय नमः, जानुनी पूजयामि। ॐ शूलपाणये नमः, गुल्फौ पूजयामि। ॐ शम्भवे नमः, कटी पूजयामि। ॐ स्वयम्भुवे नमः, गुह्यं पूजयामि। ॐ महादेवाय नमः, नाभिं पूजयामि। ॐ विश्वकर्त्रे नमः, उदरं पूजयामि। ॐ सर्वतोमुखाय नमः, पार्श्वे पूजयामि। ॐ स्थाणवे नमः, स्तनौ पूजयामि। ॐ नीलकण्ठाय नमः, कण्ठं पूजयामि। ॐ शिवात्मने नमः, मुखं पूजयामि। ॐ त्रिनेत्राय नमः, नेत्रे पूजयामि। ॐ नागभूषणाय नमः, शिरः पूजयामि। ॐ देवाधिदेवाय नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि।

गणपूजा—ॐ गणपतये नमः ॥ १ ॥ ॐ कार्तिकाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पुष्पदन्ताय नमः ॥ ३ ॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥ ४ ॥ ॐ भैरवाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥ ६ ॥ ॐ ईश्वराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ दण्डपाणये नमः ॥ ८ ॥ ॐ नन्दिने नमः ॥ ९ ॥ ॐ महाकालाय नमः ॥ १० ॥

अष्टमूर्तिपूजा—ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः ॥ १ ॥ ॐ भवाय जलमूर्तये नमः ॥ २ ॥ ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः ॥ ३ ॥ ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः ॥ ४ ॥ ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः ॥ ५ ॥ ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः ॥ ६ ॥ ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः ॥ ८ ॥

अष्टोत्तरशतशिवनामपूजा

अष्टोत्तरशतशिवनाम-पूजनसे पहले निम्न विनियोग करे—

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशिवाष्टोत्तरशतनाममन्त्रस्य नारायणऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवो देवता गौरी उमाशक्तिः श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतये अष्टोत्तरशतनामभिः शिवपूजने विनियोगः। (एक आचमनी जल छोड़े।)

ध्यान—हाथ जोड़कर भगवान् श्रीसाम्बसदाशिवका ध्यान करे—

शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम्।
गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

ध्यानके अनन्तर भगवान् शिवके आगे लिखे १०८ नामोंसे शिवलिङ्गपर बिल्वपत्र चढ़ाये अथवा पुष्प-अक्षत आदिसे शिवपूजन करे—

१. ॐ शिवाय नमः, २. ॐ महेश्वराय नमः, ३. ॐ शम्भवे नमः, ४. ॐ पिनाकिने नमः,
५. ॐ शशिशेखराय नमः, ६. ॐ वामदेवाय नमः, ७. ॐ विरूपाक्षाय नमः, ८. ॐ कपर्दिने नमः, ९. ॐ नीललोहिताय

नमः, १०. ॐ शङ्कराय नमः, ११. ॐ शूलपाणिने नमः, १२. ॐ खट्वाङ्गिने नमः, १३. ॐ विष्णुवल्लभाय नमः, १४. ॐ शिपिविष्टाय नमः, १५. ॐ अम्बिकानाथाय नमः, १६. ॐ श्रीकण्ठाय नमः, १७. ॐ भक्तवत्सलाय नमः, १८. ॐ भवाय नमः, १९. ॐ शर्वाय नमः, २०. ॐ त्रिलोकेशाय नमः, २१. ॐ शितिकण्ठाय नमः, २२. ॐ शिवाप्रियाय नमः, २३. ॐ उग्राय नमः, २४. ॐ कपालिने नमः, २५. ॐ कामारये नमः, २६. ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः, २७. ॐ गङ्गाधराय नमः, २८. ॐ ललाटाक्षाय नमः, २९. ॐ कालकालाय नमः, ३०. ॐ कृपानिधये नमः, ३१. ॐ भीमाय नमः, ३२. ॐ परशुहस्ताय नमः, ३३. ॐ मृगपाणये नमः, ३४. ॐ जटाधराय नमः, ३५. ॐ कैलासवासिने नमः, ३६. ॐ कवचिने नमः, ३७. ॐ कठोराय नमः, ३८. ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः, ३९. ॐ वृषाङ्गाय नमः, ४०. ॐ वृषभारूढाय नमः, ४१. ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः, ४२. ॐ सामप्रियाय नमः, ४३. ॐ स्वरमयाय नमः, ४४. ॐ त्रयीमूर्तये नमः, ४५. ॐ अनीश्वराय नमः, ४६. ॐ सर्वज्ञाय नमः, ४७. ॐ परमात्मने नमः, ४८. ॐ सोमलोचनाय नमः, ४९. ॐ सूर्यलोचनाय नमः, ५०. ॐ अग्निलोचनाय नमः, ५१. ॐ हविर्यज्ञमयाय नमः, ५२. ॐ सोमाय नमः, ५३. ॐ पञ्चवक्त्राय नमः, ५४. ॐ सदाशिवाय नमः, ५५. ॐ विश्वेश्वराय नमः, ५६. ॐ वीरभद्राय नमः, ५७. ॐ गणनाथाय नमः, ५८. ॐ प्रजापतये नमः, ५९. ॐ हिरण्यरेतसे नमः,

६०. ॐ दुर्धर्षाय नमः, ६१. ॐ गिरीशाय नमः, ६२. ॐ गिरिशाय नमः, ६३. ॐ अनघाय नमः, ६४. ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः, ६५. ॐ भर्गाय नमः, ६६. ॐ गिरिधन्विने नमः, ६७. ॐ गिरिप्रियाय नमः, ६८. ॐ कृत्तिवाससे नमः, ६९. ॐ पुरारातये नमः, ७०. ॐ भगवते नमः, ७१. ॐ प्रमथाधिपाय नमः, ७२. ॐ मृत्युञ्जयाय नमः, ७३. ॐ सूक्ष्मतनवे नमः, ७४. ॐ जगद्व्यापिने नमः, ७५. ॐ जगद्गुरवे नमः, ७६. ॐ व्योमकेशाय नमः, ७७. ॐ महासेनजनकाय नमः, ७८. ॐ चारुविक्रमाय नमः, ७९. ॐ रुद्राय नमः, ८०. ॐ भूतपतये नमः, ८१. ॐ स्थाणवे नमः, ८२. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः, ८३. ॐ दिगम्बराय नमः, ८४. ॐ अष्टमूर्तये नमः, ८५. ॐ अनेकात्मने नमः, ८६. ॐ सात्त्विकाय नमः, ८७. ॐ शुद्धविग्रहाय नमः, ८८. ॐ शाश्वताय नमः, ८९. ॐ खण्डपरशवे नमः, ९०. ॐ अजपाशविमोचकाय नमः, ९१. ॐ मृडाय नमः, ९२. ॐ पशुपतये नमः, ९३. ॐ देवाय नमः, ९४. ॐ महादेवाय नमः, ९५. ॐ अव्ययाय नमः, ९६. ॐ प्रभवे नमः, ९७. ॐ पूषदन्तभिदे नमः, ९८. ॐ अव्यग्राय नमः, ९९. ॐ दक्षाध्वरहराय नमः, १००. ॐ हराय नमः, १०१. ॐ भगनेत्रभिदे नमः, १०२. ॐ अव्यक्ताय नमः, १०३. ॐ सहस्राक्षाय नमः, १०४. ॐ सहस्रपदे नमः, १०५. ॐ अपवर्गप्रदाय नमः, १०६. ॐ अनन्ताय नमः, १०७. ॐ तारकाय नमः, १०८. ॐ परमेश्वराय नमः ।

पञ्चवक्त्रपूजन

गन्धाक्षत, पुष्प तथा बिल्वपत्र लेकर निम्नलिखित ध्यानमन्त्रोंका पाठ करते हुए भगवान् सदाशिवके पाँचों मुखोंका पूजन करे। सर्वप्रथम सद्योजात नामक पश्चिम मुखका पूजन करे—

(१) पश्चिमवक्त्र-पूजन—

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः । भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥

प्रालेयामलबिन्दुकुन्दधवलं

गोक्षीरफेनप्रभं

भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहनज्वालावलीलोचनम् ।

ब्रह्मेन्द्राग्निमरुद्गणैः स्तुतिपरैरभ्यर्चितं योगिभि-

र्वन्देऽहं सकलं कलङ्करहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम् ॥

शुभ्रं त्रिलोचनं नाम्ना सद्योजातं शिवप्रदम् । शुद्धस्फटिकसङ्काशं वन्देऽहं पश्चिमं मुखम् ॥

ॐ सद्योजाताय पश्चिमवक्त्राय नमः ॥

(२) उत्तरवक्त्र-पूजन—

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो
बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥

गौरं कुंकुमपिङ्गलं सुतिलकं व्यापाण्डुगण्डस्थलं
भूविक्षेपकटाक्षवीक्षणलसत्संस्तकणोत्पलम् ।

स्निग्धं बिम्बफलाधरं ग्रहसितं नीलालकालङ्कृतं
वन्दे पूर्णशशाङ्कमण्डलनिभं वक्त्रं हरस्योत्तरम् ॥

वामदेवं सुवर्णाभं दिव्यास्त्रगणसेवितम् । अजन्मानमुमाकान्तं वन्देऽहं ह्युत्तरं मुखम् ॥
ॐ वामदेवाय उत्तरवक्त्राय नमः ॥

(३) दक्षिणवक्त्र-पूजन—

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

कालाभ्रभ्रमराञ्जनाचलनिभं व्यावृत्तपिङ्गेक्षणं
खण्डेन्दुद्वयमिश्रितांशुदशनप्रोद्भिन्नदंष्ट्राङ्कुरम् ।

सर्पप्रोतकपालशक्तिसकलं व्याकीर्णसच्छेखरं

वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य कुटिलं भूभङ्गरौद्रं मुखम्॥

नीलाभ्रवरणमोङ्कारमघोरं घोरदंष्ट्रकम् । दंष्ट्राकरालमत्युग्रं वन्देऽहं दक्षिणं मुखम्॥

ॐ अघोराय दक्षिणवक्त्राय नमः ॥

(४) पूर्ववक्त्र-पूजन—

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

संवर्ताग्रितडित्प्रतप्तकनकप्रस्पृधितेजोऽरुणं

गम्भीरस्मितनिःसृतोग्रदशनं प्रोद्धासिताम्राधरम् ।

बालेन्दुद्युतिलोलपिङ्गलजटाभारप्रबद्धोरगं

वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनमितं पूर्वं मुखं शूलिनः ॥

बालार्कवर्णभारक्तं पुरुषं च तडित्प्रभम् । दिव्यं पिङ्गलजटाधारं वन्देऽहं पूर्वदिङ्मुखम् ॥

ॐ तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय नमः ॥

(५) ऊर्ध्वमुख-पूजन—

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ॥

व्यक्ताव्यक्तगुणोत्तरं सुवदनं षड्विंशतत्त्वाधिकं

तस्मादुत्तरतत्त्वमक्षयमिति ध्येयं सदा योगिभिः ।

वन्दे तामसर्वजितेन मनसा सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परं

शान्तं पञ्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम् ॥

ईशानं सूक्ष्ममव्यक्तं तेजःपुञ्जपरायणम् । अमृतस्त्रावि चिद्रूपं वन्देऽहं पञ्चमं मुखम् ॥

ॐ ईशानाय ऊर्ध्ववक्त्राय नमः ॥

इस प्रकार पञ्चवक्त्र-पूजन करके संक्षेपमें भगवान्की आरती और प्रदक्षिणा करे। तदनन्तर न्यास-ध्यान करके भगवान् रुद्रका अभिषेक करे। जो लोग अभिषेकके लिये धारापात्र टाँगते हों, वे अभिषेकसे पूर्व 'ॐ धारापात्राधिष्ठातृदेवताभ्यो नमः' इस मन्त्रसे गन्धाक्षतपुष्पद्वारा धारापात्रका पूजन कर लें।

विनियोग तथा षडङ्गन्यास

(१) 'ॐ मनोजूति'-रिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः, बृहती छन्दः, बृहस्पतिर्देवता
हृदयन्यासे विनियोगः । (एक आचमनी विनियोगका जल छोड़े ।)

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्व्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टुं
व्यज्ञं समिन्दधातु । विश्वेदेवासं ऽहुहमादयन्तामोँ३ प्रतिष्ठु ।।

ॐ हृदयाय नमः ॥ (दाहिने हाथकी पाँचों अँगुलियोंसे हृदयका स्पर्श करे ।)

(२) 'ॐ अबोद्धयग्नि'-रिति मन्त्रस्य बुधगविष्टिरा ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, अग्निर्देवता,
शिरोन्यासे विनियोगः । (विनियोगका जल छोड़े ।)

ॐ अबोद्ध्यग्निः समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवायुतीमुषासम्।
बृहत्वाऽ इवुप्प्रव्यामुज्जिहानां प्रभानवः सिस्रतेनाकुमच्छ॥

ॐ शिरसे स्वाहा ॥ (दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे मस्तकका स्पर्श करे।)

(३) ' ॐ मूर्ध्नानमिति ' मन्त्रस्य भरद्वाजऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, अग्निदेवता, शिखान्यासे विनियोगः । (विनियोगका जल छोड़े ।)

ॐ मूर्ध्नानन्दिवोऽअरुतिमृथिव्याव्वैश्श्वानुरमृतऽआजातमुग्निम्।
कुविष्टु सम्प्राजुमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवाः॥

ॐ शिखायै वषट् ॥ (दाहिने हाथके अँगूठेसे शिखाका स्पर्श करे।)

(४) ' ॐ मर्माणि ते ' इति मन्त्रस्य अप्रतिरथऋषिः, विराट्छन्दः, मर्माणि देवता,

कवचन्यासे विनियोगः । (विनियोगका जल छोड़े।)

ॐ मर्माणितेव्वर्माणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम् ।
उरोर्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तुन्त्वानुदेवामदन्तु ॥

ॐ कवचाय हुम् ॥ (दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे बायें कंधेका और बायें हाथकी अँगुलियोंसे दायें कंधेका एक साथ ही स्पर्श करे।)

(५) 'ॐ विश्वतश्चक्षु'-रिति मन्त्रस्य विश्वकर्माभौवनऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, विश्वकर्मा देवता, नेत्रन्यासे विनियोगः । (विनियोगका जल छोड़े।)

ॐ विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखोविश्वतोबाहुरुतविश्वतस्यात् ।
सम्बाहुब्ध्यान्धर्मतिसम्पत्त्रैर्द्यावाभूमीजुनयन्देवऽएकः ॥

ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ (दाहिने हाथकी अनामिका और तर्जनीसे क्रमशः वाम तथा दक्षिण नेत्र एवं मध्यमासे ललाटके मध्य भागका एक साथ ही स्पर्श करे।)

(६) 'ॐ मानस्तोके' इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः, जगती छन्दः, एको रुद्रो देवता, अस्त्रन्यासे विनियोगः । (विनियोगका जल छोड़े।)

मानस्तोकेतनयेमानुऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्ववैषुरीरिषः ।

मानोव्वीरान्नुद्रभूमिनोव्वधीर्हविष्मन्तुः सदुमित्त्वाहवामहे ॥

ॐ अस्त्राय फट् ॥ (दायें हाथको प्रदक्षिण-क्रमसे सिरके पीछेसे घुमाकर बायें हाथकी हथेलीपर मध्यमा और तर्जनीसे ताली बजाये।)

इस प्रकार षडङ्गन्यास करनेके अनन्तर हाथमें पुष्प लेकर आगे लिखे मन्त्रसे भगवान् सदाशिवका ध्यान करे—

ध्यान

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

चाँदीके पर्वतके समान जिनकी श्वेत कान्ति है, जो सुन्दर चन्द्रमाको आभूषणरूपसे धारण करते हैं, रत्नमय अलङ्कारोंसे जिनका शरीर उज्ज्वल है, जिनके हाथोंमें परशु, मृग, वर और अभय विद्यमान हैं, जो प्रसन्न हैं, जो पद्मके आसनपर विराजमान हैं, देवतागण जिनके चारों ओर खड़े होकर स्तुति करते हैं, जो बाघकी खाल पहनते हैं, जो विश्वके आदि, जगत्की उत्पत्तिके बीज और समस्त भयोंको हरनेवाले हैं, जिनके पाँच मुख और तीन नेत्र हैं, उन महेश्वरका प्रतिदिन ध्यान करे।



॥ श्रीहरिः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

रुद्राष्टाध्यायी

— प्रथमोऽध्यायः —

श्रीगणेशाय नमः ॥ हरिः ॐ गुणानान्त्वागुणपतिः हवामहे
प्रियाणान्त्वाप्रियपतिः हवामहे निधीनान्त्वानिधिपतिः हवामहे व्वसोमम ।
आहमजानिगर्भधमात्त्वमजसिगर्भधम् ॥१॥ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टु-
प्पङ्क्त्यासुह । बृहत्पुष्णिहा कुक्कुप्सूचीभिः शम्यन्तुत्वा ॥२॥

पहला अध्याय

श्रीगणेशजीके लिये नमस्कार है। समस्त गणोंका पालन करनेके कारण गणपतिरूपमें प्रतिष्ठित आपको हम आवाहित करते हैं, प्रियजनोंका कल्याण करनेके कारण प्रियपतिरूपमें प्रतिष्ठित आपको हम आवाहित करते हैं और पद्म आदि निधियोंका स्वामी होनेके कारण निधिपतिरूपमें प्रतिष्ठित आपको हम आवाहित करते हैं। हे हमारे परम धनरूप ईश्वर! आप मेरी रक्षा करें। मैं गर्भसे उत्पन्न हुआ जीव हूँ और आप गर्भादिरहित स्वाधीनतासे प्रकट हुए परमेश्वर हैं। आपने ही हमें माताके गर्भसे उत्पन्न किया है॥ १ ॥ हे परमेश्वर! गान करनेवालेका रक्षक गायत्री छन्द, तीनों तापोंका रोधक त्रिष्टुप् छन्द, जगत्में विस्तीर्ण जगती छन्द, संसारका कष्टनिवारक अनुष्टुप् छन्द, पंक्ति छन्दसहित बृहती छन्द, प्रभातप्रियकारी उष्णिक् छन्दके साथ ककुप् छन्द—ये सभी छन्द सुन्दर उक्तियोंके द्वारा आपको शान्त करें॥ २ ॥

द्विपदायाश्चतुष्पदास्त्रिपदायाश्चषट्पदाः ॥ विच्छन्दायाश्चस-
 च्छन्दाःसूचीभिःशम्यन्तुत्वा ॥३॥ सहस्तौमाःसहछन्दसऽआवृतःस-
 हप्रमाऽऋषयःसुप्तदैव्याः ॥ पूर्वेषाम्पन्थामनुदृश्यधीराऽअन्वालेभि-
 रेरुत्थ्योनरश्मीन् ॥४॥ यज्जाग्रतो दूरमुदैतिदैवन्तदुसुप्तस्यतथैवैति ॥
 दूरङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकुन्तन्मेमनःशिवसङ्कल्पमस्तु ॥५॥
 येनकर्मण्युपसौमनीषिणौयज्ञेकृण्वन्तिविदथेषुधीराः ॥ यदपूर्वव्यक्ष-
 मन्तः प्रजानान्तन्मेमनःशिवसङ्कल्पमस्तु ॥६॥

हे ईश्वर! दो पादवाले, चार पादवाले, तीन पादवाले, छः पादवाले, छन्दोंके लक्षणोंसे रहित अथवा छन्दोंके लक्षणोंसे युक्त वे सभी छन्द सुन्दर उक्तियोंके द्वारा आपको शान्त करें ॥ ३ ॥ प्रजापतिसम्बन्धी मरीचि आदि सात बुद्धिमान् ऋषियोंने स्तोम आदि साममन्त्रों, गायत्री आदि छन्दों, उत्तम कर्मों तथा श्रुतिप्रमाणोंके साथ अङ्गिरा आदि अपने पूर्वजोंके द्वारा अनुष्ठित मार्गका अनुसरण करके सृष्टियज्ञको उसी प्रकार क्रमसे सम्पन्न किया था जैसे रथी लगामकी सहायतासे अश्वको अपने अभीष्ट स्थानकी ओर ले जाता है ॥ ४ ॥ जो मन जागते हुए मनुष्यसे बहुत दूरतक चला जाता है, वही द्युतिमान् मन सुषुप्ति अवस्थामें सोते हुए मनुष्यके समीप आकर लीन हो जाता है तथा जो दूरतक जानेवाला और जो प्रकाशमान श्रोत्र आदि इन्द्रियोंको ज्योति देनेवाला है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्पवाला हो ॥ ५ ॥ कर्मानुष्ठानमें तत्पर बुद्धिसम्पन्न मेधावी पुरुष यज्ञमें जिस मनसे शुभ कर्मोंको करते हैं, प्रजाओंके शरीरमें और यज्ञीयपदार्थोंके ज्ञानमें जो मन अद्भुत पूज्यभावसे स्थित है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्पवाला हो ॥ ६ ॥

यत्प्रज्ञानमुतचेतोदृतिश्च्युयज्ज्योतिरुन्तरमृतम्प्रजासु ।। यस्मान्ऽऋते-
 किञ्चुनकर्मक्रियतेतन्मेमनःशिवसङ्कल्पमस्तु ।। ७ ।। येनेदम्भुतम्भुव-
 नम्भविष्यत्परिगृहीतमुमृतेनुसर्वम् ।। येनयज्ञस्तायतेसुप्तहोतातन्मेमनः
 शिवसङ्कल्पमस्तु ।। ८ ।। यस्मिन्नुचुःसामयजूंषियस्मिन्प्रतिष्ठि-
 तारथनाभाविवासाः ।। यस्मिन्ऽश्चिचुत्तःसर्वमोतम्प्रजानान्तन्मेमनःशिव-
 सङ्कल्पमस्तु ।। ९ ।। सुषारथिरश्श्वानिवृषन्मनुष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्व्वजिन-
 ऽइव ।। हृत्प्रतिष्ठुंयदजिरज्जविष्ठुन्तन्मेमनःशिवसङ्कल्पमस्तु ।। १० ।।

॥ इति रुद्रपाठे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

जो मन प्रकर्ष ज्ञानस्वरूप, चित्तस्वरूप और धैर्यरूप है; जो अविनाशी मन प्राणियोंके भीतर ज्योतिरूपसे विद्यमान है और जिसकी सहायताके बिना कोई कर्म नहीं किया जा सकता, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्पवाला हो ॥ ७ ॥ जिस शाश्वत मनके द्वारा भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकालकी सारी वस्तुएँ सब ओरसे ज्ञात होती हैं और जिस मनके द्वारा सात होतावाला यज्ञ विस्तारित किया जाता है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्पवाला हो ॥ ८ ॥ जिस मनमें ऋग्वेदकी ऋचाएँ और जिसमें सामवेद तथा यजुर्वेदके मन्त्र उसी प्रकार प्रतिष्ठित हैं, जैसे रथचक्रकी नाभिमें अरे (तीलियाँ) जुड़े रहते हैं, जिस मनमें प्रजाओंका सारा ज्ञान [पटमें तन्तुकी भाँति] ओतप्रोत रहता है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्पवाला हो ॥ ९ ॥ जो मन मनुष्योंको अपनी इच्छाके अनुसार उसी प्रकार घुमाता रहता है, जैसे कोई अच्छा सारथि लगामके सहारे वेगवान् घोड़ोंको अपनी इच्छाके अनुसार नियन्त्रित करता है; बाल्य, यौवन, वार्धक्य आदिसे रहित तथा अतिवेगवान् जो मन हृदयमें स्थित है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्पवाला हो ॥ १० ॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का पहला अध्याय पूर्ण हुआ ॥ १ ॥

— द्वितीयोऽध्यायः —

हरिः ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।। सभूमिष्ठसुर्वत-
स्पृत्वात्यतिष्ठदशाङ्गुलम् ।। १ ।। पुरुषऽएवेदः सर्व्वव्यद्भुतं व्यच्चभाव्यम् ।।
उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नैनातिरोहति ।। २ ।। एतावानस्यमहिमातो ज्ज्या-
याँश्च्युपूरुषः ।। पादोऽस्युर्व्विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ।। ३ ।। त्रिपा-
दूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।। ततोर्व्विष्वङ् व्यक्रामत्साश-
नानशनेऽअभि ।। ४ ।।

दूसरा अध्याय

सभी लोकोंमें व्यास महानारायण सर्वात्मक होनेसे अनन्त सिरवाले, अनन्त नेत्रवाले और अनन्त चरणवाले हैं। वे पाँच तत्त्वोंसे बने इस गोलकरूप समस्त व्यष्टि और समष्टि ब्रह्माण्डको सब ओरसे व्याप्त कर नाभिसे दस अंगुल परिमित देशका अतिक्रमण कर हृदयमें अन्तर्यामीरूपमें स्थित हैं ॥ १ ॥ जो यह वर्तमान जगत् है, जो अतीत जगत् है और जो भविष्यमें होनेवाला जगत् है, जो जगत्के बीज अथवा अन्नके परिणामभूत वीर्यसे नर, पशु, वृक्ष आदिके रूपमें प्रकट होता है, वह सब कुछ अमृतत्व (मोक्ष)-के स्वामी महानारायण पुरुषका ही विस्तार है ॥ २ ॥ इस महानारायण पुरुषकी इतनी सब विभूतियाँ हैं अर्थात् भूत, भविष्यत्, वर्तमानमें विद्यमान सब कुछ उसीकी महिमाका एक अंश है। वह विराट् पुरुष तो इस संसारसे अतिशय अधिक है। इसीलिये यह सारा विराट् जगत् इसका चतुर्थांश है। इस परमात्माका अवशिष्ट तीन पाद अपने अमृतमय (विनाशरहित) प्रकाशमान स्वरूपमें स्थित है ॥ ३ ॥ यह महानारायण पुरुष अपने तीन पादोंके साथ ब्रह्माण्डसे ऊपर उस दिव्य लोकमें अपने सर्वोत्कृष्ट स्वरूपमें निवास करता है और अपने एक चरण (चतुर्थांश)-से इस संसारको व्याप्त करता है। अपने इसी चरणको मायामें प्रविष्ट कराकर यह महानारायण देवता, मनुष्य, पशु, पक्षी आदिके नानारूप धारण कर समस्त चराचर जगत्में व्याप्त है ॥ ४ ॥

ततोव्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्यरिच्यत-
 पश्चाद्भूमिमथोपुरः॥५॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःसम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्॥
 पशूँस्ताँश्चक्नेवायुध्यानारुण्याग्राम्याश्चक्षुषे॥६॥ तस्माद्यज्ञा-
 त्सर्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे॥ छन्दाँसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्मा-
 दजायत॥७॥ तस्मादश्श्वाऽअजायन्त्येकेचोभयादतः॥ गावोहजज्ञिरेत-
 स्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः॥८॥ तंयजुजम्बुर्हिषिप्प्रौक्षुःपुरुषञ्जात-
 मंग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाब्ध्याऽऋषयश्चक्षुषे॥९॥

उस महानारायण पुरुषसे सृष्टिके प्रारम्भमें विराट्स्वरूप ब्रह्माण्डदेह तथा उस देहका अभिमानी पुरुष (हिरण्यगर्भ) प्रकट हुआ। उस विराट् पुरुषने उत्पन्न होनेके साथ ही अपनी श्रेष्ठता स्थापित की। बादमें उसने भूमिका, तदनन्तर देव, मनुष्य आदिके पुरों (शरीरों)-का निर्माण किया ॥ ५ ॥ उस सर्वात्मा महानारायणने सर्वात्मा पुरुषका जिसमें यजन किया जाता है, ऐसे यज्ञसे पृषदाज्य (दधिसे मिश्रित घृत)-को सम्पादित किया। उस महानारायणने उन वायुदेवतावाले पशुओं तथा जो हरिण आदि वनवासी तथा अश्व आदि ग्रामवासी पशु थे उनको भी उत्पन्न किया ॥ ६ ॥ उस सर्वहुत यज्ञपुरुषसे ऋग्वेद और सामवेद उत्पन्न हुए, उसीसे सर्वविध छन्द उत्पन्न हुए और यजुर्वेद भी उसी यज्ञपुरुषसे उत्पन्न हुआ ॥ ७ ॥ उसी यज्ञपुरुषसे अश्व उत्पन्न हुए और वे सब प्राणी उत्पन्न हुए जिनके ऊपर-नीचे दोनों तरफ दाँत हैं। उसी यज्ञपुरुषसे गौएँ उत्पन्न हुईं और उसीसे भेंड़-बकरियाँ पैदा हुईं ॥ ८ ॥ सृष्टिसाधन-योग्य या देवताओं और सनक आदि ऋषियोंने मानस यागकी सम्पन्नताके लिये सृष्टिके पूर्व उत्पन्न उस यज्ञसाधनभूत विराट् पुरुषका प्रोक्षण किया और उसी विराट् पुरुषसे ही इस यज्ञको सम्पादित किया ॥ ९ ॥

यत्पुरुषं दधुःकतिधा व्यकल्पयन् ।। मुखं द्विर्मुस्यासीत्किम्बाहू किमूरु-
 पादाऽउच्येते ।। १० ।। ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राज्ञ्यः कृतः ।। ऊरू तद-
 स्य वह्नयः पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत ।। ११ ।। चन्द्रमामनसो जातश्चक्षुः
 सूर्वोऽअजायत ।। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखाद्ग्निरजायत ।। १२ ।।
 नाभ्याऽआसीदुत्तरिक्षः शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत ।। पृथ्व्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रा-
 त्ताल्लोकाँ २ ।। १३ ।। यत्पुरुषेण हविषा देवायुजमतन्वत ।।
 वसन्तोऽस्यासीदाज्यं घृणीष्मऽधुमः शरद्धुविः ।। १४ ।। सुप्तास्यासन्परिधय-
 स्त्रिः सुप्तसमिधः कृताः ।। देवायद्युजन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम् ।। १५ ।।

जब यज्ञसाधनभूत इस विराट् पुरुषकी महानारायणसे प्रेरित महत्, अहंकार आदिकी प्रक्रियासे उत्पत्ति हुई, तब उसके कितने प्रकारोंकी परिकल्पना की गयी ? उस विराट्के मुँह, भुजा, जंघा और चरणोंका क्या स्वरूप कहा गया है ? ॥ १० ॥ ब्राह्मण उस यज्ञोत्पन्न विराट् पुरुषका मुखस्थानीय होनेके कारण उसके मुखसे उत्पन्न हुआ, क्षत्रिय उसकी भुजाओंसे उत्पन्न हुआ, वैश्य उसकी जाँघोंसे उत्पन्न हुआ तथा शूद्र उसके चरणोंसे उत्पन्न हुआ ॥ ११ ॥ विराट् पुरुषके मनसे चन्द्रमा उत्पन्न हुआ, नेत्रसे सूर्य उत्पन्न हुआ, कानसे वायु और प्राण उत्पन्न हुए तथा मुखसे अग्नि उत्पन्न हुई ॥ १२ ॥ उस विराट् पुरुषकी नाभिसे अन्तरिक्ष उत्पन्न हुआ और सिरसे स्वर्ग प्रकट हुआ । इसी तरहसे चरणोंसे भूमि और कानोंसे दिशाओंकी उत्पत्ति हुई । इसी प्रकार देवताओंने उस विराट् पुरुषके विभिन्न अवयवोंसे अन्य लोकोंकी कल्पना की ॥ १३ ॥ जब विद्वानोंने इस विराट् पुरुषके देहके अवयवोंको ही हवि बनाकर इस ज्ञानयज्ञकी रचना की, तब वसन्त-ऋतु घृत, ग्रीष्म-ऋतु समिधा और शरद्-ऋतु हवि बनी थी ॥ १४ ॥ जब इस मानस यागका अनुष्ठान करते हुए देवताओंने इस विराट् पुरुषको ही पशुके रूपमें भावित किया; उस समय गायत्री आदि सात छन्दोंने सात परिधियोंका स्वरूप स्वीकार किया; बारह मास, पाँच ऋतु, तीन लोक और सूर्यदेवको मिलाकर इक्कीस अथवा गायत्री आदि सात, अतिजगती आदि सात और कृति आदि सात छन्दोंको मिलाकर इक्कीस समिधाएँ बनीं ॥ १५ ॥

युज्ञेनयुज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्माणिप्रथमान्यासन् ।। तेहनाकम्महि-
 मानः सचन्तुयत्रपूर्वेसादध्याःसन्तिदेवाः ।। १६ ।। अद्भ्यःसम्भृतः पृथिव्यै-
 रसाच्चविश्श्वश्चकर्मणुःसमवर्त्तताग्रे ।। तस्युत्त्वष्टाविदधद्रूपमेति-
 तन्मर्त्यस्यदेवत्वमाजानुमग्रे ।। १७ ।। वेदाहमेतम्पुरुषम्मुहान्तमादित्यव-
 ण्णन्तमसःपरस्तात् ।। तमेवविदित्त्वातिमृत्युमेतिनान्यः पन्थाविद्युतेऽय-
 नाय ।। १८ ।। प्रजापतिश्चरतिगर्भेऽनुत्तरजायमानोबहुधाविजायते ।।
 तस्युद्योनिम्परिपश्यन्तिधीरास्तस्मिन्हृतस्थुर्भुवनानिद्विश्शवा ।। १९ ।।

सिद्ध संकल्पवाले देवताओंने विराट् पुरुषके अवयवोंकी हविके रूपमें कल्पना कर इस मानस-यज्ञमें यज्ञपुरुष महानारायणकी आराधना की। बादमें ये ही महानारायणकी उपासनाके मुख्य उपादान बने। जिस स्वर्गमें पुरातन साध्य देवता रहते हैं, उस दुःखसे रहित लोकको ही महानारायण यज्ञपुरुषकी उपासना करनेवाले भक्तगण प्राप्त करते हैं ॥ १६ ॥ उस महानारायणकी उपासनाके और भी प्रकार हैं—पृथिवी और जलके रससे अर्थात् पाँच महाभूतोंके रससे पुष्ट, सारे विश्वका निर्माण करनेवाले, उस विराट् स्वरूपसे भी पहले जिसकी स्थिति थी, उस रसके रूपको धारण करनेवाला वह महानारायण पुरुष पहले आदित्यके रूपमें उदित होता है। प्रथम मनुष्यरूप उस पुरुष-मेधयाजीका यह आदित्यरूपमें अवतरित ब्रह्म ही मुख्य आराध्य देवता बनता है ॥ १७ ॥ आदित्यस्वरूप, अविद्याके लवलेशसे भी रहित तथा ज्ञानस्वरूप परम पुरुष उस महानारायणको मैं जानता हूँ। कोई भी प्राणी उस आदित्यरूप महानारायण पुरुषको जान लेनेके उपरान्त ही मृत्युका अतिक्रमण कर अमृतत्वको प्राप्त करता है। परम आश्रयके निमित्त अर्थात् अमृतत्वकी प्राप्तिके लिये इससे भिन्न कोई दूसरा उपाय नहीं है ॥ १८ ॥ सर्वात्मा प्रजापति अन्तर्यामीरूपसे गर्भके मध्यमें प्रकट होता है। जन्म न लेता हुआ भी वह देवता, तिर्यक्, मनुष्य आदि योनियोंमें नाना रूपोंमें प्रकट होता है। ब्रह्मज्ञानी ब्रह्माके उत्पत्ति-स्थान उस महानारायण पुरुषको सब ओरसे देखते हैं, जिसमें सभी लोक स्थित हैं ॥ १९ ॥

योदेवेभ्यऽआतपतिषोदेवानाम्पुरोहितः ।। पूर्वोयोदेवेभ्योजातो न-
 मोरुचायुब्राह्मणे ।। २० ।। रुचम्ब्राह्मजुनयन्तो देवाऽअग्नेतदब्धुवन् ।। यस्त्वैवं-
 ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवाऽअसन्वशे ।। २१ ।। श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्वन्याव-
 होरात्रेपाश्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौ व्यात्तम् ।। इष्णान्निषाणामुम्मऽइषाण-
 सर्वलोकम्मऽइषाण ।। २२ ।।

॥ इति रुद्रपाठे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

जो आदित्यस्वरूप प्रजापति सभी देवताओंको शक्ति प्रदान करनेके लिये सदा प्रकाशित रहता है, जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवताओंका बहुत पूर्वकालसे हित करता आया है, जो इन सबका पूज्य है, जो इन सब देवताओंसे पहले प्रादुर्भूत हुआ है, उस ब्रह्मज्योतिस्वरूप परम पुरुषको हम प्रणाम करते हैं ॥ २० ॥ इन्द्रियोंके अधिष्ठाता देवताओंने शोभन ब्रह्मज्योतिरूप आदित्य देवको प्रकट करते हुए सर्वप्रथम यह कहा कि हे आदित्य ! जो ब्राह्मण आपके इस अजर-अमर स्वरूपको जानता है, समस्त देवगण उस उपासकके वशमें रहते हैं ॥ २१ ॥ हे महानारायण आदित्य ! श्री और लक्ष्मी आपकी पत्नियाँ हैं, ब्रह्माके दिन-रात पार्श्व-स्वरूप हैं, आकाशमें स्थित नक्षत्र आपके स्वरूप हैं । द्यावापृथिवी आपके विकसित मुख हैं । प्रयत्नपूर्वक आप सदा मेरे कल्याणकी इच्छा करें । मुझे आप अपना कल्याणमय लोक प्राप्त करावें और सारे योगैश्वर्य मुझे प्रदान करें ॥ २२ ॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का दूसरा अध्याय पूर्ण हुआ ॥ २ ॥



— तृतीयोऽध्यायः —

हरिः ॐ आशुः शिशानोवृषभोनभीमोर्धनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।।
सुङ्गन्दनोनिमिषऽएकवीरः शतः सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ।।१।। सुङ्गन्दनेना-
निमिषेणजिष्णुनायुत्तरेणदुश्श्च्यवनेनधृष्णुना ।। तदिन्द्रेणजयतुतत्सहद्वंध्युधो
नरऽइषुहस्तेनवृष्णा ।।२।। सऽइषुहस्तैःसनिषङ्गिभिर्वृशीसंस्त्रष्टासयुधऽ-
इन्द्रोऽगुणेन ।। सुष्टुजित्सोमपाबाहुशब्दयुग्मधन्वाप्रतिहिताभिरस्ता ।।३।।
बृहस्पतेपरिदीयारथेनरक्षोहामित्राँ २ ।।ऽअपुबाधमानः ।। प्रभुञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो-
युधाजयन्नुस्माकमेद्ध्यवितारथानाम् ।।४।।

तीसरा अध्याय

शीघ्रगामी, वज्रके समान तीक्ष्ण, वर्षाके स्वभावकी उपमावाले, भयकारी, शत्रुओंके अतिशय घातक, मनुष्योंके क्षोभके हेतु, बार-बार गर्जन करनेवाले, देवता होनेसे पलक न झपकानेवाले, अत्यन्त सावधान तथा अद्वितीय वीर इन्द्र एक साथ ही शत्रुओंकी सैकड़ों सेनाओंको जीत लेते हैं ॥ १ ॥ हे युद्ध करनेवाले मनुष्यो ! प्रगल्भ तथा भयरहित शब्द करनेवाले, अनेक युद्धोंको जीतनेवाले, युद्धरत, एकचित्त होकर हाथमें बाण धारण करनेवाले, जयशील तथा स्वयं अजेय और कामनाओंकी वर्षा करनेवाले इन्द्रके प्रभावसे उस शत्रुसेनाको जीतो और उसे अपने वशमें करके विनष्ट कर दो ॥ २ ॥ वे जितेन्द्रिय अथवा शत्रुओंको अधीन करनेवाले, हाथमें बाण लिये हुए धनुर्धारियोंको युद्धके लिये ललकारनेवाले इन्द्र शत्रुसमूहोंको एक साथ युद्धमें जीत सकते हैं । यजमानोंके यज्ञमें सोमपान करनेवाले, बाहुबली तथा उत्कृष्ट धनुषवाले वे इन्द्र अपने धनुषसे छोड़े हुए बाणोंसे शत्रुओंका नाश कर देते हैं । वे इन्द्र हमारी रक्षा करें ॥ ३ ॥ हे बृहस्पते ! आप राक्षसोंका नाश करनेवाले होवें, रथके द्वारा सब ओर विचरण करें, शत्रुओंको पीड़ित करते हुए और उनकी सेनाओंको अतिशय हानि पहुँचाते हुए युद्धमें हिंसाकारियोंको जीतकर हमारे रथोंकी रक्षा करें ॥ ४ ॥

बलुविज्ञाय स्थविरुःप्रवीरुः सहस्वान्वाजीसहमानऽउग्रः॥ अभि-
 वीरोऽअभिसत्त्वासहोजाजैत्रमिन्द्ररथुमातिष्ठगोवित्॥५॥ गोत्रभिदङ्गे-
 विदुं वज्रबाहुञ्जयन्तुमज्जमप्रमृणन्तुमोजसा॥ इमं सजाताऽअनुवीरय-
 दध्वमिन्द्रं सखायोऽअनुसंरभदध्वम्॥६॥ अभिगोत्राणिसहसा-
 गाहमानोदयोवीरःशतमन्युरिन्द्रः॥ दुश्श्च्युवनः पृतनाषाड्युद्धयोऽस्मा-
 कं सेनाऽअवतुप्रयुत्सु॥७॥ इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञः पुरऽ-
 एतुसोमः॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्पुरुतौयन्त्वग्रम्॥८॥

हे इन्द्र ! आप दूसरोंका बल जाननेवाले, अत्यन्त पुरातन, अतिशय शूर, महाबलिष्ठ, अन्नवान्, युद्धमें क्रूर, चारों तरफसे वीर योद्धाओंसे युक्त, सभी ओरसे परिचारकोंसे आवृत, बलसे ही उत्पन्न, स्तुतिको जाननेवाले तथा शत्रुओंका तिरस्कार करनेवाले हैं; आप अपने जयशील रथपर आरोहण करें ॥ ५ ॥ हे समान जन्मवाले देवताओ ! असुरकुलके नाशक, वेदवाणीके ज्ञाता, हाथमें वज्र धारण करनेवाले, संग्रामको जीतनेवाले, बलसे शत्रुओंका संहार करनेवाले इस इन्द्रको पराक्रम दिखानेके लिये उत्साह दिलाइये और इसको उत्साहित करके आपलोग स्वयं भी उत्साहसे भर जाइये ॥ ६ ॥ शत्रुओंके प्रति दयाहीन, पराक्रमसम्पन्न, अनेक प्रकारसे क्रोधयुक्त अथवा सैकड़ों यज्ञ करनेवाले, दूसरोंसे विनष्ट न होने योग्य, शत्रुसेनाका संहार करनेवाले तथा किसीके भी द्वारा प्रहरित न हो सकनेवाले इन्द्र संग्रामोंमें असुरकुलोंका एक साथ नाश करते हुए हमारी सेनाकी रक्षा करें ॥ ७ ॥ बृहस्पति तथा इन्द्र सभी प्रकारकी शत्रु-सेनाओंका मर्दन करनेवाली विजयशील देवसेनाओंके नायक हैं । यज्ञपुरुष विष्णु, सोम और दक्षिणा इनके आगे-आगे चलें । सभी मरुद्गण भी सेनाके आगे-आगे चलें ॥ ८ ॥

इन्द्रस्यवृष्णोवैरुणस्युराज्ञऽआदित्यानाम्पुरुतांशब्दोऽउग्रम् ।। महा-
 मनसाम्भुवनच्युवानाङ्घ्रिषोदेवानाञ्जयतामुदस्थात् ।। ९ ।। उद्धर्षयमघवन्ना-
 युधान्युत्सत्त्वंनाम्मा मुकानाम्मनांशसि ।। उद्धृत्रहन्वाजिनांवाजिनाभ्युद्व-
 थानाञ्जयतांष्यन्तुघोषाः ।। १० ।। अस्माकुमिन्द्रु समृतेषुदध्वजेष्वस्माकुं-
 ष्याऽइषवस्तार्जयन्तु ।। अस्माकंवीराऽउत्तरेभवन्त्वस्माँ २ ।। उदेवाऽअवता-
 हवेषु ।। ११ ।। अमीषाञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्तीगृहाणाङ्गान्यप्येपरैहि ।। अभि-
 प्रेहिनिर्दहहृत्सु शोकैरुन्धेनामित्रास्तमसासचन्ताम् ।। १२ ।। अवसृष्ट्वापरापतु-
 शरव्येब्रह्मसहशिते ।। गच्छामित्रान्प्रपद्यस्वमामीषाङ्कञ्चनोच्छिषः ।। १३ ।।

महानुभाव, सारे लोकोंका नाश करनेकी सामर्थ्यवाले तथा विजय पानेवाले देवताओं, बारह आदित्यों, मरुद्गणों, कामनाकी वर्षा करनेवाले इन्द्र और राजा वरुणकी सभासे जय-जयकारका शब्द उठ रहा है ॥ ९ ॥ हे इन्द्र ! आप अपने शस्त्रोंको भली प्रकार सुसज्जित कीजिये, मेरे वीर सैनिकोंके मनको हर्षित कीजिये । हे वृत्रनाशक इन्द्र ! अपने घोड़ोंकी गतिको तेज कीजिये, विजयशील रथोंसे जयघोषका उच्चारण हो ॥ १० ॥ शत्रुकी पताकाओंसे हमारी पताकाओंके मिलनेपर इन्द्र हमारी रक्षा करें, हमारे बाण शत्रुओंको नष्टकर उनपर विजय प्राप्त करें और हमारे वीर सैनिक शत्रुओंके सैनिकोंसे श्रेष्ठता प्राप्त करें । हे देवगण ! आप लोग संग्रामोंमें हमारी रक्षा कीजिये ॥ ११ ॥ हे शत्रुओंके प्राणोंको कष्ट देनेवाली व्याधि ! इन वैरियोंके चित्तको मोहित करती हुई इनके सिर आदि अङ्गोंको ग्रहण करो, तत्पश्चात् दूर चली जाओ और पुनः उनके पास जाकर उनके हृदयोंको शोकसे दग्ध कर दो । हमारे शत्रु घने अन्धकारसे आच्छन्न हो जायँ ॥ १२ ॥ वेद-मन्त्रोंसे तीक्ष्ण किये हुए हे बाणरूप ब्रह्मास्त्र ! मेरे द्वारा प्रक्षिप्त किये गये तुम शत्रुसेनापर गिरो, शत्रुके पास पहुँचो और उनके शरीरोंमें प्रवेश करो । इनमेंसे किसीको भी जीवित न छोड़ो ॥ १३ ॥

प्रेताजयतानरुऽइन्द्रोवःशर्मीयच्छतु ।। उग्रावःसन्तु बाहवौनाधृष्या-
 यथासंथ ।। १४ ।। असौषासेनामरुतः परैषामुब्ध्यैतिनुऽओजसास्प्यद्ध-
 माना ।। ताङ्गूहतुतमुसापव्रतेनुयथामीऽअन्योऽअन्यन्नजानन् ।। १५ ।। यत्र-
 बाणाः सम्पतन्तिकुमाराविशिखाऽइव ।। तन्नइन्द्रोबृहस्पतिरदितिः शर्मी-
 यच्छतुविश्वाहाशर्मीयच्छतु ।। १६ ।। मर्मीणितेधर्मीणाच्छादयामि-
 सोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम् ।। उरोर्धरीयोधरुणस्तेकृणोतुजयन्तुत्वानुदेवा-
 मदन्तु ।। १७ ।।

॥ इति रुद्रपाठे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

हे हमारे वीरपुरुषो ! शत्रुकी सेनापर शीघ्र आक्रमण करो और उनपर विजय पाओ । इन्द्र तुम लोगोंका कल्याण करें, तुम्हारी भुजाएँ शस्त्र उठानेमें समर्थ हों, जिससे किसी भी प्रकार तुम लोग शत्रुओंसे पराजयका तिरस्कार प्राप्त न करो ॥ १४ ॥ हे मरुद्गण ! जो यह शत्रुओंकी सेना अपने बलपर हमसे स्पर्धा करती हुई हमारे सामने आ रही है, उसको अकर्मण्यताके अन्धकारमें डुबा दो, जिससे कि उस शत्रुसेनाके सैनिक एक-दूसरेको न पहचान पायें और परस्पर शस्त्र चलाकर नष्ट हो जायँ ॥ १५ ॥ जिस युद्धमें शत्रुओंके चलाये हुए बाण फैली हुई शिखावाले बालकोंकी तरह इधर-उधर गिरते हैं; उस युद्धमें इन्द्र, बृहस्पति और देवमाता अदिति हमें विजय दिलायें । ये सब देवता सर्वदा हमारा कल्याण करें ॥ १६ ॥ हे यजमान ! मैं तुम्हारे मर्मस्थानोंको कवचसे ढँकता हूँ, ब्राह्मणोंके राजा सोम तुमको मृत्युके मुखसे बचानेवाले कवचसे आच्छादित करें, वरुण तुम्हारे कवचको उत्कृष्टसे भी उत्कृष्ट बनायें और अन्य सभी देवता विजयकी ओर अग्रसर हुए तुम्हारा उत्साहवर्धन करें ॥ १७ ॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का तीसरा अध्याय पूर्ण हुआ ॥ ३ ॥

— चतुर्थोऽध्यायः —

हरिः ॐ विष्वाङ्बृहत्पिबतुसोम्यम्मदध्वायुर्द्धद्यज्ञपतावविहुतम् ।।
वार्तजूतोयोऽभिरक्षतित्मनाप्रजाः पुपोषपुरुधाविराजति ।।१।। उदुत्यञ्जात-
वेदसन्देवंब्रह्मन्तिकेतवः ।। दृशेविश्वायु सूर्वम् ।।२।। येनापावकचक्षसाभु-
रण्यन्तुञ्जनाँर ।।ऽअनु ।। त्वंवरुणपश्यसि ।।३।। दैव्यावदध्वर्षुऽआगतु-
रथेनुसूर्वत्वचा ।। मदध्वायुज्ञऽसमञ्जाथे ।। तम्प्रत्वनथाऽयंवेनश्श्च-
न्नन्देवानाम् ।।४।। तम्प्रत्वनथापूर्वथाविश्श्वथेमथाज्ज्येष्ठतातिम्बर्हिष-
दंऽस्वर्विदम् ।। प्रतीचीनं वृजनन्दोहसेधुनिमाशुञ्जयन्तुमनुयासुवर्द्धसे ।।५।।

चौथा अध्याय

हे सूर्यदेव ! यजमानमें अखण्डित आयु स्थापित करते हुए आप इस अत्यन्त स्वादु सोमरूप हविका पान कीजिये । जो सूर्यदेव वायुसे प्रेरित आत्माद्वारा प्रजाका पालन और पोषण करते हैं, वे अनेक रूपोंमें आलोकित होते हैं ॥ १ ॥ सूर्यरश्मियाँ सम्पूर्ण जगत्को आलोक प्रदान करनेके लिये जातवेदस् (अग्नितेजोमय) सूर्यदेवको ऊपरकी ओर ले जाती रहती हैं ॥ २ ॥ सबको शुद्ध करनेवाले हे वरुणदेव ! आप जिस अनुग्रह-दृष्टिसे उस सुपर्ण स्वरूपको देखते हैं, उसी चक्षुसे आप हम ऋत्विजोंको भी देखिये ॥ ३ ॥ हे दिव्य अश्विनीकुमारो ! आप दोनों सूर्यके समान कान्तिमान् रथसे हमारे यहाँ आइये और पुरोडाश, दधि आदिसे यज्ञको सींचकर उसे बहुत हविवाला बनाइये ॥ ४ ॥ हे इन्द्र ! आप जिन यज्ञक्रियाओंमें पुनः-पुनः सोमरसका पान कर वृद्धिको प्राप्त होते हैं, उन उत्कृष्ट विस्तारवान् सर्वश्रेष्ठ यज्ञोंमें कुश आसनके सेवी, स्वर्गवेत्ता, शत्रुओंको कम्पित करनेवाले तथा जेतव्य वस्तुओंको शीघ्र जीतनेवाले आप बलपूर्वक यजमानको यज्ञफल प्रदान करते हैं, जैसे पुरातन भृगु आदि ऋषियों, पूर्व पितर आदि, विश्वके सभी प्राणियों तथा वर्तमान यजमानोंने आपकी स्तुति की है, उसी प्रकार हम आपकी स्तुति करते हैं ॥ ५ ॥

अयं व्वेनश्चोदयत्पृश्निं गन्धर्वाज्ज्योतिर्जरायूरजसो व्विमाने ।। इमम्-
 पापं सङ्गमे सूर्वस्य शिशुन्न विप्रामुतिभीरिहन्ति ।। ६ ।। चित्रन्देवानामुदगा-
 दनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।। आप्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षं सूर्व-
 ऽआत्मा जगतस्तु तस्थुषश्च ।। ७ ।। आनुऽइडाभिर्विदथे सुशस्तिविश्वानरं
 सविता देवऽएतु ।। अपि यथा ब्रुवानो मत्संस्थानो विश्वञ्जगदभिपित्त्वे-
 मनीषा ।। ८ ।। यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगाऽअभिसूर्व ।। सर्वन्तदिन्द्रतेव शै ।। ९ ।।
 तुरणिर्विश्वदर्शतो ज्ज्योतिष्कृदसि सूर्व ।। विश्वमाभासिरोचुनम् ।। १० ।।

विद्युत्के लक्षणोंवाली ज्योतिसे परिवृत यह कान्तिमान् चन्द्र ग्रीष्मान्तके समय जलनिर्माणके निमित्त सूर्य अथवा द्युलोकके गर्भमें स्थित रहनेवाले जलको प्रेरित करता है। बुद्धिमान् विप्रगण सूर्यसे जलकी संगतिके समय मधुर वाणियोंसे इस सोमकी उसी प्रकार स्तुति करते हैं, जैसे लोग मधुर वचनोंसे अपने शिशुको प्रसन्न करते हैं ॥ ६ ॥ यह कैसा आश्चर्य है कि देवताओंके जीवनाधार, तेजसमूह तथा मित्र, वरुण और अग्निके नेत्रस्वरूप सूर्य उदयको प्राप्त हुए हैं ! स्थावर-जंगममय जगत्के आत्मास्वरूप इन सूर्यदेवने पृथिवी, द्युलोक और अन्तरिक्षको अपने तेजसे पूर्णतः व्याप्त कर रखा है ॥ ७ ॥ सब जीवोंके हितकारी, अन्तर्यामी सूर्यदेव हमारी सुन्दर आहुतियोंके कारण प्रशंसायोग्य यज्ञशालामें प्रकट हों। हे जरारहित देवताओ ! आगमन-कालपर जिस प्रकार आप सब तृप्त होते हैं, उसी प्रकार इस सारे जगत्को भी प्रज्ञासे तृप्त करें ॥ ८ ॥ हे अन्धकारके नाशक ऐश्वर्ययुक्त सूर्यदेव ! आज जहाँ कहीं भी आप उदित होते हैं, वह सब स्थान आपके ही वशमें हो जाता है ॥ ९ ॥ हे सूर्यदेव ! आप संसार-सागरमें नौकाके समान हैं, सबके दर्शनयोग्य हैं तथा सबको तेज प्रदान करनेवाले हैं। प्रकाशित होनेवाले सारे संसारको आप ही प्रकाशित करते हैं अर्थात् अग्नि, विद्युत्, नक्षत्र, चन्द्रमा, ग्रह, तारों आदिमें आपकी ही ज्योति प्रकाशित हो रही है ॥ १० ॥

तत्सूक्ष्मस्यदेवत्वन्तर्म्हित्वम्मुद्ध्याकर्त्तुर्विततुः सञ्जभारः॥ अदेद-
 युक्त्तहुरितःसुधस्थादाद्वात्रीवासस्तनुतेसिमम्मै॥११॥ तन्मित्रस्य
 व्वरुणस्याभिचक्षेसूक्ष्मरूपङ्कणुतेद्योरुपस्थे॥ अनुन्तमुत्र्यदद्गुशदस्य-
 पाजः कृष्णामुत्र्यद्धुरितुः सम्भरन्ति॥१२॥ वण्णमुहाँ२॥ऽअसिसूक्ष्मबडा-
 दित्यमुहाँ२॥ऽअसि॥ मुहस्तेसुतोर्महिमापनस्यतेद्वादैवमुहाँ२॥ऽअसि॥१३॥
 बट्सूक्ष्म श्रवसामुहाँ२॥ऽअसिसुत्रादैवमुहाँ२॥ऽअसि॥ मुह्रादेवानाम-
 सुक्ष्मःपुरोहितोविभुज्ज्योतिरदाब्ध्यम्॥१४॥

सूर्यका जो यह देवत्व है और यह जो ऐश्वर्य है वह विराट् स्वरूप देहके मध्यमें सब ओरसे विस्तारित ग्रहमण्डलको अपनी आकर्षणशक्तिसे नियमित रखता है। जब ये अपनी हरित वर्णकी किरणोंको आकाश-मण्डलमें अपनी आत्मासे युक्त करते हैं, तदनन्तर ही रात्रि अपने अन्धकाररूपी वस्त्रसे सबको आच्छादित कर देती है ॥ ११ ॥ सूर्य स्वर्गलोकके उत्संगमें मित्रदेव और वरुणदेवका रूप धारण करते हैं तथा उससे मनुष्योंको भलीभाँति देखते हैं अर्थात् मित्रदेवके रूपमें पुण्यात्माओंको देखकर उनपर अनुग्रह करते हैं और वरुणरूपमें दुष्टजनोंको देखकर उनका निग्रह करते हैं। इन सूर्यका अन्य स्वरूप अनन्त अर्थात् देश-कालके परिच्छेदसे रहित, मायोपाधिका नाशक ब्रह्म ही है। इनके साकाररूपको इन्द्रियोंकी वृत्तियाँ अथवा किरणें धारण करती हैं अर्थात् सूर्य ही सगुण और निर्गुण ब्रह्म हैं ॥ १२ ॥ हे जगत्के प्रेरक सत्यस्वरूप सूर्यदेव ! आप ही सर्वश्रेष्ठ हैं। हे आदित्य ! आप ही महान् हैं; स्तोतागण आपकी महान् और अविनश्वर महिमाका गान करते हैं। हे दीप्यमान सत्यस्वरूप ! आप महान् हैं ॥ १३ ॥ हे सत्यस्वरूप सूर्य ! आप धन (अथवा यश) -से महान् हैं। हे सत्स्वरूप देव ! आप महान् हैं। आप अपनी महिमाके कारण देवताओंके मध्य असुरविनाशक (अथवा समस्त प्राणियोंका कल्याण करनेवाले) हैं। आप सभी कार्योंमें अर्घ्यदानादिके रूपमें प्रथम पूज्य हैं। आपकी ज्योति सर्वव्यापी तथा अनुल्लंघनीय है ॥ १४ ॥

श्रायन्तऽइवसूष्यंविश्श्वेदिन्द्रस्य भक्षत॥ वसूनिजातेजनमानुऽओजसा-
 प्रतिभागन्नदीधिम॥१५॥ अद्यादैवाऽउदितासूष्यस्यनिरहंसः पिपृता-
 निरवुद्यात्॥ तन्नोमित्रोवरुणोमामहन्तामदितिः सिन्धुःपृथिवीऽउत-
 द्यौः॥१६॥ आकृष्णेनुरजसावर्त्तीमानोनिवेशयन्नमृतममर्त्यञ्च॥ हिरण्ययै-
 सवितारथेनादेवोयातिभुवनानि पश्यन्॥१७॥

॥ इति रुद्रपाठे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

सूर्यकी उपासना करनेवाले इन्द्र आदिकी उपासनासे प्राप्त होनेवाले धन-धान्य, ऐश्वर्य आदि भोगोंको स्वतः प्राप्त कर लेते हैं, अतः हमको चाहिये कि प्रकाशकी किरणोंके साथ जब सूर्यभगवान् उदित होते हैं, तब हम उनके निमित्त यज्ञमें देवभाग अर्पित करें ॥ १५ ॥ हे सूर्यरश्मिरूप देवताओ! अब आज सूर्यका उदय होनेपर आपलोग हमें पाप और अपयशसे मुक्त करें। मित्र, वरुण, अदिति, समुद्र, पृथ्वी और स्वर्ग—ये सब हमारे वचनको अंगीकार करें ॥ १६ ॥ सबको प्रेरणा प्रदान करनेवाले सूर्यदेव सुवर्णमय रथमें आरूढ़ होकर कृष्णवर्ण रात्रि लक्षणवाले अन्तरिक्षमार्गमें पुनरावर्तन-क्रमसे भ्रमण करते हुए देवता-मनुष्यादिको अपने-अपने व्यापारोंमें व्यवस्थित करते हुए तथा सम्पूर्ण भुवनोंको देखते हुए विचरण करते हैं ॥ १७ ॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का चौथा अध्याय पूर्ण हुआ ॥ ४ ॥

— पञ्चमोऽध्यायः —

हरिः ॐ नमस्तेरुद्रमन्त्र्यवऽउतोतुऽइषवेनमः॥ बाहुबभ्यामुत-
तेनमः॥१॥ यातैरुद्रशिवा तुनूरघोराऽपापकाशिनी॥ तयानस्तुन्वा-
शन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि॥२॥ यामिषुङ्गिरिशन्तुहस्तेबिभर्ष्य-
स्तवे॥ शिवाङ्गिरिन्ताङ्कुरुमा हिंस्रीः पुरुषञ्जगत्॥३॥ शिवेनुवचसा-
त्त्वागिरिशाच्छावदामसि॥ अथानुः सर्वमिज्जगदयुक्ष्मसुमनाऽ-
असत्॥४॥

पाँचवाँ अध्याय

दुःख दूर करनेवाले (अथवा ज्ञान प्रदान करनेवाले) हे रुद्र! आपके क्रोधके लिये नमस्कार है, आपके बाणोंके लिये नमस्कार है और आपकी दोनों भुजाओंके लिये नमस्कार है ॥ १ ॥ कैलासपर रहकर संसारका कल्याण करनेवाले (अथवा वाणीमें स्थित होकर लोगोंको सुख देनेवाले या मेघमें स्थित होकर वृष्टिके द्वारा लोगोंको सुख देनेवाले) हे रुद्र! आपका जो मङ्गलदायक, सौम्य, केवल पुण्यप्रकाशक शरीर है, उस अनन्त सुखकारक शरीरसे हमारी ओर देखिये अर्थात् हमारी रक्षा कीजिये ॥ २ ॥ कैलासपर रहकर संसारका कल्याण करनेवाले तथा मेघोंमें स्थित होकर वृष्टिके द्वारा जगत्की रक्षा करनेवाले हे सर्वज्ञ रुद्र! शत्रुओंका नाश करनेके लिये जिस बाणको आप अपने हाथमें धारण करते हैं वह कल्याणकारक हो और आप मेरे पुत्र-पौत्र तथा गो, अश्व आदिका नाश मत कीजिये ॥ ३ ॥ हे कैलासपर शयन करनेवाले! आपको प्राप्त करनेके लिये हम मङ्गलमय वचनसे आपकी स्तुति करते हैं। हमारे समस्त पुत्र-पौत्र तथा पशु आदि जैसे भी नीरोग तथा निर्मल मनवाले हों, वैसा आप करें ॥ ४ ॥

अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्रथमोदैव्योभिषक् ।। अहीँश्चसर्वाञ्जुम्भयन्त्स-
 र्वीँश्चवातुधात्र्योऽधुराचीः परासुव ।। ५ ।। असौचस्ताम्प्रोऽअरुणऽउतबब्भुः
 सुमुङ्गलः ।। येचैनं रुद्राऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोऽवैषाँहेडऽ-
 ईमहे ।। ६ ।। असौषोऽवसर्प्यतिनीलग्रीवोविलोहितः ।। उतैनङ्गोपाऽअदृश्र-
 न्नदृश्रान्नुदहार्यः सदृष्टोमृडयाति नः ।। ७ ।। नमोऽस्तुनीलग्रीवायसहस्राक्षा-
 यमीदुषे ।। अथोषेऽअस्यसत्त्वानोऽहन्तेभ्योऽकरन्नमः ।। ८ ।। प्रमुञ्चधन्व-
 स्त्वमुभयोरात्वन्योर्ज्ज्याम् ।। याश्चर्चतेहस्तऽइषवः पराताभगवोवप ।। ९ ।।

अत्यधिक वन्दनशील, समस्त देवताओंमें मुख्य, देवगणोंके हितकारी तथा रोगोंका नाश करनेवाले रुद्र मुझसे सबसे अधिक बोलें, जिससे मैं सर्वश्रेष्ठ हो जाऊँ। हे रुद्र! समस्त सर्प, व्याघ्र आदि हिंसकोंका नाश करते हुए आप अधोगमन करानेवाली राक्षसियोंको हमसे दूर कर दें ॥ ५ ॥ उदयके समय ताम्रवर्ण (अत्यन्त रक्त), अस्तकालमें अरुणवर्ण (रक्त), अन्य समयमें वभ्रु (पिंगल)-वर्ण तथा शुभ मङ्गलोंवाला जो यह सूर्यरूप है, वह रुद्र ही है। किरणरूपमें ये जो हजारों रुद्र इन आदित्यके सभी ओर स्थित हैं, इनके क्रोधका हम अपनी भक्तिमय उपासनासे निवारण करते हैं ॥ ६ ॥ जिन्हें अज्ञानी गोप तथा जल भरनेवाली दासियाँ भी प्रत्यक्ष देख सकती हैं, विष धारण करनेसे जिनका कण्ठ नीलवर्णका हो गया है, तथापि विशेषतः रक्तवर्ण होकर जो सर्वदा उदय और अस्तको प्राप्त होकर गमन करते हैं, वे रविमण्डल-स्थित रुद्र हमें सुखी कर दें ॥ ७ ॥ नीलकण्ठ, सहस्रनेत्रवाले, इन्द्रस्वरूप और वृष्टि करनेवाले रुद्रके लिये मेरा नमस्कार है। उस रुद्रके जो भृत्य हैं, उनके लिये भी मैं नमस्कार करता हूँ ॥ ८ ॥ हे भगवन्! आप धनुषकी दोनों कोटियोंके मध्य स्थित प्रत्यञ्चाका त्याग कर दें और अपने हाथमें स्थित बाणोंको भी दूर फेंक दें ॥ ९ ॥

विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनोविशल्ल्योबाणवाँ२॥५उत॥ अनैशन्नस्युषाऽ-
 इषवऽआभुरस्यनिषङ्गुधिः॥१०॥ घातेहेतिर्मीढुष्टमुहस्तैबभूवतेधनुः॥
 तयास्मान्विश्वतुस्त्वमयुक्ष्मयापरिभुज॥११॥ परितेधन्वनोहेतिर-
 स्मान्ध्वणक्तुविश्वतः॥ अथोषऽइषुधिस्तवारेऽअस्मन्निधैहितम्॥१२॥
 अवृतत्यधनुष्ट्वं संहस्त्राक्षुशतैषुधे॥ निशीर्ष्यशुल्ल्यानाम्मुखाशिवोनः
 सुमनाभव॥१३॥ नमस्तुऽआयुधायानाततायधृष्णवै॥ उभाब्भ्यामुततेनमौ-
 बाहुब्भ्यान्तवधन्वने॥१४॥

जटाजूट धारण करनेवाले रुद्रका धनुष प्रत्यञ्चारहित रहे, तूणीरमें स्थित बाणोंके नोंकदार अग्रभाग नष्ट हो जायँ, इन रुद्रके जो बाण हैं, वे भी नष्ट हो जायँ तथा इनके खड्ग रखनेका कोश भी खड्गरहित हो जाय अर्थात् वे रुद्र हमारे प्रति सर्वथा शस्त्ररहित हो जायँ॥ १०॥ अत्यधिक वृष्टि करनेवाले हे रुद्र! आपके हाथमें जो धनुषरूप आयुध है, उस सुदृढ़ तथा अनुपद्रवकारी धनुषसे हमारी सब ओरसे रक्षा कीजिये॥ ११॥ हे रुद्र! आपका धनुषरूप आयुध सब ओरसे हमारा त्याग करे अर्थात् हमें न मारे और आपका जो बाणोंसे भरा तरकश है, उसे हमसे दूर रखिये॥ १२॥ सौ तूणीर और सहस्र नेत्र धारण करनेवाले हे रुद्र! धनुषकी प्रत्यञ्चा दूर करके और बाणोंके अग्र भागोंको तोड़कर आप हमारे प्रति शान्त और शुद्ध मनवाले हो जायँ॥ १३॥ हे रुद्र! शत्रुओंको मारनेमें प्रगल्भ और धनुषपर न चढ़ाये गये आपके बाणके लिये हमारा प्रणाम है। आपकी दोनों बाहुओं और धनुषके लिये भी हमारा प्रणाम है॥ १४॥

मानोमुहान्तमुतमानोऽअर्भकम्मानुऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम् ।। मानोवधीः
 पितरुम्मोतमातरुम्मानः प्रियास्तुन्वोरुद्वरीरिषः ।। १५ ।। मानस्तो-
 केतनयेमानुऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ।। मानोवीरान्द्रुद्रभा-
 मिनोवधीर्हविष्मन्तुः सदुमित्त्वाहवामहे ।। १६ ।। नमोहिरण्यबाहवेसेनाय्ये-
 दिशाञ्चपतयेनमोनमोवृक्षेभ्योहरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतयेनमो नमःश-
 ष्षिञ्जरायुत्तिषीमतेपथीनाम्पतयेनमो नमोहरिकेशायोपवीतिनैपुष्टानाम्पतये-
 नमोनमो बभ्रुशाय ।। १७ ।।

हे रुद्र! हमारे गुरु, पितृव्य आदि वृद्धजनोंको मत मारिये, हमारे बालककी हिंसा मत कीजिये, हमारे तरुणको मत मारिये, हमारे गर्भस्थ शिशुका नाश मत कीजिये, हमारे माता-पिताको मत मारिये तथा हमारे प्रिय पुत्र-पौत्र आदिकी हिंसा मत कीजिये ॥ १५ ॥ हे रुद्र! हमारे पुत्र-पौत्र आदिका विनाश मत कीजिये, हमारी आयुको नष्ट मत कीजिये, हमारी गौओंको मत मारिये, हमारे घोड़ोंका नाश मत कीजिये, हमारे क्रोधयुक्त वीरोंकी हिंसा मत कीजिये। हविसे युक्त होकर हम सब सदा आपका आवाहन करते हैं ॥ १६ ॥ भुजाओंमें सुवर्ण धारण करनेवाले सेनानायक रुद्रके लिये नमस्कार है, दिशाओंके रक्षक रुद्रके लिये नमस्कार है, पूर्णरूप हरे केशोंवाले वृक्षरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, जीवोंका पालन करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, कान्तिमान् बालतृणके समान पीत वर्णवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, मार्गोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है, नीलवर्ण-केशसे युक्त तथा मङ्गलके लिये यज्ञोपवीत धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, गुणोंसे परिपूर्ण मनुष्योंके स्वामी रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ १७ ॥

नमोबभ्रुशायव्याधिनेऽन्नानाम्पतयेनमोनमोभुवस्यहेत्त्यैजग-
 ताम्पतयेनमोनमोरुद्रायाततायिनेक्षेत्राणाम्पतयेनमोनमः सुतायाहन्त्यै-
 वनानाम्पतयेनमोनमोरोहिताय॥१८॥ नमोरोहितायस्थपतयेवृक्षाणा-
 म्पतयेनमोनमोभुवन्तयेवारिवस्कृतायौषधीनाम्पतयेनमोनमोमुन्त्रिणै-
 व्राणिजायुकक्षाणाम्पतयेनमोनमोऽुच्चैर्घोषायाक्क्रन्दयतेपत्तीना-
 म्पतयेनमोनमः कृत्स्नायुतया॥१९॥

कपिल (वर्णवाले अथवा वृषभपर आरूढ़ होनेवाले) तथा शत्रुओंको बेधनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, अन्नोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है, संसारके आयुधरूप (अथवा जगन्निवर्तक) रुद्रके लिये नमस्कार है, जगत्का पालन करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, उद्यत आयुधवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, देहोंका पालन करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, न मारनेवाले सारथिरूप रुद्रके लिये नमस्कार है तथा वनोंके रक्षक रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ १८ ॥ लोहितवर्णवाले तथा गृह आदिके निर्माता विश्वकर्मारूप रुद्रके लिये नमस्कार है, वृक्षोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है, भुवनका विस्तार करनेवाले तथा समृद्धिकारक रुद्रके लिये नमस्कार है, ओषधियोंके रक्षक रुद्रके लिये नमस्कार है, आलोचनकुशल व्यापारकर्तारूप रुद्रके लिये नमस्कार है, वनके लता-वृक्ष आदिके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है, युद्धमें उग्र शब्द करनेवाले तथा शत्रुओंको रूलानेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, [हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल आदि] सेनाओंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ १९ ॥

नमःकृत्स्नायुतयाधावतेसत्त्वनाम्पतयेनमोनमः सहमानायनिष्ठ्या-
 धिनऽआध्याधिनीनाम्पतयेनमोनमौनिषुङ्गिणैककुभायस्तेनानाम्पतये-
 नमोनमौनिचेरवैपरिचुरायारण्यनानाम्पतयेनमोनमोवञ्चते ॥२०॥
 नमोवञ्चतेपरिवञ्चते स्तायुनाम्पतयेनमोनमौनिषुङ्गिणाऽइषुधिमतेत-
 स्वकराणाम्पतयेनमोनमःसृक्कायिष्ठ्योजिघांꣳसद्भ्योमुष्णताम्प-
 तयेनमोनमौऽसिमद्भ्योनक्तुञ्चरद्भ्योविकृन्तानाम्पतयेनमः॥२१॥

कर्णपर्यन्त प्रत्यञ्चा खींचकर युद्धमें शीघ्रतापूर्वक दौड़नेवाले (अथवा सम्पूर्ण लाभकी प्राप्ति करानेवाले) रुद्रके लिये नमस्कार है, शरणागत प्राणियोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है, शत्रुओंका तिरस्कार करनेवाले तथा शत्रुओंको बेधनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सब प्रकारसे प्रहार करनेवाली शूर सेनाओंके रक्षक रुद्रके लिये नमस्कार है, खड्ग चलानेवाले महान् रुद्रके लिये नमस्कार है, गुप्त चोरोंके रक्षक रुद्रके लिये नमस्कार है, अपहारकी बुद्धिसे निरन्तर गतिशील तथा हरणकी इच्छासे आपण (बाजार) - वाटिका आदिमें विचरण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है तथा वनोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ २० ॥ वञ्चना करनेवाले तथा अपने स्वामीको विश्वास दिलाकर धन हरण करके उसे ठगनेवाले रुद्ररूपके लिये नमस्कार है, गुप्त धन चुरानेवालोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है, बाण तथा तूणीर धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, प्रकटरूपमें चोरी करनेवालोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है, वज्र धारण करनेवाले तथा शत्रुओंको मारनेकी इच्छावाले रुद्रके लिये नमस्कार है, खेतोंमें धान्य आदि चुरानेवालोंके रक्षक रुद्रके लिये नमस्कार है, प्राणियोंपर घात करनेके लिये खड्ग धारण कर रात्रिमें विचरण करनेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है तथा दूसरोंको काटकर उनका धन हरण करनेवालोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ २१ ॥

नमऽउष्णीषिणैगिरिचुरायकुलुञ्जानाम्पतयेनमोनमऽइषुमद्भ्यो ध-
 ङ्वायिभ्यश्श्चवोनमोनमऽआतङ्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्श्चवोनमो-
 नमऽआयच्छुद्भ्योस्यद्भ्यश्श्चवोनमोनमौविसृजद्भ्यः ॥२२॥ नमौवि-
 सृजद्भ्योविद्ध्यद्भ्यश्श्चवोनमोनमःस्वपद्भ्योजाग्रद्भ्यश्श्चवो-
 नमोनमःशयानेभ्युऽआसीनेभ्यश्श्चवोनमोनमस्तिष्ठद्भ्योधावद्-
 भ्यश्श्चवोनमोनमःसुभाभ्यः ॥२३॥

सिरपर पगड़ी धारण करके पर्वतादि दुर्गम स्थानोंमें विचरनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, छलपूर्वक दूसरोंके क्षेत्र, गृह आदिका हरण करनेवालोंके पालक रुद्ररूपके लिये नमस्कार है, लोगोंको भयभीत करनेके लिये बाण धारण करनेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, धनुष धारण करनेवाले आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, धनुषपर प्रत्यञ्चा चढ़ानेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, धनुषपर बाणका संधान करनेवाले आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, धनुषको भलीभाँति खींचनेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, बाणोंको सम्यक् छोड़नेवाले आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है ॥ २२ ॥ पापियोंके दमनके लिये बाण चलानेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, शत्रुओंको बेधनेवाले आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, स्वप्नावस्थाका अनुभव करनेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, जाग्रत् अवस्थावाले आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, सुषुप्ति अवस्थावाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, बैठे हुए आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, स्थित रहनेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, वेगवान् गतिवाले आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है ॥ २३ ॥

नमः सुभाभ्यः सुभापतिभ्यश्श्चवोनमोनमोऽश्श्वेभ्योऽश्श्व-
 पतिभ्यश्श्चवोनमोनमऽआद्याधिनीभ्योद्विविद्ध्यन्तीभ्यश्श्च-
 वोनमोनमुऽउगणाभ्यस्तृहुतीभ्यश्श्चवोनमोनमोगुणेभ्यः ॥२४॥
 नमोगुणेभ्योगुणपतिभ्यश्श्चवो नमोनमोव्रातैभ्योव्रातपतिभ्यश्श्चवो-
 नमोनमोगृत्सैभ्योगृत्सपतिभ्यश्श्चवोनमोनमोविरूपेभ्योविरूवरूपे-
 भ्यश्श्चवोनमोनमुहं सेनाभ्यः ॥२५॥ नमुहं सेनाभ्यः सेनानिभ्य-
 श्श्चवोनमोनमौरथिभ्योऽअरथेभ्यश्श्चवोनमोनमः क्षुत्तृभ्यः सङ्गहीतृ-
 भ्यश्श्चवोनमोनमोमुहद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्श्चवोनमः ॥२६॥

सभारूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, सभापतिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, अश्वरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, अश्वपतिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, सब प्रकारसे बेधन करनेवाले देवसेनारूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, विशेषरूपसे बेधन करनेवाले देवसेनारूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, उत्कृष्ट भृत्यसमूहोंवाली ब्राह्मी आदि मातास्वरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है और मारनेमें समर्थ दुर्गा आदि मातास्वरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है ॥ २४ ॥ देवानुचर भूतगणरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, भूतगणोंके अधिपतिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, भिन्न-भिन्न जातिसमूहरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, विभिन्न जातिसमूहोंके अधिपतिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, मेधावी ब्रह्मजिज्ञासुरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, मेधावी ब्रह्मजिज्ञासुओंके अधिपतिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, निकृष्ट रूपवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, नानाविध रूपोंवाले विश्वरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है ॥ २५ ॥ सेनारूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, सेनापतिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, रथीरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, रथविहीन आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, रथोंके अधिष्ठातारूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, सारथिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, जाति तथा विद्या आदिसे उत्कृष्ट प्राणिरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, प्रमाण आदिसे अल्परूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है ॥ २६ ॥

नमुस्तक्ष्ण्योरथकारेभ्यश्श्चवोनमोनमुः कुलालेभ्यः कुम्भारिभ्य-
 श्श्चवोनमोनमौनिषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्श्चवोनमोनमः श्वनिभ्यो-
 मृग्युभ्यश्श्चवोनमोनमुः श्वभ्यः ॥२७॥ नमुः श्वभ्यः श्वपति-
 भ्यश्श्चवो नमोनमौभुवायचरुद्रायचुनमः शर्वायचपशुपतयेचुनमो-
 नीलग्रीवायचशितिकण्ठायचुनमः कपर्दिनैः ॥२८॥ नमः कपर्दिनैश्चव्युप्त-
 केशायचु नमः सहस्राक्षायचशतधन्वनेचुनमौगिरिश्यायचशिपिविष्टाय-
 चुनमौमीढुष्टमायुचेषुमते च नमौ ह्रस्वाय ॥२९॥

शिल्पकाररूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, रथनिर्मातारूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, कुम्भकाररूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, लौहकाररूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, वन-पर्वतादिमें विचरनेवाले निषादरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, पक्षियोंको मारनेवाले पुल्कसादिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, श्वानोंके गलेमें बँधी रस्सी धारण करनेवाले रुद्ररूपोंके लिये नमस्कार है और मृगोंकी कामना करनेवाले व्याधरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है ॥ २७ ॥ श्वानरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, श्वानोंके स्वामीरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, प्राणियोंके उत्पत्तिकर्ता रुद्रके लिये नमस्कार है, दुःखोंके विनाशक रुद्रके लिये नमस्कार है, पापोंका नाश करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, पशुओंके रक्षक रुद्रके लिये नमस्कार है, हलाहलपानके फलस्वरूप नीलवर्णके कण्ठवाले रुद्रके लिये नमस्कार है और श्वेत कण्ठवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ २८ ॥ जटाजूट धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, मुण्डित केशवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, हजारों नेत्रवाले इन्द्ररूप रुद्रके लिये नमस्कार है, सैकड़ों धनुष धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, कैलास पर्वतपर शयन करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सभी प्राणियोंके अन्तर्यामी विष्णुरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, अत्यधिक सेचन करनेवाले मेघरूप रुद्रके लिये नमस्कार है और बाण धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ २९ ॥

नमोऽहुस्वायचवामुनायचनमोऽबृहुतेचवर्षीयसेचनमोऽबृद्धायचसुवृधे-
 चनमोऽग्न्यायचप्रथुमायचनमोऽआशवे ॥३०॥ नमोऽआशवेचाजिरायचनमोऽ
 शीघ्र्यायचशीर्ष्यायचनमोऽऊर्म्यायचावस्वत्यायचनमोऽनादेयाय-
 चद्वीप्यायच ॥३१॥ नमोऽज्येष्ठायचकनिष्ठायचनमोऽपूर्वजाय-
 चापरजायचनमोऽमध्यमायचापगुल्भायचनमोऽजघन्यायचबुध्यायचनमोऽ
 सोम्याय ॥३२॥

अल्प देहवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, संकुचित अङ्गोंवाले वामनरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, बृहत्काय रुद्रके लिये नमस्कार है, अत्यन्त वृद्धावस्थावाले रुद्रके लिये नमस्कार है, अधिक आयुवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, विद्याविनयादिगुणोंसे सम्पन्न विद्वानोंके साथीरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, जगत्के आदिभूत रुद्रके लिये नमस्कार है और सर्वत्र मुख्यस्वरूप रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ३० ॥ जगद्व्यापी रुद्रके लिये नमस्कार है, गतिशील रुद्रके लिये नमस्कार है, वेगवाली वस्तुओंमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है, जलप्रवाहमें विद्यमान आत्मश्लाघी रुद्रके लिये नमस्कार है, जलतरंगोंमें व्याप्त रुद्रके लिये नमस्कार है, स्थिर जलरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, नदियोंमें व्याप्त रुद्रके लिये नमस्कार है और द्वीपोंमें व्याप्त रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ३१ ॥ अति प्रशस्य ज्येष्ठरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, अत्यन्त युवा (अथवा कनिष्ठ)-रूप रुद्रके लिये नमस्कार है, जगत्के आदिमें हिरण्यगर्भरूपसे प्रादुर्भूत हुए रुद्रके लिये नमस्कार है, प्रलयके समय कालाग्रिके सदृश रूप धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सृष्टि और प्रलयके मध्यमें देव-नर-तिर्यगादिरूपसे उत्पन्न होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, अव्युत्पन्नेन्द्रिय रुद्रके लिये नमस्कार है अथवा विनीत रुद्रके लिये नमस्कार है, (गाय आदिके) जघनप्रदेशसे उत्पन्न होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है और वृक्षादिकोंके मूलमें निवास करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ३२ ॥

नमः सोढ्यायचप्रतिसुर्ध्यायचनमोषाम्यायचक्षेम्यायचनमः श्लो-
 क्क्यायचावसान्यायचनमऽउर्ध्व्यायचखल्ल्यायचनमोवन्त्याय ॥३३॥
 नमोवन्त्यायचकक्ष्यायचनमः श्रुवायचप्रतिश्रुवायचनमऽआशु-
 षेणायचाशुरथायचनमः शूरायचावभेदिनेचनमोबिलिम्मने ॥३४॥ नमो-
 बिलिम्मनेचकवचिनेचनमोवृर्मिणे चव्रुथिनेचनमः श्रुतायचश्रुत-
 सेनायचनमो दुन्दुभ्यायचाहन्यायचनमोधृष्णवे ॥३५॥

गन्धर्वनगरमें होनेवाले (अथवा पुण्य और पापोंसे युक्त मनुष्यलोकमें उत्पन्न होनेवाले) रुद्रके लिये नमस्कार है, प्रत्यभिचारमें रहनेवाले (अथवा विवाहके समय हस्तसूत्रमें उत्पन्न होनेवाले) रुद्रके लिये नमस्कार है, पापियोंको नरककी वेदना देनेवाले यमके अन्तर्यामी रुद्रके लिये नमस्कार है, कुशलकर्ममें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, वेदके मन्त्र (अथवा यज्ञ)-द्वारा उत्पन्न हुए रुद्रके लिये नमस्कार है, वेदान्तके तात्पर्यविषयीभूत रुद्रके लिये नमस्कार है, सर्व सस्यसम्पन्न पृथ्वीसे उत्पन्न होनेवाले धान्यरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, धान्यविवेचन-देश (खलिहान)-में उत्पन्न हुए रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ३३ ॥ वनोंमें वृक्ष-लतादिरूप रुद्र अथवा वरुणस्वरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, शुष्क तृण अथवा गुल्मोंमें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है; प्रतिध्वनिस्वरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, शीघ्रगामी सेनावाले रुद्रके लिये नमस्कार है, शीघ्रगामी रथवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, युद्धमें शूरता प्रदर्शित करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है तथा शत्रुओंको विदीर्ण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ३४ ॥ शिरस्त्राण धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, कपास-निर्मित देहरक्षक (अंगरखा) धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, लोहेका बख्तर धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, गुंबदयुक्त रथवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, संसारमें प्रसिद्ध रुद्रके लिये नमस्कार है, प्रसिद्ध सेनावाले रुद्रके लिये नमस्कार है, दुन्दुभी (भेरी)-में विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है, भेरी आदि वाद्योंको बजानेमें प्रयुक्त होनेवाले दण्ड आदिमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ३५ ॥

नमोऽधृष्णावेचप्रमृशायचनमोनिषङ्गिणेचेषुधिमतेचनमस्तीक्ष्णेषवेचायु-
 धिनेचनमः स्वायुधायचसुधन्वनेच ।। ३६ ।। नमः स्त्रुत्यायचपत्थ्यायच
 नमः काट्यायचनीप्यायचनमः कुल्ल्यायचसरस्यायचनमोना-
 देयायचवैशन्तायचनमः कूप्याय ।। ३७ ।। नमः कूप्यायचावट्यायचन-
 मोव्रीद्ध्यायचातुप्यायचनमोमेग्ध्यायचविद्ध्युत्यायचनमोवृष्ण्याय-
 चावृष्ण्यायचनमोव्रात्याय ।। ३८ ।।

प्रगल्भ स्वभाववाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सत्-असत्का विवेकपूर्वक विचार करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, खड्ग धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, तूणीर (तरकश) धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, तीक्ष्ण बाणोंवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, नानाविध आयुधोंको धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, उत्तम त्रिशूलरूप आयुध धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है और श्रेष्ठ पिनाक धनुष धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ३६ ॥ क्षुद्रमार्गमें विद्यमान रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, रथ-गज-अश्व आदिके योग्य विस्तृत मार्गमें विद्यमान रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, दुर्गम मार्गोंमें स्थित रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, जहाँ झरनोंका जल गिरता है, उस भूप्रदेशमें उत्पन्न हुए अथवा पर्वतोंके अधोभागमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है, नहरके मार्गमें स्थित अथवा शरीरोंमें अन्तर्यामी रूपसे विराजमान रुद्रके लिये नमस्कार है, सरोवरमें उत्पन्न होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सरितादिकोंमें विद्यमान जलरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, अल्प सरोवरमें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ३७ ॥ कूपोंमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है, गर्त-स्थानोंमें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, शरद्-ऋतुके बादलों अथवा चन्द्र-नक्षत्रादि-मण्डलमें विद्यमान विशुद्ध स्वभाववाले रुद्रके लिये नमस्कार है, आतप (धूप)-में उत्पन्न होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, मेघोंमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है, विद्युत्में होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, वृष्टिमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है तथा अवर्षणमें स्थित रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ३८ ॥

नमोवात्स्यायचुरेष्म्यायचनमौवास्तुध्यायचवास्तुपायचनमुः सोमाय-
 चरुद्रायचनमस्ताम्प्रायचारुणायचनमःशुङ्गवे ॥३९॥ नमःशुङ्गवेचपशु-
 पतयेचनमऽउग्रायचभीमायचनमौऽग्रेवुधायचदूरेवुधायचनमौहुन्त्रे-
 चुहनीयसेचनमौवृक्षेभ्योहरिकेशेभ्योनमस्तुराय ॥४०॥ नमः शम्भु-
 वायचमयोभुवायचनमः शङ्करायचमयस्करायचनमःशिवायचशिवत-
 रायच ॥४१॥

वायुमें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, प्रलयकालमें विद्यमान रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, गृह-भूमिमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है अथवा सर्वशरीरवासी रुद्रके लिये नमस्कार है, गृहभूमिके रक्षकरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, चन्द्रमामें स्थित अथवा ब्रह्मविद्या महाशक्ति उमासहित विराजमान सदाशिव रुद्रके लिये नमस्कार है, सर्वविध अनिष्टके विनाशक रुद्रके लिये नमस्कार है, उदित होनेवाले सूर्यके रूपमें ताम्रवर्णके रुद्रके लिये नमस्कार है और उदयके पश्चात् अरुण (कुछ-कुछ रक्त) वर्णवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ३९ ॥ भक्तोंको सुखकी प्राप्ति करानेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, जीवोंके अधिपतिस्वरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, संहार-कालमें प्रचण्ड स्वरूपवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, अपने भयानकरूपसे शत्रुओंको भयभीत करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सामने खड़े होकर वध करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, दूर स्थित रहकर संहार करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, हनन करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, प्रलयकालमें सर्वहन्तारूप रुद्रके लिये नमस्कार है, हरितवर्णके पत्ररूप केशोंवाले कल्पतरुस्वरूप रुद्रके लिये नमस्कार है और ज्ञानोपदेशके द्वारा अधिकारी जनोंको तारनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ४० ॥ सुखके उत्पत्तिस्थानरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, भोग तथा मोक्षका सुख प्रदान करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, लौकिक सुख देनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, वेदान्त-शास्त्रमें होनेवाले ब्रह्मात्मैक्य साक्षात्कारस्वरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, कल्याणरूप निष्पाप रुद्रके लिये नमस्कार है और अपने भक्तोंको भी निष्पाप बनाकर कल्याणरूप कर देनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ४१ ॥

नमः पाष्णीयचावाष्णीयचनमः प्रतरणायचोत्तरणायचनम-
 स्तीर्थायचकूल्यायचनमः शष्प्यायच फेन्यायचनमःसिकुत्त्याय ॥४२॥
 नमःसिकुत्त्यायचप्रवाह्व्यायचनमःकिङ्शिलायचक्षयुणायच-
 नमःकपर्दिनैचपुलस्तयेचनमऽइरिण्ण्यायचप्रपुत्थ्यायचनमोव्र-
 ज्ज्याय ॥४३॥ नमोव्रज्ज्यायचगोष्ठ्यायचनमस्तल्प्यायचगेह्व्यायचन-
 मोह्रदुष्ट्यायचनिवेष्यायचनमःकाट्यायचगह्वरेष्ठ्यायचनमःशु-
 ष्याय ॥४४॥

संसारसमुद्रके अपर तीरपर रहनेवाले अथवा संसारातीत जीवन्मुक्त विष्णुरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, संसारव्यापी रुद्रके लिये नमस्कार है, दुःख-पापादिसे प्रकृष्टरूपसे तारनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, उत्कृष्ट ब्रह्म-साक्षात्कार कराकर संसारसे तारनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, तीर्थस्थलोंमें प्रतिष्ठित रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, गङ्गा आदि नदियोंके तटपर विद्यमान रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, गङ्गा आदि नदियोंके तटपर उत्पन्न रहनेवाले कुशाङ्कुरादि बालतृणरूप रुद्रके लिये नमस्कार है और जलके विकारस्वरूप फेनमें विद्यमान रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ४२ ॥ नदियोंकी बालुकाओंमें होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, नदी आदिके प्रवाहमें होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, क्षुद्र पाषाणोंवाले प्रदेशके रूपमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है, स्थिर जलसे परिपूर्ण प्रदेशरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, जटामुकुटधारी रुद्रके लिये नमस्कार है, शुभाशुभ देखनेकी इच्छासे सदा सामने खड़े रहनेवाले अथवा सर्वान्तर्यामीस्वरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, ऊसरभूमिरूप रुद्रके लिये नमस्कार है और अनेक जनोंसे संसेवित मार्गमें होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ४३ ॥ गोसमूहमें विद्यमान अथवा व्रजमें गोपेश्वरके रूपमें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, गोशालाओंमें रहनेवाले गोष्ठ्यरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, शय्यामें विद्यमान रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, गृहमें विद्यमान रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, हृदयमें रहनेवाले जीवरूपी रुद्रके लिये नमस्कार है, जलके भँवरमें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, दुर्ग-अरण्य आदि स्थानोंमें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है और विषम गिरिगुहा आदि अथवा गम्भीर जलमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ४४ ॥

नमःशुष्क्यायचहरित्यायचनमःपा०सुध्यायचरजुस्यायचनमोलो-
 प्यायचोलुप्यायचनमऽऊर्ध्व्यायचसूर्ध्व्यायचनमःपुर्णाय॥४५॥
 नमःपुर्णायचपण्णशुदायचनमऽउद्गुरमाणायचाभिघ्नतेचनमऽआखि-
 दुतेचप्रखिदुतेचनमऽइषुकृद्भ्योऽधनुष्कृद्भ्यश्चवोनमोनमौवःकिरि-
 केभ्योदेवाना०हृदयेभ्योनमोविचित्रत्केभ्योनमोविक्षिण्त्केभ्यो-
 नमऽआनिर्हृतेभ्यः॥४६॥

काष्ठ आदि शुष्क पदार्थोंमें भी सत्तारूपसे विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है, आर्द्र काष्ठ आदिमें सत्तारूपसे विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है, धूलि आदिमें विराजमान पांसव्यरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, रजोगुण अथवा परागमें विद्यमान रजस्यरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, सम्पूर्ण इन्द्रियोंके व्यापारकी शान्ति होनेपर भी अथवा प्रलयमें भी साक्षी बनकर रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, बल्वजादि तृणविशेषोंमें होनेवाले उलप्यरूपी रुद्रके लिये नमस्कार है, बडवानलमें विराजमान रुद्रके लिये नमस्कार है और प्रलयाग्निमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ४५ ॥ वृक्षोंके पत्ररूप रुद्रके लिये नमस्कार है, वृक्ष-पर्णोंके स्वतः शीर्ण होनेके काल—वसन्त-ऋतुरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, पुरुषार्थपरायण रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सब ओर शत्रुओंका हनन करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सब ओरसे अभक्तोंको दीन-दुःखी बना देनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, अपने भक्तोंके दुःखोंसे दुःखी होनेके कारण दयासे आर्द्रहृदय होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, बाणोंका निर्माण करनेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, धनुषोंका निर्माण करनेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, वृष्टि आदिके द्वारा जगत्का पालन करनेवाले देवताओंके हृदयभूत अग्नि-वायु-आदित्यरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, धर्मात्मा तथा पापियोंका भेद करनेवाले अग्नि आदि रुद्रोंके लिये नमस्कार है, भक्तोंके पाप-रोग-अमङ्गलको दूर करनेवाले तथा पाप-पुण्यके साक्षीस्वरूप अग्नि आदि रुद्रोंके लिये नमस्कार है और सृष्टिके आदिमें मुख्यतया इन लोकोंसे निर्गत हुए अग्नि-वायु-सूर्यरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है ॥ ४६ ॥

द्रापेऽअन्धसस्पतेदरिद्रुनीललोहित ।। आसाम्प्रजानामेषाम्प्रशुनाम्मा-
 भेम्मारोद्धोचनुःकिञ्चुनाममत् ॥४७॥ इमारुद्रायतुवसैकपर्दिनैक्षुयद्दीरा-
 युप्रभरामहेमतीः ॥ अथाशमसद्विपदेचतुष्पदेविश्वम्पुष्टद्विग्रामेऽअस्मि-
 न्ननातुरम् ॥४८॥ यातैरुद्रशिवातुनूःशिवाविश्ववाहाभेषुजी ॥ शिवारुत-
 स्यभेषुजीतयानोमृडजीवसै ॥४९॥ परिनोरुद्रस्यहेतिर्वृणक्तुपरित्वेष-
 स्यदुर्मतिरघायोः ॥ अवस्थिरामुघवदब्ध्यस्तनुष्वमीद्वस्तोकायुतन-
 यायमृड ॥५०॥

हे द्रापे (दुराचारियोंको कुत्सित गति प्राप्त करानेवाले)! हे अन्धसस्पते (सोमपालक)! हे दरिद्र (निष्परिग्रह)! हे नीललोहित! हमारी पुत्रादि प्रजाओं तथा गो आदि पशुओंको भयभीत मत कीजिये, उन्हें नष्ट मत कीजिये और उन्हें किसी भी प्रकारके रोगसे ग्रसित मत कीजिये ॥ ४७ ॥ जिस प्रकारसे मेरे पुत्रादि तथा गौ आदि पशुओंको कल्याणकी प्राप्ति हो तथा इस ग्राममें सम्पूर्ण प्राणी पुष्ट तथा उपद्रवरहित हों, इसके निमित्त हम अपनी इन बुद्धियोंको महाबली, जटाजूटधारी तथा शूरवीरोंके निवासभूत रुद्रके लिये समर्पित करते हैं ॥ ४८ ॥ हे रुद्र! आपका जो शान्त, निरन्तर कल्याणकारक, संसारकी व्याधि निवृत्त करनेवाला तथा शारीरिक व्याधि दूर करनेका परम औषधिरूप शरीर है, उससे हमारे जीवनको सुखी कीजिये ॥ ४९ ॥ रुद्रके आयुध हमारा परित्याग करें और क्रुद्ध हुए द्वेषी पुरुषोंकी दुर्बुद्धि हमलोगोंको वर्जित कर दे (अर्थात् उनसे हमलोगोंको किसी प्रकारकी पीड़ा न होने पावे)। अभिलषित वस्तुओंकी वृष्टि करनेवाले हे रुद्र! आप अपने धनुषको प्रत्यञ्चारहित करके यजमान-पुरुषोंके भयको दूर कीजिये और उनके पुत्र-पौत्रोंको सुखी बनाइये ॥ ५० ॥

मीढुष्टमशिवतमशिवोनःसुमनाभव ॥ पुरमेवृक्षऽआयुधन्निधायकृत्ति-
 वसानुआचरुपिनाकुम्बिब्भुदागहि ॥५१॥ विकिरिद्रुविलोहितुनमस्तेऽ-
 अस्तुभगवः ॥ यास्तेसहस्रंहेतयोऽन्यमुस्मन्निर्वपन्तुताः ॥५२॥
 सहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्तर्वहेतयः ॥ तासामीशानोभगवः पराचीना-
 मुखाकृधि ॥५३॥ असङ्ख्यातासहस्राणिषेरुद्राऽअधिभूम्याम् ॥
 तेषांॐसहस्रयोजुनेऽवधन्वानितन्मसि ॥५४॥ अस्मिन्महत्पृण्वे-
 ऽन्तरिक्षेभुवाऽअधि ॥ तेषांॐसहस्रयोजुनेऽवधन्वानितन्मसि ॥५५॥

अभीष्ट फल और कल्याणोंकी अत्यधिक वृष्टि करनेवाले हे रुद्र! आप हमपर प्रसन्न रहें, अपने त्रिशूल आदि आयुधोंको कहीं दूरस्थित वृक्षोंपर रख दीजिये, गजचर्मका परिधान धारण करके तप कीजिये और केवल शोभाके लिये धनुष धारण करके आइये ॥ ५१ ॥ विविध प्रकारके उपद्रवोंका विनाश करनेवाले तथा शुद्धस्वरूपवाले हे रुद्र! आपको हमारा प्रणाम है, आपके जो असंख्य आयुध हैं, वे हमसे अतिरिक्त दूसरोंपर जाकर गिरें ॥ ५२ ॥ गुण तथा ऐश्वर्योंसे सम्पन्न हे जगत्पति रुद्र! आपके हाथोंमें हजारों प्रकारके जो असंख्य आयुध हैं, उनके अग्रभागों (मुखों)-को हमसे विपरीत दिशाओंकी ओर कर दीजिये (अर्थात् हमपर आयुधोंका प्रयोग मत कीजिये) ॥ ५३ ॥ पृथ्वीपर जो असंख्य रुद्र निवास करते हैं, उनके असंख्य धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोसोंके पार जो मार्ग है, उसपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ५४ ॥ मेघमण्डलसे भरे हुए इस महान् अन्तरिक्षमें जो रुद्र रहते हैं, उनके असंख्य धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोसोंके पारस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ५५ ॥

नीलग्रीवाःशितिकण्ठादिवद्वरुद्राऽउपश्रिताः ॥ तेषांॐसहस्रयो-
 जुनेऽवुधन्वानितन्मसि ॥५६॥ नीलग्रीवाःशितिकण्ठाःशुर्वाऽअधःक्ष-
 माचुराः ॥ तेषांॐसहस्रयोजुनेऽवुधन्वानितन्मसि ॥५७॥ येवृक्षेषुश-
 ष्षिञ्जरांनीलग्रीवाविलोहिताः ॥ तेषांॐसहस्रयोजुनेऽवुधन्वानित-
 न्मसि ॥५८॥ येभूतानामधिपतयोविशिखासःकपर्दिनः ॥ तेषांॐसहस्र-
 योजुनेऽवुधन्वानितन्मसि ॥५९॥ येपथाम्पथिरक्षयऽऐलबृदाऽआयुर्धुधः ॥
 तेषांॐसहस्रयोजुनेऽवुधन्वानितन्मसि ॥६०॥

जिनके कण्ठका कुछ भाग नीलवर्णका है और कुछ भाग श्वेतवर्णका है तथा जो द्युलोकमें निवास करते हैं, उन रुद्रोंके असंख्य धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोस दूरस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ५६ ॥ कुछ भागमें नीलवर्ण और कुछ भागमें शुक्लवर्णके कण्ठवाले तथा भूमिके अधोभागमें स्थित पाताललोकमें निवास करनेवाले रुद्रोंके असंख्य धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोस दूरस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ५७ ॥ बाल तृणके समान हरितवर्णके तथा कुछ भागमें नीलवर्ण एवं कुछ भागमें शुक्लवर्णके कण्ठवाले, जो रुधिररहित रुद्र (तेजोमय शरीर रहनेसे उन शरीरोंमें रक्त और मांस नहीं रहता) हैं, वे अश्वत्थ आदिके वृक्षोंपर रहते हैं। उन रुद्रोंके धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोसोंके पारस्थित मार्गपर डाल देते हैं ॥ ५८ ॥ जिनके सिरपर केश नहीं हैं, जिन्होंने जटाजूट धारण कर रखा है और जो पिशाचोंके अधिपति हैं, उन रुद्रोंके धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोसोंके पारस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ५९ ॥ अन्न देकर प्राणियोंका पोषण करनेवाले, आजीवन युद्ध करनेवाले, लौकिक-वैदिक मार्गका रक्षण करनेवाले तथा अधिपति कहलानेवाले जो रुद्र हैं, उनके धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोसोंके पारस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ६० ॥

येतीर्थानिप्रचरन्तिसुकाहस्तानिषुङ्गिणः॥ तेषांॐसहस्रयोजुनेऽवुध-
 न्नानितन्मसि॥६१॥ येनैषुव्विविदध्यन्तिपात्रेषुपिबतोजनान्॥ तेषांॐ-
 सहस्रयोजुनेऽवुधन्नानितन्मसि॥६२॥ यऽणुतावन्तश्शचभूयांॐसश्शच-
 दिशोरुद्रावितस्थिरे॥ तेषांॐसहस्रयोजुनेऽवुधन्नानितन्मसि॥६३॥
 नमोऽस्तुरुद्रेभ्योयेदिविषेषांवृषमिषवः॥ तेभ्योदशुप्राचीर्दशदक्षिणा-
 दशपुतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः॥ तेभ्योनमोऽस्तुतेनोऽवन्तुतेनो-
 मृडयन्तुतेषन्दिषम्मोयश्शचनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भैददध्मः॥६४॥

वज्र और खड्ग आदि आयुधोंको हाथमें धारण कर जो रुद्र तीर्थोंपर जाते हैं, उनके धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोसोंके पारस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ६१ ॥ खाये जानेवाले अन्नोंमें स्थित जो रुद्र अन्नभोक्ता प्राणियोंको पीड़ित करते हैं (अर्थात् धातुवैषम्यके द्वारा उनमें रोग उत्पन्न करते हैं) और पात्रोंमें स्थित दुग्ध आदिमें विराजमान जो रुद्र, उनका पान करनेवाले लोगोंको (व्याधि आदिके द्वारा) कष्ट देते हैं, उनके धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोस दूरस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ६२ ॥ दसों दिशाओंमें व्याप्त रहनेवाले जो अनेक रुद्र हैं, उनके धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोस दूरस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ६३ ॥ जो रुद्र द्युलोकमें विद्यमान हैं तथा जिन रुद्रोंके बाण वृष्टिरूप हैं, उन रुद्रोंके लिये नमस्कार है। उन रुद्रोंके लिये पूर्व दिशाकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, दक्षिणकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, पश्चिमकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, उत्तरकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ और ऊपरकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ (अर्थात् हाथ जोड़कर सभी दिशाओंमें उन रुद्रोंके लिये प्रणाम करता हूँ)। वे रुद्र हमारी रक्षा करें और वे हमें सुखी बनायें। वे रुद्र जिस मनुष्यसे द्वेष करते हैं, हमलोग जिससे द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करता है, उस पुरुषको हमलोग उन रुद्रोंके भयंकर दाँतोंवाले मुखमें डालते हैं (अर्थात् वे रुद्र हमसे द्वेष करनेवाले मनुष्यका भक्षण कर जायँ) ॥ ६४ ॥

नमोऽस्तुरुद्रेभ्योषेऽन्तरिक्षेषांवातुऽइषवः॥ तेभ्योदशप्राचीर्दश-
 दक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः॥ तेभ्योनमोऽस्तुतेनोऽवन्तुते-
 नोमृडयन्तुतेयन्दिष्मोषश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः ॥६५॥

नमोऽस्तुरुद्रेभ्योषेपृथिव्यांव्येषामन्नमिषवः॥ तेभ्योदशप्राचीर्दश-
 दक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः॥ तेभ्योनमोऽस्तुतेनोऽवन्तुते-
 नोमृडयन्तुतेयन्दिष्मोषश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः॥६६॥

॥ इति रुद्रपाठे पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

जो रुद्र अन्तरिक्षमें विद्यमान हैं तथा जिन रुद्रोंके बाण पवनरूप हैं, उन रुद्रोंके लिये नमस्कार है। उन रुद्रोंके लिये पूर्व दिशाकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, दक्षिणकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, पश्चिमकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, उत्तरकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ और ऊपरकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ (अर्थात् हाथ जोड़कर सभी दिशाओंमें उन रुद्रोंके लिये प्रणाम करता हूँ)। वे रुद्र हमारी रक्षा करें और वे हमें सुखी बनायें। वे रुद्र जिस मनुष्यसे द्वेष करते हैं, हमलोग जिससे द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करता है, उस पुरुषको हमलोग उन रुद्रोंके भयंकर दाँतोंवाले मुखमें डालते हैं (अर्थात् वे रुद्र हमसे द्वेष करनेवाले मनुष्यका भक्षण कर जायँ) ॥ ६५ ॥ जो रुद्र पृथ्वीलोकमें स्थित हैं तथा जिनके बाण अन्नरूप हैं, उन रुद्रोंके लिये नमस्कार है। उन रुद्रोंके लिये पूर्व दिशाकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, दक्षिणकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, पश्चिमकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, उत्तरकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ और ऊपरकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ (अर्थात् हाथ जोड़कर सभी दिशाओंमें उन रुद्रोंके लिये प्रणाम करता हूँ)। वे रुद्र हमारी रक्षा करें और वे हमें सुखी बनावें। वे रुद्र जिस मनुष्यसे द्वेष करते हैं, हमलोग जिससे द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करता है, उस पुरुषको हमलोग उन रुद्रोंके भयंकर दाँतोंवाले मुखमें डालते हैं (अर्थात् वे रुद्र हमसे द्वेष करनेवाले मनुष्यका भक्षण कर जायँ) ॥ ६६ ॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का पाँचवाँ अध्याय पूर्ण हुआ ॥ ५ ॥

———— षष्ठोऽध्यायः ————

हरिः ॐ वृयः सोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः ।। प्रजावन्तः सचेमहि ।। १ ।।
एषतेरुद्रभागः सहस्वस्त्राऽम्बिकया तञ्जुषस्वस्वाहैषतेरुद्रभागऽआखुस्तेपशुः
।। २ ।। अवरुद्रमदीमह्यवदेवन्र्यम्बकम् ।। यथानोवस्यसुस्करद्यथानुः श्रेय-
सुस्करद्यथानोव्यवसाययात् ।। ३ ।। भेषजमसि भेषजङ्गवेऽश्वायुपुरुषाय-
भेषजम् ।। सुखम्पेयायमेष्यै ।। ४ ।।

छठा अध्याय

हे सोमदेव ! पुत्र-पौत्रादिसे सम्पन्न हम यजमान यज्ञ और व्रतोंमें आपके स्वरूपमें चित्त लगाकर सेवनीय वस्तुओंका सेवन करें ॥ १ ॥ हे रुद्र ! हमारे द्वारा दिया हुआ यह पुरोडाश आपका भाग है; आप अपनी भगिनी अम्बिकाके साथ इसका सेवन कीजिये। यह प्रदत्त हवि सुहुत रहे। हमारे द्वारा अवकीर्ण किया गया यह पुरोडाश आपका भाग है; आपके द्वारा इसका सेवन किया जाय। हमने इस मूषकसंज्ञक पशुको आपके लिये अर्पित किया है ॥ २ ॥ चित्तमें रुद्र और त्र्यम्बकका ध्यान करके (अथवा अन्य देवताओंसे पृथक् करके) हम रुद्रको अन्न खिलाते हैं। वे रुद्र हमें निवसनशील और ज्ञातिमें श्रेष्ठ कर दें तथा वे हमें समस्त कार्योंमें शीघ्र निर्णय लेनेकी शक्ति प्रदान करें, इसके लिये हम उनका जप करते हैं ॥ ३ ॥ हे रुद्र ! आप औषधिके तुल्य समस्त उपद्रवोंके निवारक हैं, अतः हमारे गाय, अश्व और भृत्य आदिको सर्वव्याधिनिवारक औषधि दीजिये और हमारे मेष तथा मेषीको सुख प्रदान कीजिये ॥ ४ ॥

त्र्यम्बकं व्यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो-
 र्मुक्षीय मामृतात् ।। त्र्यम्बकं व्यजामहे सुगन्धिं प्रतिवेदनम् ।। उर्वारुकमिव-
 बन्धनादितो मुक्षीय मामृताः ।। ५ ।।

एतत्तैरुद्राऽवसन्ते न पुरो मूर्जवतोऽतीहि ।। अवततधन्वा पिनाका वसुः
 कृत्तिवासाऽअहिर्ऽसन्नः शिवोऽतीहि ।। ६ ।।

दिव्य गन्धसे युक्त, मृत्युरहित, धन-धान्यवर्धक, त्रिनेत्र रुद्रकी हम पूजा करते हैं। वे रुद्र हमें अपमृत्यु और संसाररूप मृत्युसे मुक्त करें। जिस प्रकार ककड़ी (फूट)-का फल अत्यधिक पक जानेपर अपने वृन्त (डंठल)-से मुक्त हो जाता है, उसी प्रकार हम भी मृत्युसे छूट जायँ; किंतु अभ्युदय और निःश्रेयसरूप अमृतसे हमारा सम्बन्ध न छूटने पाये। [अग्रिम वाक्य कुमारिकाओंका है] पतिकी प्राप्ति करानेवाले, सुगन्धविशिष्ट त्रिनेत्र शिवकी हम पूजा करती हैं। ककड़ी (फूट)-का फल परिपक्व होनेपर जैसे अपने डंठलसे छूट जाता है, उसी प्रकार हम कुमारियाँ माता, पिता, भाई आदि बन्धुजनोंसे तथा उस कुलसे छूट जायँ, किंतु त्र्यम्बकके प्रसादसे हम अपने पतिसे न छूटें अर्थात् पिताका गोत्र तथा घर छोड़कर पतिके गोत्र तथा घरमें सर्वदा रहें ॥ ५ ॥ हे रुद्र! आपका यह 'अवस' संज्ञक हविःशेष भोज्य है ('अवस' का अर्थ है—प्रवासमें किसी सरोवरके समीप विश्राम करनेपर भक्षणयोग्य ओदनविशेष), उसके सहित आप अपने धनुषकी प्रत्यञ्चाको हटाकर मूजवान् पर्वतके उस पार जाइये। [मूजवान् पर्वतपर रुद्र निवास करते हैं] प्रवास करते समय आप अपने 'पिनाक' नामक धनुषको सब ओरसे आच्छादित कर लें, जिससे कोई भी प्राणी आपके धनुषको देखकर भयभीत न हो। हे रुद्र! आप चर्माम्बर धारण करके हिंसा न करते हुए हमारी पूजासे संतुष्ट होकर मूजवान् पर्वतको लाँघ जाइये ॥ ६ ॥

त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।। अद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नोऽस्तु-
 त्र्यायुषम् ।। ७ ।। शिवो नामासि स्वर्धितिस्ते पितानमस्तेऽस्तु मामाहि ऽसीः ।।
 निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्यायप्प्रजननाय रायस्पृषाय सुप्प्रजास्त्वाय सुवी-
 र्धाय ।। ८ ।।

॥ इति रुद्रपाठे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

जमदग्नि ऋषिकी बाल्य-यौवन-वृद्धावस्थाके जो उत्तम चरित्र हैं, कश्यप प्रजापतिकी तीनों अवस्थाओंके जो उत्तम चरित्र हैं तथा देवगणोंमें भी उनकी तीनों अवस्थाओंके जो प्रशंसनीय चरित्र विद्यमान हैं, तीनों अवस्थाओंसे सम्बन्धित वैसा ही चरित्र हम यजमानोंका भी हो ॥ ७ ॥ हे क्षुर! आपका नाम 'शान्त' है। वज्र आपके पिता हैं, मैं आपके लिये नमस्कार करता हूँ। आप मेरी हिंसा मत कीजिये। हे यजमान! बहुत दिनोंतक जीवित रहनेके लिये, अन्न-भक्षण करनेके लिये, संततिके लिये, द्रव्य-वृद्धिके लिये, योग्य संतान उत्पन्न होनेके लिये तथा उत्तम सामर्थ्यकी प्राप्तिके लिये मैं आपका मुण्डन करता हूँ ॥ ८ ॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का छठा अध्याय पूर्ण हुआ ॥ ६ ॥



— सप्तमोऽध्यायः —

हरिः ॐ उग्रश्चर्भीमश्चुद्ध्वान्तश्चुधुनिश्च ॥ सासुह्वाँश्च्चा-
भियुग्वाचविक्षिपुःस्वाहा ॥१॥

अग्निः हृदयेनाशनिः हृदयाग्रेण पशुपतिः कृत्स्नहृदयेन भुवं व्युक्ता ॥
शर्वम्मतस्त्राभ्यामीशानम्भ्युना महादेवमन्तः पर्श्वे नोग्रन्देवं वनिष्ठुना-
वसिष्ठुहनुः शिङ्गीनिकोश्याभ्याम् ॥२॥

सातवाँ अध्याय

उग्र (उत्कट क्रोध स्वभाववाले), भीम (भयानक), ध्वान्त (तीव्र ध्वनि करनेवाले), धुनि (शत्रुओंको कम्पित करनेवाले), सासह्वान् (शत्रुओंको तिरस्कृत करनेमें समर्थ), अभियुग्वा (हमारे सम्मुख योग प्राप्त करनेवाले) और विक्षिप (वृक्ष-शाखादिका क्षेपण करनेवाले) नामवाले जो सात मरुत् हैं, उन्हें मैं यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित करता हूँ ॥ १ ॥* मैं अग्निको हृदयके द्वारा, अशनिदेवको हृदयाग्रसे, पशुपतिको सारे हृदयसे, भवको यकृत्से, शर्वको मतस्त्रा नामक हृदयस्थलसे, ईशान देवताको क्रोधसे, महादेवको पसलियोंके अन्तर्भागसे, उग्र देवताको बड़ी आँतसे और शिङ्गी नामक देवताओंको हृदयकोष-स्थित पिण्डोंसे प्रसन्न करता हूँ ॥ २ ॥

* यहाँसे आगेके कुछ मन्त्रोंका अरण्यमें पाठ होनेसे इन्हें आरण्यक श्रुति भी कहा जाता है। प्रायश्चित्त-हवन आदिमें भी इन मन्त्रोंका विनियोग होता है। इन मन्त्रोंमें शरीरके तत्तदङ्गोंके अभिमानी देवताओंके निमित्त तत्तदङ्गों तथा मज्जा आदि धातुओंकी आहुति-प्रदानकी बात आयी है। तत्त्वतः व्यष्टि-समष्टि यह समस्त विश्व भगवद्रूप ही है। समर्पित द्रव्य एवं देवता सब कुछ ब्रह्ममय है। होता भी वे ही हैं, हवनीय द्रव्य भी वे ही हैं और उसके भोक्ता भी वे ही हैं। यह त्रिविध शरीर भी भगवत्प्रदत्त ही है। अतः परमात्मप्रभुका ही है और उन्हें समर्पित कर देना इसका परम प्रयोजन है तथा इसीमें इसका साफल्य भी है। औपनिषद् श्रुतिमें आया है कि 'अहमेवमहं मां जुहोमि स्वाहा' (त्रिपाद्विभूतिमहानारायणोपनिषद् ८) अर्थात् मैं आत्मरूप ही परमात्मस्वरूप हूँ, अतः मैं अहंता (भेद-प्रतीति)-का

उग्रल्लोहितेनमित्रः सौव्रत्येन रुद्रन्दौर्व्रत्येनेन्द्रम्पवक्रीडेन मरुतो बलै-
 साद्धान्प्रमुदा ॥ भुवस्युकण्ठ्यः रुद्रस्यान्तःपाशर्व्यम्मादेवस्य षक्च्छु-
 र्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ ३ ॥ लोमभ्युः स्वाहा लोमभ्युः स्वाहा त्वचे-
 स्वाहा त्वचे स्वाहा लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोभ्युः स्वाहा मेदोभ्युः-
 स्वाहा ॥ मांसेभ्युः स्वाहा मांसेभ्युः स्वाहा स्त्रावभ्युः स्वाहा स्त्राव-
 भ्युः स्वाहा स्थभ्युः स्वाहा स्थभ्युः स्वाहा मज्जभ्युः स्वाहा मज्जभ्युः-
 स्वाहा ॥ रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा ॥ ४ ॥

उग्र देवताको रुधिरसे, मित्र देवताको शुभ कर्मोंके अनुष्ठानसे, रुद्र देवताको अशोभन कर्मोंसे, इन्द्र देवताको प्रकृष्ट क्रीडाओंसे, मरुत् देवताओंको बलसे, साध्य देवताओंको हर्षसे, भव देवताको कण्ठभागसे, रुद्र देवताको पसलियोंके अन्तर्भागसे, महादेवको यकृत्से, शर्व देवताको बड़ी आँतसे और पशुपति देवताको पुरीतत् (हृदयाच्छादक भागविशेष) -से संतुष्ट करता हूँ ॥ ३ ॥ समष्टि लोमोंके लिये यह श्रेष्ठ आहुति देता हूँ; व्यष्टि लोमोंके लिये यह श्रेष्ठ आहुति देता हूँ; समष्टि त्वचाके लिये; व्यष्टि त्वचाके लिये, समष्टि रुधिरके लिये; व्यष्टि रुधिरके लिये, समष्टि मेदाके लिये; व्यष्टि मेदाके लिये, समष्टि मांसके लिये; व्यष्टि मांसके लिये, समष्टि नसोंके लिये; व्यष्टि नसोंके लिये, समष्टि अस्थियोंके लिये; व्यष्टि अस्थियोंके लिये, समष्टि मज्जाके लिये; व्यष्टि मज्जाके लिये, वीर्यके लिये और पायु इन्द्रियके लिये मैं यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित करता हूँ ॥ ४ ॥

हवन करता हूँ अर्थात् अपनेको (आत्मतत्त्वको) परमात्माके लिये समर्पित करता हूँ। 'त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये'—इस भावनासे यहाँपर विविध अङ्गोंके समर्पणमें स्थूलरूपसे नहीं, अपितु अपना सर्वस्व तथा स्वयं अपनेको भी पूर्ण समर्पित करने तथा पूर्ण आत्मशरणागतिका भाव अभिव्यक्त हुआ है।

आयासायस्वाहाप्रायासायस्वाहासंख्यासायस्वाहावियासायस्वाहो-
 द्यासायस्वाहा ॥ शुचेस्वाहाशोचतेस्वाहाशोचमानायस्वाहाशोकाय-
 स्वाहा ॥ ५ ॥ तपसेस्वाहातप्यतेस्वाहातप्यमानायस्वाहातुप्तायस्वाहा-
 घुर्मायस्वाहा ॥ निष्कृत्यैस्वाहाप्रायश्चित्त्यैस्वाहाभेषुजायस्वाहा ॥ ६ ॥
 शुमायस्वाहाऽन्तकायस्वाहामृत्यवेस्वाहा ॥ ब्रह्मणेस्वाहाब्रह्महृत्यायै-
 स्वाहाविश्वेभ्योदेवेभ्यः स्वाहाद्यावापृथिवीभ्यः ॥ ७ ॥

॥ इति रुद्रपाठे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

आयास देवताके लिये, प्रायास देवताके लिये, संयास देवताके लिये, वियास देवताके लिये और उद्यास देवताके लिये, शुचिके लिये, शोचत्के लिये, शोचमानके लिये और शोकके लिये मैं यह श्रेष्ठ आहुति प्रदान करता हूँ ॥ ५ ॥ तपके लिये, तपकर्ताके लिये, तप्यमानके लिये, तप्तके लिये, घर्मके लिये, निष्कृतिके लिये, प्रायश्चित्तिके लिये और औषधके लिये मैं यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित करता हूँ ॥ ६ ॥ यमके लिये, अन्तकके लिये, मृत्युके लिये, ब्रह्माके लिये, ब्रह्महत्याके लिये, विश्वेदेवोंके लिये, द्युलोकके लिये तथा पृथ्वीलोकके लिये मैं यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित करता हूँ ॥ ७ ॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का सातवाँ अध्याय पूर्ण हुआ ॥ ७ ॥

— अष्टमोऽध्यायः —

हरिः ॐ वाजश्चमेप्प्रसुवश्चमेप्प्रयतिश्चमेप्प्रसितिश्चमेधीति-
श्चमेक्रतुश्चमेस्वरश्चमेऽल्लोकश्चमेऽश्रुवश्चमेऽश्रुतिश्चमेज्ज्यो-
तिश्चमेस्वश्चमेयुजेनकल्पन्ताम् ॥१॥ प्राणश्चमेऽपानश्चमेव्यान-
श्चमेऽसुश्चमेचित्तञ्चमेऽआधीतञ्चमेवाकचमेमनश्चमेचक्षुश्चमे-
ऽश्रोत्रञ्चमेदक्षश्चमेबलञ्चमेयुजेनकल्पन्ताम् ॥२॥ ओजश्चमेसहश्च-
मेऽआत्माचमेतनूश्चमेशर्माचमेवर्माचमेऽङ्गानिचमेऽस्थीनिचमेपरूषि-
चमेशरीराणिचमेऽआयुश्चमेजुराचमेयुजेनकल्पन्ताम् ॥३॥

आठवाँ अध्याय

अन्न, अन्नदानकी अनुज्ञा, शुद्धि, अन्न-भक्षणकी उत्कण्ठा, ध्यान, श्रेष्ठ सङ्कल्प, सुन्दर शब्द, स्तुति-सामर्थ्य, वेदमन्त्र अथवा श्रवणशक्ति, ब्राह्मण, प्रकाश और स्वर्ग—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ १ ॥

प्राणवायु, अपानवायु, सारे शरीरमें विचरण करनेवाला व्यानवायु, मनुष्योंको प्रवृत्त करनेवाला वायु, मानससङ्कल्प, बाह्यविषयसम्बन्धी ज्ञान, वाणी, शुद्ध मन, पवित्र दृष्टि, सुननेकी सामर्थ्य, ज्ञानेन्द्रियोंका कौशल तथा कर्मेन्द्रियोंमें बल—ये सब मेरे द्वारा किये गये यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ २ ॥

बलका कारणभूत ओज, देहबल, आत्मज्ञान, सुन्दर शरीर, सुख, कवच, हृष्ट-पुष्ट अङ्ग, सुदृढ़ हड्डियाँ, सुदृढ़ अँगुलियाँ, नीरोग शरीर, जीवन और वृद्धावस्थापर्यन्त आयु—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ ३ ॥

ज्यैष्ठ्यञ्चमुऽआधिपत्यञ्चमेमुन्युश्चमेभार्मश्चमेऽमश्चमेऽम्भश्च-
मेजेमाचमेमहिमाचमेवरिमाचमेप्प्रथिमाचमेव्वर्षिमाचमेद्राधिमाचमेवृद्धञ्चमे-
वृद्धिश्चमेयुजेनकल्पन्ताम् ।। ४ ।। (न०)^१ ।। सुत्यञ्चमेश्रुद्धाचमेजग-
च्चमेधनञ्चमेविश्श्वञ्चमेमहश्चमेक्कीडाचमेमोदश्चमेजातञ्चमेजनि-
ष्यमाणञ्चमेसुक्वत्तञ्चमेसुकृतञ्चमेयुजेनकल्पन्ताम् ।। ५ ।। ऋतञ्चमेऽमृतञ्च-
मेऽयुक्ष्मञ्चमेऽनामयच्चमेजीवातुश्चमेदीर्घायुत्त्वञ्चमेऽनमित्रञ्चमेऽभयञ्च-
मेसुखञ्चमेशयनञ्चमेसुषाश्चमेसुदिनञ्चमेयुजेनकल्पन्ताम् ।। ६ ।।

१-प्रस्तुत प्रकरणमें लिखा गया 'न०' पाँचवें अध्यायके पहले मन्त्र 'नमस्ते०' का पहला अक्षर है, यह अक्षर इस बातका बोधक है कि यहाँपर नमकाध्याय (नमस्ते रुद्र०से प्रारम्भ कर जम्भे दध्यः तक ६६ मन्त्र)-की आवृत्ति होती है। आगे भी आठवें अध्यायमें जहाँ-जहाँ 'न०' अक्षर लिखा गया है, वहाँ यही बात समझनी चाहिये।

प्रशस्तता, प्रभुता, दोषोंपर कोप, अपराधपर क्रोध, अपरिमेयता, शीतल-मधुर जल, जीतनेकी शक्ति, प्रतिष्ठा, संतानकी वृद्धि, गृह-क्षेत्र आदिका विस्तार, दीर्घ जीवन, अविच्छिन्न वंशपरम्परा, धन-धान्यकी वृद्धि और विद्या आदि गुणोंका उत्कर्ष—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ ४ ॥

यथार्थ भाषण, परलोकपर विश्वास, गो आदि पशु, सुवर्ण आदि धन, स्थावर पदार्थ, कीर्ति, क्रीडा, क्रीडादर्शन-जनित आनन्द, पुत्रसे उत्पन्न संतान, होनेवाली संतान, शुभदायक ऋचाओंका समूह और ऋचाओंके पाठसे शुभ फल—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ ५ ॥

यज्ञ आदि कर्म और उनका स्वर्ग आदि फल, धातुक्षय आदि रोगोंका अभाव तथा सामान्य व्याधियोंका न रहना, आयु बढ़ानेवाले साधन, दीर्घायु, शत्रुओंका अभाव, निर्भयता, सुख, सुसज्जित शय्या, संध्या-वन्दनसे युक्त प्रभात और यज्ञ-दान-अध्ययन आदिसे युक्त दिन—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ ६ ॥

धृन्ताचमेधृत्ताचमेक्षेमश्चमेधृतिश्चमेविश्श्वञ्चमेमहश्चमे-
 संविच्चमेज्ञात्रञ्चमेसूश्चमेप्रसूश्चमेसीरञ्चमेलयश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥७॥
 शञ्चमेमयश्चमेप्प्रियञ्चमेऽनुकामश्चमेकामश्चमेसौमनुसश्चमेभ-
 गश्चमेद्वविणञ्चमेभद्रञ्चमेश्श्रेयश्चमेवसीयश्चमेवशश्चमेयज्ञेन-
 कल्पन्ताम् ॥८॥ (न०) ॥ ऊक्क्चमेसूनृताचमेपयश्चमेरसश्चमेधृतञ्च-
 मेमधुचमेसगिधश्चमेसपीतिश्चमेकृषिश्चमेवृष्टिश्चमे-
 जैत्रञ्चमेऽऔद्भिद्यञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥९॥ रुयिश्चमेरायश्चमेपुष्ट-
 ञ्चमेपुष्टिश्चमेविभुचमेप्प्रभुचमेपुण्णञ्चमेपुण्णतरञ्चमेकुर्यवञ्चमेऽक्षित-
 ञ्चमेऽन्नञ्चमेऽक्षुच्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥१०॥

अश्व आदिका नियन्त्रित्व और प्रजापालनकी क्षमता, वर्तमान धनकी रक्षणशक्ति, आपत्तिमें चित्तकी स्थिरता, सबकी अनुकूलता, पूजा-सत्कार, वेदशास्त्र आदिका ज्ञान, विज्ञान-सामर्थ्य, पुत्र आदिको प्रेरित करनेकी क्षमता, पुत्रोत्पत्ति आदिके लिये सामर्थ्य, हल आदिके द्वारा कृषिसे अन्न-उत्पादन और कृषिमें अनावृष्टि आदि विघ्नोंका विनाश—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ ७ ॥ इस लोकका सुख, परलोकका सुख, प्रीति-उत्पादक वस्तु, सहज यत्नसाध्य पदार्थ, विषयभोगजनित सुख, मनको स्वस्थ करनेवाले बन्धु-बान्धव, सौभाग्य, धन, इस लोकका और परलोकका कल्याण, धनसे भरा निवासयोग्य गृह तथा यश—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ ८ ॥ अन्न, सत्य और प्रिय वाणी, दूध, दूधका सार, घी, शहद, बान्धवोंके साथ खान-पान, धान्यकी सिद्धि, अन्न उत्पन्न होनेके अनुकूल वर्षा, विजयकी शक्ति तथा आम आदि वृक्षोंकी उत्पत्ति—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ ९ ॥ सुवर्ण, मौक्तिक आदि मणियाँ, धनकी प्रचुरता, शरीरकी पुष्टि, व्यापकताकी शक्ति, ऐश्वर्य, धन-पुत्र आदिकी बहुलता, हाथी-घोड़ा आदिकी अधिकता, कुत्सित धान्य, अक्षय अन्न, भात आदि सिद्धान्न तथा भोजन पचानेकी शक्ति—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ १० ॥

वित्तञ्चमेवेद्यञ्चमेभुतञ्चमेभविष्यच्चमेसुगञ्चमेसुपत्थ्यञ्चमऽऋद्धञ्चमऽ
 ऋद्धिश्चचमेक्लृप्तञ्चमेक्लृप्तिश्चचमेमृतिश्चचमेसुमृतिश्चचमेयुज्ञेनकल्प-
 न्ताम् ।। ११ ।। व्रीहयश्चचमेयवाश्चचमेमाषाश्चचमेतिलाश्चचमेमुद्गाश्चचमे-
 खल्लवाश्चचमेप्रियङ्गवश्चचमेऽणवश्चचमेश्यामाकाश्चचमेनीवाराश्चचमे-
 गोधूमाश्चचमेमसूराश्चचमेयुज्ञेनकल्पन्ताम् ।। १२ ।। (न०) ।। अश्म्याचमे-
 मृत्तिकाचमेगिरयश्चचमेपर्वताश्चचमेसिकताश्चचमेवृनुस्पतयश्चच-
 मेहिरण्णयञ्चमेऽयश्चचमेश्यामञ्चमेलोहञ्चमेसीसञ्चमेत्रपुचमेयुज्ञेन-
 कल्पन्ताम् ।। १३ ।।

पूर्वप्राप्त धन, प्राप्त होनेवाला धन, पूर्वप्राप्त क्षेत्र आदि, भविष्यमें प्राप्त होनेवाले क्षेत्र आदि, सुगम्य देश, परम पथ्य पदार्थ, समृद्ध यज्ञ-फल, यज्ञ आदिकी समृद्धि, कार्यसाधक अपरिमित धन, कार्यसाधनकी शक्ति, पदार्थ-मात्रका निश्चय तथा दुर्घट कार्योंका निर्णय करनेकी बुद्धि—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ ११ ॥

उत्कृष्ट कोटिके धान, यव, उड़द, तिल, मूँग, चना, प्रियङ्गु, चीनक धान्य, सावाँ, नीवार, गेहूँ और मसूर—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ १२ ॥

सुन्दर पाषाण और श्रेष्ठ मृत्तिका, गोवर्धन आदि छोटे पर्वत, हिमालय आदि विशाल पर्वत, रेतीली भूमि, वनस्पतियाँ, सुवर्ण, लोहा, ताँबा, काँसा, सीसा तथा राँगा—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ १३ ॥

अग्निश्चर्ममुऽआर्षश्चर्ममेवीरुधश्चर्ममुऽओषधयश्चर्ममेकृष्टपुचच्या-
 श्चर्ममेऽकृष्टपुचच्याश्चर्ममेग्राम्याश्चर्ममेपुशर्वऽआरुण्याश्चर्ममेवित्त-
 ञ्चमेवित्तिश्चर्ममेभूतञ्चमेभूतिश्चर्ममेयज्ञेनकल्पन्ताम् ।। १४ ।। वसुचर्ममेवसुति-
 श्चर्ममेकर्मचर्मेशक्तिश्चर्ममेऽर्थश्चर्ममुऽएमश्चर्ममुऽइत्या चर्ममेगतिश्चर्ममे-
 यज्ञेनकल्पन्ताम् ।। १५ ।। (न०) ।। अग्निश्चर्ममुऽइन्द्रश्चर्ममेसोमश्चर्ममुऽ-
 इन्द्रश्चर्ममेसविताचर्ममुऽइन्द्रश्चर्ममेसरस्वतीचर्ममुऽइन्द्रश्चर्ममेपुषाचर्ममुऽइन्द्र-
 श्चर्ममेबृहस्पतिश्चर्ममुऽइन्द्रश्चर्ममेयज्ञेनकल्पन्ताम् ।। १६ ।। मित्रश्चर्ममुऽइन्द्र-
 श्चर्ममेव्वरुणश्चर्ममुऽइन्द्रश्चर्ममेधाताचर्ममुऽइन्द्रश्चर्ममेत्वष्टाचर्ममुऽइन्द्रश्चर्ममेमु-
 रुतश्चर्ममुऽइन्द्रश्चर्ममेविश्वेचर्ममेदेवाऽइन्द्रश्चर्ममेयज्ञेनकल्पन्ताम् ।। १७ ।।

पृथ्वीपर अग्निकी तथा अन्तरिक्षमें जलकी अनुकूलता, छोटे-छोटे तृण, पकते ही सूखनेवाली औषधियाँ, जोतने-बोनेसे उत्पन्न होनेवाले तथा बिना जोते-बोये स्वयं उत्पन्न होनेवाले अन्न, गाय-भैंस आदि ग्राम्य पशु तथा हाथी-सिंह आदि जंगली पशु, पूर्वलब्ध तथा भविष्यमें प्राप्त होनेवाला धन, पुत्र आदि तथा ऐश्वर्य—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ १४ ॥ गो आदि धन, रहनेके लिये सुन्दर घर, अग्निहोत्र आदि कर्म तथा उनके अनुष्ठानकी सामर्थ्य, इच्छित पदार्थ, प्राप्तियोग्य पदार्थ, इष्टप्राप्तिका उपाय एवं इष्टप्राप्ति—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ १५ ॥ अग्नि और इन्द्र, सोम तथा इन्द्र, सविता और इन्द्र, सरस्वती तथा इन्द्र, पूषा तथा इन्द्र, बृहस्पति और इन्द्र—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ १६ ॥ मित्रदेव एवं इन्द्र, वरुण तथा इन्द्र, धाता और इन्द्र, त्वष्टा तथा इन्द्र, मरुद्गण और इन्द्र, विश्वेदेव और इन्द्र—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ १७ ॥

पृथिवीचमऽइन्द्रश्चमेऽन्तरिक्षञ्चमऽइन्द्रश्चमेद्यौश्चमऽ इन्द्रश्च-
 मेसमाश्चमऽ इन्द्रश्चमेनक्षत्राणिचमऽइन्द्रश्चमेदिशश्चमऽइन्द्रश्च-
 मेषुज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १८ ॥ (न०) ॥ अह्नुश्चमेरुश्मिश्चमेऽ दाढ्य-
 श्चमेऽधिपतिश्चमऽउपा० शुश्चमेऽन्तर्धामश्चमऽऐन्द्रवायव-
 श्चमेमैत्रावरुणश्चमऽआशिश्वनश्चमेप्प्रतिप्रस्थानश्चमेशुक्र-
 श्चमेमुन्थीचमेषुज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १९ ॥ आग्नेयुणश्चमेवैश्वदेव-
 श्चमेऽध्वश्चमेवैश्वानुरश्चमऽऐन्द्राग्नश्चमेमुहावैश्वदेवश्च-
 मेमरुत्त्वृतीयाश्चमेनिष्कैवल्यश्चमेसावित्रश्चमेसारस्वतश्च-
 मेपात्क्नीवृतश्चमेहारियोजुनश्चमेषुज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २० ॥

पृथ्वी और इन्द्र, अन्तरिक्ष एवं इन्द्र, स्वर्ग तथा इन्द्र, वर्षकी अधिष्ठात्री देवता तथा इन्द्र, नक्षत्र और इन्द्र, दिशाएँ एवं इन्द्र—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ १८ ॥

अंशु, रश्मि, अदाभ्य, निग्राह्य, उपांशु, अन्तर्याम, ऐन्द्रवायव, मैत्रावरुण, आश्विन, प्रतिप्रस्थान, शुक्र और मन्थी—ये सभी ग्रह मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ १९ ॥

आग्रयण, वैश्वदेव, ध्रुव, वैश्वानर, ऐन्द्राग्र, महावैश्वदेव, मरुत्वतीय, निष्केवल्य, सावित्र, सारस्वत, पालीवत एवं हरियोजन—ये यज्ञग्रह मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ २० ॥

स्तुचश्चमेचमुसाश्चमेवायुष्ट्यानिचमेद्रोणकलुशश्चमेग्रावाण-
 श्चमेऽधिषवणेचमेपूतभृच्चमऽआधवनीयश्चमेवेदिश्चमेबुर्हिश्चमेऽ
 वभृथश्चमेस्वगाकारश्चमेयुज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २१ ॥ (न०) ॥ अग्नि-
 श्चमेघुर्मश्चमेऽर्कश्चमेसूच्यश्चमेप्प्राणश्चमेऽश्वमेधश्च-
 मेपृथिवीचमेऽदितिश्चमेदितिश्चमेद्यौश्चमेऽङ्गुलयुःशक्क्वरयो-
 दिशश्चमेयुज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २२ ॥ व्रतञ्चमऽऋतवश्चमेतपश्चमे-
 संवत्सरश्चमेऽहोरात्रेऽर्कष्वीवेबृहद्रथन्तरेचमेयुज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २३ ॥
 (न०) ॥

सुक्, चमस, वायव्य, द्रोणकलश, ग्रावा, काष्ठफलक, पूतभृत्, आधवनीय, वेदी, कुशा, अवभृथ और शम्युवाक—ये सब यज्ञपात्र मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ २१ ॥

अग्निष्टोम, प्रवर्ग्य, पुरोडाश, सूर्यसम्बन्धी चरु, प्राण, अश्वमेधयज्ञ, पृथ्वी, अदिति, दिति, द्युलोक, विराट् पुरुषके अवयव, सब प्रकारकी शक्तियाँ और पूर्व आदि दिशाएँ—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ २२ ॥

व्रत, वसन्त आदि ऋतुएँ, कृच्छ्र-चान्द्रायण आदि तप, प्रभव आदि संवत्सर, दिन-रात, जंघा तथा जानु—ये शरीरावयव और बृहद् तथा रथन्तर साम—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ २३ ॥

एकाचमेतिस्त्रश्चमेतिस्त्रश्चमेपञ्चचमेपञ्चचमेसुप्तचमेसुप्त-
 चमेनवचमेनवचमुऽएकादशचमुऽएकादशचमेऽत्रयोदशचमेत्रयोदशच-
 मेपञ्चदशचमेपञ्चदशचमेसुप्तदशचमेसुप्तदशचमेनवदशचमेनवद-
 शचमुऽएकविंशतिश्चमुऽएकविंशतिश्चमेत्रयोविंशतिश्चमेत्र-
 योविंशतिश्चमेपञ्चविंशतिश्चमेपञ्चविंशतिश्चमेसुप्तविंश-
 तिश्चमेसुप्तविंशतिश्चमेनवविंशतिश्चमेनवविंशतिश्च-
 मुऽएकत्रिंशतिश्चमुऽएकत्रिंशतिश्चमेत्रयस्त्रिंशतिश्चमेष्टुतेनकल्प-
 ताम्॥२४॥(न०)॥

एक और तीन, तीन तथा पाँच, पाँच और सात, सात तथा नौ, नौ और ग्यारह, ग्यारह और तेरह, तेरह और पंद्रह, पंद्रह तथा सत्रह, सत्रह तथा उन्नीस, उन्नीस और इक्कीस, इक्कीस तथा तेईस, तेईस और पच्चीस, पच्चीस तथा सत्ताईस, सत्ताईस तथा उनतीस, उनतीस और इकतीस, इकतीस तथा तैंतीस—इन सब संख्याओंसे कहे जानेवाले सकल श्रेष्ठ पदार्थ मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ २४ ॥

चतस्रश्चमेऽष्टौचमेऽष्टौचमेद्वादशचमेद्वादशचमेषोडशचमेषोडशचमे-
 विंशतिश्चमेविंशतिश्चमेचतुर्विंशतिश्चमेचतुर्विंशतिश्चमेऽष्टा-
 विंशतिश्चमेऽष्टाविंशतिश्चमेद्वात्रिंशच्चमेद्वात्रिंशच्चमेषट्त्रिंश-
 शच्चमेषट्त्रिंशच्चमेचत्वारिंशच्चमेचत्वारिंशच्चमेचतुश्चत्वारिंश-
 शच्चमेचतुश्चत्वारिंशच्चमेऽष्टौचत्वारिंशच्चमेष्टुज्ञेनकल्प-
 न्ताम् ।। २५ ।। (न०) ।। अविश्चमेऽष्टौचमेदित्युवाट्चमेदित्यौहीचमे-
 पञ्चाविश्चमेपञ्चाविचमेत्रिवृत्सश्चमेत्रिवृत्साचमेतुर्व्युवाट्चमेतुर्व्यौही-
 चमेष्टुज्ञेनकल्पन्ताम् ।। २६ ।।

चार तथा आठ, आठ और बारह, बारह तथा सोलह, सोलह और बीस, बीस और चौबीस, चौबीस तथा अट्ठाईस, अट्ठाईस और बत्तीस, बत्तीस तथा छत्तीस, छत्तीस और चालीस, चालीस तथा चौवालीस, चौवालीस तथा अड़तालीस—इन सब संख्याओंसे कहे जानेवाले सकल श्रेष्ठ पदार्थ मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ २५ ॥

डेढ़ वर्षका बछड़ा, डेढ़ वर्षकी बछिया, दो वर्षका बछड़ा, दो वर्षकी ही बछिया, ढाई वर्षका बैल, ढाई वर्षकी गाय, तीन वर्षका बैल तथा तीन वर्षकी गाय, साढ़े तीन वर्षका बैल और साढ़े तीन वर्षकी गाय—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ २६ ॥

पुष्टुवाट्चमेपष्टुहीचमऽउक्षार्चमेवुशाचमऽऋषभश्चमेव्वेहचमेऽनु-
 इवाँश्चमेधेनुश्चमेयुज्ञेनकल्पन्ताम् ॥२७॥ (न०) ॥ वाजायस्वाहाप्प्रसु-
 वायुस्वाहाऽपिजायुस्वाहाक्वतवेस्वाहावसवेस्वाहाऽहुर्पतयेस्वाहाह्वैमुग्धाय-
 स्वाहामुग्धायवैनऽशिनायुस्वाहाविनुऽशिनऽआन्त्यायुनायुस्वाहान्त्याय-
 भौवुनायुस्वाहाभुवनस्युपतयेस्वाहाधिपतयेस्वाहाप्प्रजापतयेस्वाहा ॥
 इयन्तेराणिम्भ्रायवन्तासिधमनऽऊर्ज्जेत्वावृष्ट्यैत्वाप्प्रजानुत्वाधि-
 पत्याय ॥२८॥

चार वर्षका बैल, चार वर्षकी गाय, सेचनमें समर्थ वृषभ, वन्ध्या गाय, तरुण वृषभ, गर्भधातिनी गाय, भार वहन करनेमें समर्थ बैल तथा नवप्रसूता गाय—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ २७ ॥ प्रचुर अन्नकी उत्पत्ति करनेवाले अन्नरूप चैत्रमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, वैशाखमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, जल-क्रीड़ा में सुखदायक ज्येष्ठमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, यागरूप आषाढमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, चातुर्मास्यमें यात्राका निषेध करनेवाले श्रावणमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, दिनके स्वामी सूर्यरूप भाद्रपदमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, तुषार आदिसे मोहकारक दिवसवाले आश्विन (क्वार)-मासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, स्नान आदिसे प्राणियोंका पाप नाश करनेके कारण मोहनिवर्तक तथा दिनमानके थोड़ा घटनेसे विनाशशील कार्तिकमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, सम्पूर्ण सृष्टिके विनाशके बाद भी विद्यमान रहनेवाले अविनाशी विष्णुरूप मार्गशीर्ष (अगहन)-मासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, अन्तमें स्थित रहनेवाले तथा प्राणियोंके पोषक पौषमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, सम्पूर्ण लोकोंके पालकरूप माघमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है और सभी प्राणियोंके लिये सर्वाधिक पालक फाल्गुनमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है। बारहों मासोंके अधिष्ठातृदेव प्रजापतिके लिये यह श्रेष्ठ आहुति दी जाती है। हे प्रजापतिस्वरूप अग्निदेव! यह यज्ञस्थान आपका राज्य है, अग्निष्टोम आदि कर्मोंमें सबके नियन्ता आप मित्ररूप इस यजमानके प्रेरक हैं। अधिक अन्न आदिकी प्राप्तिके लिये मैं आपका अभिषेक करता हूँ, वर्षाके लिये मैं आपका अभिषेक करता हूँ और प्रजाओंपर प्रभुता-प्राप्तिके लिये मैं आपका अभिषेक करता हूँ ॥ २८ ॥

आयुर्ध्वज्ञेनकल्प्यतांप्राणोयज्ञेनकल्प्यताञ्चक्षुर्ध्वज्ञेनकल्प्यतापुं३श्रोत्रं-
 यज्ञेनकल्प्यतांवाग्यज्ञेनकल्प्यताम्मनोयज्ञेनकल्प्यतामात्मायज्ञेनकल्प्यतां-
 ब्रह्मायज्ञेनकल्प्यताहुयोतिर्ध्वज्ञेनकल्प्यतापुंस्वर्ध्वज्ञेनकल्प्यतांपृष्ठंयज्ञेन-
 कल्प्यतांयज्ञोयज्ञेनकल्प्यताम्॥ स्तोमश्चयजुश्चऽऋक्चसाम्चबृहच्च-
 रथन्तरञ्च॥ स्वर्देवाऽअगन्तामृताऽअभूमप्प्रजापतेःप्प्रजाऽअभूमध्वेत्-
 स्वाहा॥२९॥

॥ इति रुद्रपाठे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

यज्ञके फलसे मेरी आयुमें वृद्धि हो, यज्ञके फलस्वरूप मेरे प्राण बलिष्ठ हों, यज्ञके फलस्वरूप नेत्रोंकी ज्योति बढ़े, यज्ञके फलसे श्रवणशक्ति उत्कृष्टताको प्राप्त हो, यज्ञके फलसे वाणीमें श्रेष्ठता रहे, यज्ञके फलस्वरूप मन सदा स्वच्छ रहे, यज्ञके फलस्वरूप आत्मा बलवान् हो, यज्ञके फलस्वरूप सभी वेद मेरे ऊपर प्रसन्न रहें, इस यज्ञके फलस्वरूप मुझे परमात्माकी दिव्य ज्योति प्राप्त हो, यज्ञके फलस्वरूप स्वर्गकी प्राप्ति हो, यज्ञके फलस्वरूप संसारका सर्वश्रेष्ठ सुख प्राप्त हो, यज्ञके फलस्वरूप महायज्ञ करनेकी सामर्थ्य प्राप्त हो, त्रिवृत्पञ्चदश आदि स्तोम, यजुर्मन्त्र, ऋचाएँ, सामकी गीतियाँ, बृहत्साम और रथन्तर साम—ये सब यज्ञके फलसे मेरे ऊपर अनुग्रह करें, मैं यज्ञके फलसे देवत्वको प्राप्तकर स्वर्ग जाऊँ तथा अमर हो जाऊँ, यज्ञके प्रसादसे हम हिरण्यगर्भ प्रजापतिकी प्रियतम प्रजा हों। समस्त देवताओंके निमित्त यह वसोर्धारा हवन सम्पन्न हुआ; ये सभी आहुतियाँ उन्हें भलीभाँति समर्पित हैं ॥ २९ ॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का आठवाँ अध्याय पूर्ण हुआ ॥ ८ ॥



— शान्त्यध्यायः —

हरिः ॐ ऋचंवाचुम्प्रपद्येमनोषजुः प्रपद्येसामप्राणम्प्रपद्ये-
चक्षुःश्रोत्रम्प्रपद्ये॥ वागोजः सहौजोमयिप्राणापानौ॥१॥ यन्मैछिद्-
ञ्चक्षुषोहृदयस्यमनसोवातितृणणुम्बृहस्पतिर्मेतद्दधातु॥ शन्नोभवतु-
भुवनस्युषस्पतिः॥२॥ भूर्भुवःस्वः। तत्सवितुर्वरेण्युम्भर्गोदेवस्य-
धीमहि॥ धियोयोनःप्रचोदयात्॥३॥ कयानश्चित्रऽआभुवदुती-
सुदावृधःसखा॥ कयाशचिष्ठयावृता॥४॥

शान्त्यध्याय

मैं ऋचारूप वाणीकी शरण लेता हूँ, मैं यजुःस्वरूप मनकी शरण लेता हूँ, मैं प्राणरूप सामकी शरण लेता हूँ और मैं चक्षु-इन्द्रिय तथा श्रोत्र-इन्द्रियकी शरण लेता हूँ। वाक्-शक्ति, शारीरिक बल और प्राण-अपानवायु—ये सब मुझमें स्थिर हों ॥ १ ॥ मेरे नेत्र तथा हृदयकी जो न्यूनता है और मनकी जो व्याकुलता है, उसे देवगुरु बृहस्पति दूर करें अर्थात् यज्ञ करते समय मेरे नेत्र, हृदय तथा मनसे जो त्रुटि हो गयी है, उसे वे क्षमा करें। सम्पूर्ण भुवनके जो अधिपतिरूप भगवान् यज्ञपुरुष हैं, वे हमारे लिये कल्याणकारी हों ॥ २ ॥ उन प्रकाशात्मक जगत्स्रष्टा सवितादेवके भूलोक, भुवलोक तथा स्वर्लोकमें व्याप्त रहनेवाले परब्रह्मात्मक सर्वोत्तम तेजका हम ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियोंको सत्कर्मोंके अनुष्ठानहेतु प्रेरित करें ॥ ३ ॥ सदा सबको समृद्ध करनेवाला आश्चर्यरूप परमेश्वर किस तर्पण या प्रीतिसे तथा किस वर्तमान याग-क्रियासे हमारा सहायक होता है अर्थात् हम कौन-सी उत्तम क्रिया करें और कौन-सा शोभन कर्म करें, जिससे परमात्मा हमारे सहायक हों और अपनी पालनशक्तिद्वारा हमारे वृद्धिकारी सखा हों ॥ ४ ॥

कस्त्वासुत्योमदानाम्मः हिंष्टोमत्सुदन्धसः ॥ दृढाचिदारुजेवसु ॥ ५ ॥
 अभीषुणः सखीनामविताजरितृणाम् ॥ शतम्भवास्युतिभिः ॥ ६ ॥ कयात्वन्न-
 ऽकुत्याभिप्रमन्दसेव्वृषन् ॥ कयास्तोतृब्भ्युऽआभर ॥ ७ ॥ इन्द्रोव्विश्वस्य-
 राजति ॥ शन्नोऽअस्तुद्विपदेशञ्चतुष्पदे ॥ ८ ॥ शन्नोमित्रः शंवरुणः
 शन्नोभवत्वर्ध्मा ॥ शन्नऽइन्द्रोबृहस्पतिः शन्नोव्विष्णुरुक्क्रमः ॥ ९ ॥
 शन्नोव्वार्तः पवतां शन्नस्तपतुसूर्ध्वः ॥ शन्नः कनिक्क्रददेवः पुज्जन्त्योऽ-
 अभिवर्षतु ॥ १० ॥

हे परमेश्वर ! मदजनक हवियोंमें श्रेष्ठ सोमरूप अन्नका कौन-सा अंश आपको सर्वाधिक तृप्त करता है ? आपकी इस प्रसन्नतामें दृढ़तासे रहनेवाले हम भक्तजन अपने धन आदिके साथ उसे आपको समर्पित करते हैं ॥ ५ ॥ हे परमेश्वर ! आप मित्रोंके तथा स्तुति करनेवाले हम ऋत्विजोंके पालक हैं और हम भक्तोंकी रक्षाके लिये भलीभाँति अभिमुख होकर आप अनन्त रूप धारण करते हैं ॥ ६ ॥ हे इन्द्र ! आप किस तृप्ति अथवा हविदानसे हमें प्रसन्न करते हैं ? और किस दिव्यरूपको धारण कर स्तुति करनेवाले हम उपासकोंकी सारी अभिलाषाओंको पूरा करते हैं ? ॥ ७ ॥ सबके स्वामी परमेश्वर चारों तरफ प्रकाशमान हैं । वे हमारे पुत्र आदिके लिये कल्याणरूप हों, वे हमारे गौ आदि पशुओंके लिये सुखदायक हों ॥ ८ ॥ मित्रदेवता हमारे लिये कल्याणमय हों, वरुणदेवता हमारे लिये कल्याणकारी हों, अर्यमा हमारे लिये कल्याणप्रद हों, इन्द्रदेवता हमारे लिये कल्याणमय हों, बृहस्पति हमारे लिये कल्याणकारी हों तथा विस्तीर्ण पादन्यासवाले विष्णु हमारे लिये कल्याणमय हों ॥ ९ ॥ वायुदेव हमारे लिये सुखकारी होकर बहें, सूर्यदेव हमारे निमित्त सुखरूप होकर तपें और पर्जन्यदेवता शब्द करते हुए हमारे निमित्त सुखदायक वर्षा करें ॥ १० ॥

अहानिःशम्भवन्तुनः शः रात्रीः प्रतिधीयताम् ।। शन्नऽइन्द्राग्नीभवता-
 मवोभिः शन्नऽइन्द्रावरुणारुतहव्या ।। शन्नऽइन्द्रापुषणाव्वाजसातौ-
 शमिन्द्रासोमासुवितायुशंध्योः ।। ११ ।। शन्नोदेवीरभिष्टुयऽआपोभवन्तु-
 पीतये ।। शंध्योरभिस्त्रवन्तुनः ।। १२ ।। स्योनापृथिविनोभवानृक्षुरानिवेशनी ।।
 यच्छानः शर्म्मसुप्रथाः ।। १३ ।। आपोहिष्टामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन ।।
 मुहेरणायचक्षसे ।। १४ ।। योवः शिवतमोरसुस्तस्यभाजयतेहनः ।। उशतीरिव-
 मातरः ।। १५ ।।

दिन हमारे लिये सुखकारी हों, रात्रियाँ हमारे लिये सुखरूप हों, इन्द्र और अग्निदेवता हमारी रक्षा करते हुए सुखरूप हों, हविसे तृप्त इन्द्र और वरुणदेवता हमारे लिये कल्याणकारी हों, अन्नकी उत्पत्ति करनेवाले इन्द्र और पूषादेवता हमारे लिये सुखकारी हों एवं इन्द्र और सोमदेवता श्रेष्ठ गमन अथवा श्रेष्ठ उत्पत्तिके निमित्त और रोगोंका नाश करनेके लिये तथा भय दूर करनेके लिये हमारे लिये कल्याणकारी हों ॥ ११ ॥ दीप्तिमान् जल हमारे अभीष्ट स्नानके लिये सुखकर हो, पीनेके लिये स्वादिष्ट तथा स्वास्थ्यकर हो, यह जल हमारे रोग तथा भयको दूर करनेके लिये निरन्तर प्रवाहित होता रहे ॥ १२ ॥ हे पृथिवि ! निष्कण्टक सुखमें स्थित रहनेवाली तथा अति विस्तारयुक्त आप हमारे लिये सुखकारी बनें और हमें शरण प्रदान करें ॥ १३ ॥ हे जलदेवता ! आप जल देनेवाले हैं और सुखकी भावना करनेवाले व्यक्तिके लिये स्नान-पान आदिके द्वारा सुखके उत्पादक हैं । हमारे रमणीय दर्शन और रसानुभवके निमित्त यहाँ स्थापित हो जाइये ॥ १४ ॥ हे जलदेवता ! आपका जो शान्तरूप सुखका एकमात्र कारण रस इस लोकमें स्थित है । हमको उस रसका भागी उसी तरहसे बनायें जैसे प्रीतियुक्त माता अपने बच्चेको दूध पिलाती है ॥ १५ ॥

तस्माऽअरङ्गमामवोषस्युक्षयायुजिन्वथ ॥ आपोजुनयथाचनः ॥ १६ ॥
 द्यौःशान्तिरुन्तरिक्षुःशान्तिः पृथिवीशान्तिरापःशान्तिरोषधयःशान्तिः ॥
 वनस्पतयःशान्तिर्विश्वेदेवाःशान्तिर्ब्रह्मशान्तिःसर्वदृशान्तिःशान्तिरि-
 वशान्तिःसामाशान्तिरिधि ॥ १७ ॥ दृतेदृष्टहमामित्रस्यमाचक्षुषासर्वाणि-
 भूतानिसमीक्षन्ताम् ॥ मित्रस्याहञ्चक्षुषासर्वाणिभूतानिसमीक्षे ॥ मित्रस्य-
 चक्षुषासमीक्षामहे ॥ १८ ॥ दृतेदृष्टहमा ॥ ज्योक्तेसुन्दृशिजीव्यासुज्यो-
 क्तेसुन्दृशिजीव्यासम् ॥ १९ ॥ नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्चिचषे ॥
 अत्र्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मब्ध्यष्टशिवोभव ॥ २० ॥

हे जलदेवता ! आपके उस रसकी प्राप्तिके लिये हम शीघ्र चलना चाहते हैं, जिसके द्वारा आप सारे जगत्को तृप्त करते हैं, और हमें भी उत्पन्न करते हैं ॥ १६ ॥ द्युलोकरूप शान्ति, अन्तरिक्षरूप शान्ति, भूलोकरूप शान्ति, जलरूप शान्ति, ओषधिरूप शान्ति, वनस्पतिरूप शान्ति, सर्वदेवरूप शान्ति, ब्रह्मरूप शान्ति, सर्वजगत्-रूप शान्ति और संसारमें स्वभावतः जो शान्ति रहती है, वह शान्ति मुझे परमात्माकी कृपासे प्राप्त हो ॥ १७ ॥ हे महावीर परमेश्वर ! आप मुझको दृढ़ कीजिये, सभी प्राणी मुझे मित्रकी दृष्टिसे देखें, मैं भी सभी प्राणियोंको मित्रकी दृष्टिसे देखूँ और हमलोग परस्पर द्रोहभावसे सर्वथा रहित होकर सभीको मित्रकी दृष्टिसे देखें ॥ १८ ॥ हे भगवन् ! आप मुझे सब प्रकारसे दृढ़ बनायें। आपके संदर्शनमें अर्थात् आपकी कृपादृष्टिसे मैं दीर्घकालतक जीवित रहूँ ॥ १९ ॥ हे अग्निदेव ! सब रसोंको आकर्षित करनेवाली आपकी तेजस्विनी ज्वालाको नमस्कार है, आपके पदार्थ-प्रकाशक तेजको नमस्कार है। आपकी ज्वालाएँ हमें छोड़कर दूसरोंके लिये तापदायक हों और आप हमारा चित्त-शोधन करते हुए हमारे लिये कल्याणकारक हों ॥ २० ॥

नमस्तेऽस्तुविद्युतेनमस्तेस्तनयित्वे ।। नमस्तेभगवन्नस्तुषतुःस्वः सुमी-
हसे ।। २१ ।। यतौयतःसुमीहसेततौनोऽअभयङ्कुरु ।। शन्नःकुरुप्प्रजाब्भ्योऽ
भयन्नःपशुब्भ्यः ।। २२ ।। सुमित्रियानुऽआपुऽओषधयः सन्तुदुर्मित्रियास्त-
म्मैसन्तुयोऽस्मान्द्वेष्टिषञ्चवयन्दिष्मः ।। २३ ।। तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ता-
च्छुक्रमुच्चरत् ।। पश्येमशरदः शतञ्जीवेमशरदः शतं शृणुयामशरदः
शतंप्रब्रवामशरदःशतमदीनाः स्यामशरदःशतम्भूयश्चशरदःशतात् ।। २४ ।।

॥ इति रुद्रपाठे शान्त्यध्यायः ॥ १ ॥

विद्युत् रूप आपके लिये नमस्कार है, गर्जनारूप आपके लिये नमस्कार है, आप सभी प्राणियोंको स्वर्गका सुख देनेकी चेष्टा करते हैं, इसलिये आपके लिये नमस्कार है ॥ २१ ॥ हे परमेश्वर ! आप जिस रूपसे हमारे कल्याणकी चेष्टा करते हैं उसी रूपसे हमें भयरहित कीजिये, हमारी संतानोंका कल्याण कीजिये और हमारे पशुओंको भी भयमुक्त कीजिये ॥ २२ ॥ जल और ओषधियाँ हमारे लिये कल्याणकारी हों और हमारे उस शत्रुके लिये वे अमङ्गलकारी हों, जो हमारे प्रति द्वेषभाव रखता है अथवा हम जिसके प्रति द्वेषभाव रखते हैं ॥ २३ ॥ देवताओंद्वारा प्रतिष्ठित, जगत्के नेत्रस्वरूप तथा दिव्य तेजोमय जो भगवान् आदित्य पूर्व दिशामें उदित होते हैं उनकी कृपासे हम सौ वर्षोंतक देखें अर्थात् सौ वर्षोंतक हमारी नेत्रज्योति बनी रहे, सौ वर्षोंतक सुखपूर्वक जीवन-यापन करें, सौ वर्षोंतक सुनें अर्थात् सौ वर्षोंतक श्रवणशक्तिसे सम्पन्न रहें, सौ वर्षोंतक अस्खलित वाणीसे युक्त रहें, सौ वर्षोंतक दैन्यभावसे रहित रहें अर्थात् किसीके समक्ष दीनता प्रकट न करें। सौ वर्षोंसे ऊपर भी बहुत कालतक हम देखें, जीयें, सुनें, बोलें और अदीन रहें ॥ २४ ॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का शान्त्यध्याय पूर्ण हुआ ॥

—स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्यायः—

हरिः ॐ स्वस्तिनुऽइन्द्रोवृद्धश्श्रवाः स्वस्तिनःपुषाविश्ववेदाः॥
स्वस्तिनुस्ताक्षर्योऽरिष्टनेमिःस्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु॥१॥ ॐ पयः
पृथिव्याम्पयुऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीःप्रदिशः
सन्तुमहर्षम्॥२॥ ॐ विष्णोरुराटमसिविष्णोःश्नप्त्रैस्थोविष्णोः
स्यूरसिविष्णोर्ध्रुवोऽसि॥ वैष्णवमसिविष्णावेत्त्वा॥३॥

स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्याय

महती कीर्तिवाले ऐश्वर्यशाली इन्द्र हमारा कल्याण करें, सर्वज्ञ तथा सबके पोषणकर्ता पूषादेव (सूर्य) हमारे लिये मङ्गलका विधान करें। चक्रधाराके समान जिनकी गतिको कोई रोक नहीं सकता, वे तार्क्ष्यदेव हमारा कल्याण करें और वेदवाणीके स्वामी बृहस्पति हमारे लिये कल्याणका विधान करें ॥ १ ॥ हे अग्निदेव! आप हमारे लिये पृथ्वीपर रस धारण कीजिये, ओषधियोंमें रस डालिये, स्वर्गलोक तथा अन्तरिक्षमें रस स्थापित कीजिये, आहुति देनेसे सारी दिशाएँ और विदिशाएँ मेरे लिये रससे परिपूर्ण हो जायँ ॥ २ ॥ हे दर्भमालाधार वंश! तुम यज्ञरूप विष्णुके ललाटस्थानीय हो। हे ललाटके प्रान्तद्वय! तुम दोनों यज्ञरूप विष्णुके ओष्ठसन्धिरूप हो। हे बृहत्-सूची! तुम यज्ञीय मण्डपकी सूची हो। हे ग्रन्थि! तुम यज्ञीय विष्णुरूप मण्डपकी मजबूत गाँठ हो। हे हविर्धान! तुम विष्णुसम्बन्धी हो, इस कारण विष्णुकी प्रीतिके लिये तुम्हारा स्पर्श करता हूँ। दोनों हविर्धानों (शकटों)-को दक्षिणोत्तर स्थापित करके उनके ढक्कनोंका मण्डप बनाये। हविर्धान-मण्डपके पूर्वद्वारवर्ती स्तम्भके मध्यमें कुशोंकी माला गूँथे ॥ ३ ॥

ॐ अग्निर्देवताद्वातोदेवतासूष्योदेवताचन्द्रमादेवतावसवोदेवतारुद्रा-
 देवताऽऽदित्यादेवतामरुतोदेवताविश्वेदेवादेवताबृहस्पतिर्देवतेन्द्रो-
 देवतावरुणोदेवता ॥४॥ ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो
 नमः॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥५॥ वामदेवाय
 नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय
 नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय
 नमो मनोन्मनाय नमः॥६॥ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः॥
 सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥७॥

अग्निदेवता, वायुदेवता, सूर्यदेवता, चन्द्रदेवता, वसुदेवता, रुद्रदेवता, आदित्यदेवता, मरुत्-देवता, विश्वेदेवदेवता, बृहस्पतिदेवता, इन्द्रदेवता और वरुणदेवताका स्मरण करके मैं इस इष्टकाको स्थापित करता हूँ ॥ ४ ॥ मैं सद्योजात नामक परमेश्वरकी शरण लेता हूँ। पश्चिमाभिमुख भगवान् सद्योजातके लिये प्रणाम है। हे रुद्रदेव! अनेक बार जन्म लेनेहेतु मुझे प्रेरित मत कीजिये, किंतु जन्मसे दूर करनेके निमित्त मुझे तत्त्वज्ञानके लिये प्रेरणा प्रदान कीजिये। संसारके उद्धारकर्ता सद्योजातके लिये नमस्कार है ॥ ५ ॥ उत्तराभिमुख वामदेवके लिये नमस्कार है। उन्हींके विग्रहस्वरूप ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, रुद्र, काल, कलविकरण, बलविकरण, बल, बलप्रमथन, सर्वभूतदमन तथा मनोन्मन—इन महादेवकी पीठाधिष्ठित शक्तियोंके स्वामियोंको नमस्कार है ॥ ६ ॥ दक्षिणाभिमुख सत्त्वगुणयुक्त अघोर नामक रुद्रदेवके लिये प्रणाम है। इसी प्रकार राजसगुणयुक्त 'घोर' तथा तामसगुणयुक्त 'घोरतर' नामक रुद्रके लिये प्रणाम है। हे शर्व! आपके रुद्र आदि सभी रूपोंके लिये नमस्कार है ॥ ७ ॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ८ ॥
 ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपति-
 ब्रह्मा शिवो मे ऽअस्तु सदा शिवोऽम् ॥ ९ ॥ ॐ शिवोनामासिस्वधिति-
 स्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिँसीँ ॥ निर्वर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्यायप्रजननाय-
 रायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्ष्याय ॥ १० ॥ ॐ विश्वा निदेव सवित-
 र्दुरितानि परासुव ॥ यद्बुद्धन्तन् ऽआसुव ॥ ११ ॥

हमलोग उस पूर्वाभिमुख तत्पुरुष महादेवको गुरु तथा शास्त्रमुखसे जानते हैं; ऐसा जानकर हम उन महादेवका ध्यान करते हैं, इसलिये वे रुद्र हमको ज्ञान-ध्यानके लिये प्रेरित करें ॥ ८ ॥ उन ऊर्ध्वमुखी भगवान् ईशानके लिये प्रणाम है जो वेदशास्त्रादि विद्या और चौंसठ कलाओंके नियामक, समस्त प्राणियोंके स्वामी, वेदके अधिपति एवं हिरण्यगर्भके स्वामी हैं। वे साक्षात् ब्रह्मस्वरूप परमात्मा शिव हमारे लिये कल्याणकारी हों (अथवा उनकी कृपासे मैं भी सदाशिवस्वरूप हो जाऊँ) ॥ ९ ॥ हे क्षुर! आपका नाम 'शान्त' है। आपके पिता वज्र हैं। मैं आपके लिये नमस्कार करता हूँ। आप मुझे किसी प्रकारकी क्षति मत पहुँचाइये। हे यजमान! आपके बहुत दिनोंतक जीवित रहनेके लिये, अन्न-भक्षण करनेके लिये, संततिके लिये, द्रव्यवृद्धिके लिये तथा उत्तम अपत्य उत्पन्न होनेके लिये और उत्तम सामर्थ्यकी प्राप्तिके लिये मैं आपका वपन (मुण्डन) करता हूँ ॥ १० ॥ हे सूर्यदेव! आप मेरे सभी पापोंको दूर कीजिये और जो कुछ भी मेरे लिये कल्याणकारी हो, उसे मुझे प्राप्त कराइये ॥ ११ ॥

ॐ द्यौः शान्तिरुत्तरिक्षुः शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयुः
 शान्तिः ॥ वनस्पतयुः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वुः शान्तिः
 शान्तिरिव शान्तिः सामा शान्तिरधि ॥ १२ ॥ ॐ सर्वेषां वा एष वेदानां ऽरसो
 यत्साम सर्वेषामेवैनमेतद्वेदानां ऽरसेनाभिषिञ्चति ॥ १३ ॥ ॐ शान्तिः
 शान्तिः शान्तिः । सुशान्तिर्भवतु । सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ॥

॥ इति स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्यायः ॥

॥ इति रुद्राष्टाध्यायी समाप्ता ॥

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद् भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥

अनेन कृतेन श्रीरुद्राभिषेककर्मणा श्रीभवानीशङ्करमहारुद्रः प्रीयताम्, न मम ।

ॐ श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु ।

द्युलोकरूप शान्ति, अन्तरिक्षरूप शान्ति, भूलोकरूप शान्ति, जलरूप शान्ति, ओषधिरूप शान्ति, वनस्पतिरूप शान्ति, सर्वदेवरूप शान्ति, ब्रह्मरूप शान्ति, सर्वजगत्-रूप शान्ति और संसारमें स्वभावतः जो शान्ति रहती है, वह शान्ति मुझे परमात्माकी कृपासे प्राप्त हो ॥ १२ ॥ सभी वेदोंका तत्त्वस्वरूप रस, जो सामवेद अथवा भगवान् साम (भगवान् विष्णु या कृष्ण—‘वेदानां सामवेदोऽस्मि’) हैं, वे अपने उसी सामरससे समस्त वेदोंका अभिसिञ्चन करते हैं ॥ १३ ॥

॥ इस प्रकार स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्याय पूर्ण हुआ ॥

॥ इस प्रकार रुद्राष्टाध्यायी सम्पूर्ण हुई ॥



उत्तर-षडङ्गन्यास

रुद्राभिषेकके अनन्तर पृ०-सं० ६७के अनुसार निम्न रीतिसे पुनः षडङ्गन्यास करे—

- १-‘ॐ मनोजूति०’ यह मन्त्र पढ़कर ‘ॐ हृदयाय नमः’ कहते हुए हृदयका स्पर्श करे।
 - २-‘ॐ अबोध्याग्नि०’ यह मन्त्र पढ़कर ‘ॐ शिरसे स्वाहा’ कहते हुए मस्तकका स्पर्श करे।
 - ३-‘ॐ मूर्ध्नि०’ यह मन्त्र पढ़कर ‘ॐ शिखायै वषट्’ कहते हुए शिखाका स्पर्श करे।
 - ४-‘ॐ मर्माणि०’ यह मन्त्र पढ़कर ‘ॐ कवचाय हुम्’ कहते हुए दोनों कन्धोंका स्पर्श करे।
 - ५-‘ॐ विश्वत०’ यह मन्त्र पढ़कर ‘ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्’ कहते हुए दोनों नेत्र तथा ललाटके मध्यभागका स्पर्श करे।
 - ६-‘ॐ मानस्तोके०’ यह मन्त्र पढ़कर ‘ॐ अस्त्राय फट्’ कहते हुए बायें हाथकी हथेलीपर ताली बजाये।
- इस प्रकार षडङ्गन्यास तथा ‘ध्यायेन्नित्यं महेशं०’ से ध्यान करके उत्तरपूजन करना चाहिये।

उत्तरपूजन*

यदि मन्दिर इत्यादिमें प्रतिष्ठित मूर्ति हो तो उत्तरपूजनके अन्तर्गत स्नान कराकर पुष्पादिसे शृंगार करे और उत्तरपूजन करके आरती करे। संक्षेपमें निम्न रीतिसे उत्तरपूजन करे—

* जो लोग अति संक्षेपमें पूजन करना चाहें, वे ‘ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, उत्तरपूजनार्थं सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पबिल्वपत्राणि समर्पयामि’ बोलकर गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा बिल्वपत्र भगवान् शिवको अर्पित करें। यथासम्भव नैवेद्य भी अर्पित करें।

पाद्य—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

अर्घ्य—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। (अर्घ्यजल चढ़ाये।)

आचमन—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनीय जल चढ़ाये।)

स्नान—

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय

च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि। (स्नानीय जल चढ़ाये।)

वस्त्र-यज्ञोपवीत-उपवस्त्र—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि, वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं यज्ञोपवीतञ्च समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं तथा च उपवस्त्रं समर्पयामि, उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (वस्त्र, आचमनीय जल, यज्ञोपवीत, आचमनीय जल, उपवस्त्र तथा आचमनीय जल चढ़ाये।)

गन्धानुलेपन—

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपहृद्येश्रियम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, गन्धानुलेपनं समर्पयामि। (गन्ध चढ़ाये।)

अक्षत—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, अलङ्करणार्थं अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत चढ़ाये।)

पुष्प-पुष्पमाला— माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि चै प्रभो।
 मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
 भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पपुष्पमालां समर्पयामि। (पुष्प तथा पुष्पमाला चढ़ाये।)

बिल्वपत्र— त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।
 त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
 दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
 अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि। (बिल्वपत्र समर्पित करे।)
 दूर्वाङ्कुर— भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। (दूर्वाङ्कुर अर्पित करे।)
 भगवान्के आगे नैवेद्य स्थापित कर धूप-दीप अर्पित करे।

धूप— भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, धूपमाग्रापयामि। (धूप आग्रापित करे।)
 दीप— भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, दीपं दर्शयामि। (दीप दिखाये, हाथ धो ले।)

नैवेद्य— नाभ्या आसीदन्तरिक्षः शीष्णौ द्यौः समवर्तत।
 पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँर अकल्पयन्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि, नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (नैवेद्य निवेदित करे तथा आचमनके लिये जल दे।)

ताम्बूल—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, मुखशुद्ध्यर्थं एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि। (पूगीफल, ताम्बूल अर्पित करे।)

द्रव्यदक्षिणा—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, साद्गुण्यार्थं द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य-दक्षिणा चढ़ाये, तदनन्तर आरती करे।)

आरती—

ॐ आ रात्रि पार्थिवः रजः पितुरप्रायि धामभिः।
 दिवः सदाः सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥
 ॐ इदं हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरः सर्वगणः स्वस्तये।
 आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्धयसनि।
 अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥
 ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो
 देवता रुद्रा देवता ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा
 देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
 आरात्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥
 कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
 सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, कर्पूरनीराजनदीपं दर्शयामि। (कर्पूरसे आरती करे और आरतीके बाद जल गिराये। फूल चढ़ाये, फिर दोनों हाथोंसे आरती लेकर हाथ धो ले। तदनन्तर आरती-स्तुति करे।)

भगवान् महादेवजीकी आरती*

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा। ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा ॥ १ ॥ ॐ हर हर महादेव ॥
 एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै। हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै ॥ २ ॥ ॐ हर हर० ॥
 दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै। तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै ॥ ३ ॥ ॐ हर हर० ॥
 अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी। त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी ॥ ४ ॥ ॐ हर हर० ॥
 श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे। सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे ॥ ५ ॥ ॐ हर हर० ॥
 कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र शूलधारी। सुखकारी दुखहारी जग-पालनकारी ॥ ६ ॥ ॐ हर हर० ॥

* यहाँ दो आरती-स्तुति दी गयी हैं, अपनी भावनाके अनुसार कोई भी कर सकते हैं।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका। प्रणवाक्षरमें शोभित ये तीनों एका ॥ ७ ॥ ॐ हर हर ॥
त्रिगुणस्वामिकी आरति जो कोइ नर गावै। भनत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित पावै ॥ ८ ॥ ॐ हर हर ॥

भगवान् गङ्गाधरकी आरती

ॐ जय गङ्गाधर जयहर जय गिरिजाधीश। त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीश ॥ १ ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥
कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने। गुञ्जति मधुकरपुञ्जे कुञ्जवने गहने ॥
कोकिलकूजित खेलत हंसावन ललिता। रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता ॥ २ ॥ ॐ हर हर हर ॥
तस्मिंल्ललितसुदेशे शाला मणिरचिता। तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसहिता ॥
क्रीडा रचयति भूषारञ्जित निजमीशम्। इन्द्रादिक सुर सेवत नामयते शीशम् ॥ ३ ॥ ॐ हर हर हर ॥
बिबुधबधू बहु नृत्यत हृदये मुदसहिता। किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वर सहिता ॥
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते। कृष्ण कृष्ण ललिता वेणुं मधुरं नाटयते ॥ ४ ॥ ॐ हर हर हर ॥
रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलिता। चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक तां ॥
तां तां लुप चुप तां तां डमरु वादयते। अंगुष्ठांगुलिनादं लासकतां कुरुते ॥ ५ ॥ ॐ हर हर हर ॥
कर्पूरद्युतिगौरं पञ्चाननसहितम्। त्रिनयनशशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम् ॥
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम्। डमरुत्रिशूलपिनाकं करधृतनृकपालम् ॥ ६ ॥ ॐ हर हर हर ॥

मुण्डै रचयति माला पन्नगमुपवीतम् । वामविभागे गिरिजारूपं अतिललितम् ॥
 सुन्दरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम् । इति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम् ॥ ७ ॥ ॐ हर हर हर० ॥
 शङ्खनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते । नीराजयते ब्रह्मा वेदत्रचां पठते ॥
 अतिमृदुचरणसरोजं हृत्कमले धृत्वा । अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा ॥ ८ ॥ ॐ हर हर हर० ॥
 ध्यानं आरति समये हृदये अति कृत्वा । रामस्त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा ॥
 संगतिमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते । शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः शृणुते ॥ ९ ॥ ॐ हर हर हर० ॥

मन्त्रपुष्पाञ्जलि*— हाथमें फूल लेकर प्रार्थना करे—

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।

मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे ॥

* बृहत्पुष्पाञ्जलि— हाथमें फूल लेकर निम्न मन्त्रोंका पाठ करे—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः ॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः । ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापरार्थात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥ ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुत विश्वतस्पात् । सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः । ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि । (फूल चढ़ाये ।)

श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः ।

मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि । (मन्त्र-पुष्पाञ्जलि समर्पण करे ।)

प्रदक्षिणा—(गर्भगृहके भीतर शिवजीकी आधी प्रदक्षिणा करनी चाहिये ।)

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सुकाहस्ता निषङ्गिणः ।

तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।

तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि । (प्रदक्षिणा करे ।)

प्रणाम—

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे ।

साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि । (प्रणाम निवेदित करे ।)

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वानुसृतस्वभावात् ।

करोति यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयेत्तत् ॥

अनया पूजया श्रीसाम्बसदाशिवः प्रीयतां न मम । श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु । (कहकर समस्त पूजनकर्म भगवान्को अर्पित कर दे।)

क्षमा-प्रार्थना—हाथ जोड़कर प्रार्थना एवं क्षमा-याचना करे—

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः ।
 यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ॥*
 पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः ।
 त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव ॥
 मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सदाशिव ।
 यत् पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥
 आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
 पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥

* मन्त्रका भाव यह है कि जिस उपायसे मेरे पुत्रादि तथा गो आदि पशुओंको कल्याणकी प्राप्ति हो और इस ग्राममें सम्पूर्ण प्राणी पुष्ट तथा उपद्रवरहित हों, इसके निमित्त हम अपनी बुद्धिको महाबली, जटाजूटधारी एवं शूरवीरोंके निवासभूत रुद्रके लिये समर्पित करते हैं ।

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
 दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥
 अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
 तस्मात् कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥

[यदि ब्राह्मणद्वारा अभिषेक कराया जाय तो निम्नलिखित कार्य सम्पन्न किये जायँ। अभिषेक यदि ब्राह्मणद्वारा न कराया हो तो भी आगे लिखे विसर्जन-मन्त्रसे आवाहित देवोंका विसर्जन कर देना चाहिये।]

दक्षिणादान

(क) ब्राह्मणदक्षिणाका सङ्कल्प—यदि ब्राह्मणोंद्वारा रुद्राभिषेक कराया गया हो तो अग्रलिखित सङ्कल्प कर दक्षिणा ब्राह्मणोंको दे दे। हाथमें जल, अक्षत, कुश तथा दक्षिणा-द्रव्य लेकर निम्न सङ्कल्प करे—

ॐ यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ अद्य "गोत्रः "शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं कृतस्य श्रीरुद्राभिषेककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च रुद्राभिषेककर्तृकेभ्यो नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो मनसेप्सितां दक्षिणां विभज्य दातुमुत्सृज्ये। कहकर ब्राह्मणोंको दक्षिणा प्रदान करे। (यदि एक ही ब्राह्मणद्वारा अभिषेक हुआ हो तो रुद्राभिषेककर्तृकाय "गोत्राय "शर्मणे ब्राह्मणाय बोलना चाहिये।)

(ख) भूयसी दक्षिणाका सङ्कल्प—हाथमें जल, अक्षत, कुश तथा दक्षिणा-द्रव्य लेकर भूयसी दक्षिणाका सङ्कल्प करे—

ॐ अद्य गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं कृतस्य रुद्राभिषेककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीदक्षिणां विभज्य दातुमुत्सृज्ये । कहकर उपस्थित सभी ब्राह्मणोंको यथाशक्ति भूयसी दक्षिणा प्रदान करे ।

अभिषेक—आचार्य जलसे कुशों अथवा आम्रपल्लव आदिके द्वारा निम्न मन्त्रोंसे यजमान आदिका अभिषेक करे । अभिषेकके समय पत्नीको पतिके बायीं ओर बैठना चाहिये ।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षः शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मा शान्तिः सर्वः शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद्भद्रं तन्न आ सुव ॥

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु

ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।

वासुदेवो

जगन्नाथस्तथा

सङ्कर्षणो

विभुः ॥

प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ।
 आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्वहतिस्तथा ॥
 वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ।
 ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥
 कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मैधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ।
 बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥
 एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ।
 आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसिताऽर्कजाः ॥
 ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः ।
 देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥
 ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च ।
 देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥
 अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
 औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
 एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥
 अमृताभिषेकोऽस्तु । शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु ॥

विसर्जन—यदि विसर्जित करनेवाले पार्थिवादि लिङ्गका अभिषेक किया हो तो उत्तरपूजनके अनन्तर अक्षत छोड़ते हुए निम्न मन्त्रोंके पाठके साथ उनका विसर्जन कर दे। अन्य आवाहित गणपत्यादि देवोंका भी विसर्जन कर दे—

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् ।
 इष्टकामसमृद्धयर्थं पुनरागमनाय च ॥
 गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर ।
 यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥
 प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
 स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥
 यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
 न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
 यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि ।
 न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम् ॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः॥

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः॥

रक्षाबन्धन—आचार्य निम्न मन्त्रोंसे यजमानको रक्षासूत्र बाँधे—

ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः।

तन्म आ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।

तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥

तिलक—आचार्य निम्न मन्त्रोंसे यजमानको तिलक करे—

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।

तिलकं ते प्रयच्छन्तु इष्टकामार्थसिद्धये॥

आशीर्वाद—निम्नलिखित मन्त्रोंसे ब्राह्मण आशीर्वाद प्रदान करें—

पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः ।
 घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥
 दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम् ।
 अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात् ॥
 श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
 धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोस्थाः । शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥
 ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
 ॥ ॐ तत्सत् श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः ॥

॥ रुद्राभिषेककर्म सम्पूर्ण ॥

शिवमहिम्नःस्तोत्रम्

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥ १ ॥
अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥ २ ॥
मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ३ ॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
 त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
 अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
 विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥ ४ ॥
 किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
 किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
 अतर्व्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
 कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥ ५ ॥
 अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
 मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
 अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
 यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥
 त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
 प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।

रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
 नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥
 महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
 कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
 सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्भूप्रणिहितां
 न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥ ८ ॥
 ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
 परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
 समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
 स्तुवन्निहेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥ ९ ॥
 तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
 परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः ।

ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगुणदभ्यां गिरिश यत्
 स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥ १० ॥
 अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
 दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
 शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
 स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥ ११ ॥
 अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
 बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
 अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
 प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥ १२ ॥
 यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
 मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः ।
 न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
 र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥ १३ ॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-

विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयनविषं

संहतवतः ।

स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो

विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥ १४ ॥

असिद्धार्था

नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे

निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।

स

पश्यन्तीश

त्वामितरसुरसाधारणमभूत्

स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥ १५ ॥

मही

पादाघाताद्

व्रजति

सहसा

संशयपदं

पदं

विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।

मुहुर्द्यौर्दौःस्थ्यं

यात्यनिभृतजटाताडिततटा

जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १६ ॥

वियद्व्यापी

तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः

प्रवाहो वारां यः पृषत्तलघुदृष्टः शिरसि ते ।

जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
 त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥ १७ ॥
 रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
 रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
 दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
 विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥ १८ ॥
 हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
 र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
 गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
 त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥ १९ ॥
 क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
 क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
 अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
 श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥ २० ॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
 मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
 क्रतुश्रेष्ठस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
 ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥ २१ ॥
 प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
 गतं रोहिद्धूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
 धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
 त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥ २२ ॥
 स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
 पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
 यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटना-
 दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥ २३ ॥
 श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
 श्रिताभस्मालेपः स्वगपि नृकरोटीपरिकरः ।

अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
 तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥ २४ ॥
 मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
 प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
 यदालोक्याह्लादं हृद इव निमज्यामृतमये
 दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान् ॥ २५ ॥
 त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
 स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
 परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
 न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥ २६ ॥
 त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
 नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति ।
 तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
 समस्तं व्यस्तं त्वं शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥ २७ ॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
 स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
 अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
 प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते ॥ २८ ॥
 नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
 नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
 नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
 नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ॥ २९ ॥
 बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
 प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
 जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
 प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥ ३० ॥
 कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
 क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।

इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
 वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥ ३१ ॥
 असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
 सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
 लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
 तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ ३२ ॥
 असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
 ग्रंथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
 सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
 रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥ ३३ ॥
 अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
 पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ।
 स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र
 प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥ ३४ ॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
 अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥ ३५ ॥
 दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
 महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ३६ ॥
 कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
 शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
 स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
 स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥ ३७ ॥
 सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
 पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
 व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
 स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥ ३८ ॥
 आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
 अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ॥ ३९ ॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
 अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥ ४० ॥
 तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
 यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥ ४१ ॥
 एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
 सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥ ४२ ॥
 श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
 स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ।
 कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
 सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥ ४३ ॥

॥ इति शिवमहिम्नःस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्मरणम्

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम् ॥ १ ॥
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम् ।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥ २ ॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे ।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये ॥ ३ ॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥ ४ ॥

॥ इति द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्मरणं सम्पूर्णम् ॥



श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
 नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न'काराय नमः शिवाय ॥ १ ॥
 मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
 मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म'काराय नमः शिवाय ॥ २ ॥
 शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
 श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि'काराय नमः शिवाय ॥ ३ ॥
 वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
 चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व'काराय नमः शिवाय ॥ ४ ॥
 यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
 दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य'काराय नमः शिवाय ॥ ५ ॥
 पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
 शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



‘गीताप्रेस’ गोरखपुरकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल
डाकद्वारा एवं विदेशोंमें पुस्तकें भेजनेकी व्यवस्था केवल गोरखपुरमें है।

gitapressbookshop.in से गीताप्रेस प्रकाशन online खरीदें।

इन्दौर-452001	जी० 5, श्रीवर्धन, 4 आर. एन. टी. मार्ग	(0731) 2526516, 2511977
ऋषिकेश-249304	गीताभवन, पो० स्वर्गाश्रम	(0135) 2430122, 2432792
कटक-753009	भरतिया टावर्स, बादाम बाड़ी	(0671) 2335481
कानपुर-208001	24/55, बिरहाना रोड	फोन/फैक्स (0512) 2352351
कोयम्बटूर-641018	गीताप्रेस मेशन, 8/1 एम, रैसकोर्स	(0422) 3202521
कोलकाता-700007	गोविन्दभवन, 151, महात्मा गाँधी रोड	(033) 22686894,
गोरखपुर-273005	गीताप्रेस—पो० गीताप्रेस	(0551) 2334721, 2331250, फैक्स 2336997
website: www.gitapress.org / e-mail: booksales@gitapress.org		
चेन्नई-600010	इलेक्ट्रो हाउस नं० 23, रामनाथन स्ट्रीट किलपौक	(044) 26615959 ; फैक्स 26615909
जलगाँव-425001	7, भीमसिंह मार्केट, रेलवे स्टेशनके पास	(0257) 2226393 ; फैक्स 2220320
दिल्ली-110006	2609, नयी सड़क	(011) 23269678; फैक्स 23259140
नागपुर-440002	श्रीजी कृपा कॉम्प्लेक्स, 851, न्यू इतवारी रोड	(0712) 2734354
पटना-800004	अशोकराजपथ, महिला अस्पतालके सामने	(0612) 2300325
बेंगलुरु-560027	7/3, सेकेण्ड क्रास, लालबाग रोड	(080) 32408124, 22955190
भीलवाड़ा-311001	जी 7, आकार टावर, सी ब्लॉक, गान्धीनगर	(01482) 248330
मुम्बई-400002	282, सामलदास गाँधी मार्ग (प्रिन्सेस स्ट्रीट)	(022) 22030717
राँची-834001	कार्ट सराय रोड, अपर बाजार, बिड़ला गद्दीके प्रथम तलपर	(0651) 2210685
रायपुर-492009	मिन्नल कॉम्प्लेक्स, गंजपारा, तेलघानी चौक (छत्तीसगढ़)	(0771) 4034430
वाराणसी-221001	59/9, नीचीबाग	(0542) 2413551
सुरत-395001	2016 वैभव एपार्टमेंट, भटार रोड	(0261) 2237362, 2238065
हरिद्वार-249401	सब्जीमण्डी, मोतीबाजार	(01334) 222657
हैदराबाद-500095	41, 4-4-1, दिलशाद प्लाजा, सुल्तान बाजार	(040) 24758311, 66758311

स्टेशन-स्टाल— दिल्ली (प्लेटफार्म नं० 5-6); नयी दिल्ली (नं० 16); हजरत निजामुद्दीन [दिल्ली] (नं० 4-5); कोटा [राजस्थान] (नं० 1); बीकानेर (नं० 1); गोरखपुर (नं० 1); कानपुर (नं० 1); लखनऊ [एन० ई० रेलवे]; वाराणसी (नं० 4-5); मुगलसराय (नं० 3-4); हरिद्वार (नं० 1); पटना (मुख्य प्रवेशद्वार); राँची (नं० 1); धनबाद (नं० 2-3); मुजफ्फरपुर (नं० 1); समस्तीपुर (नं० 2); छपरा (नं० 1); सीवान (नं० 1); हावड़ा (नं० 5 तथा 18 दोनोंपर); कोलकाता (नं० 1); सियालदा मेन (नं० 8); आसनसोल (नं० 5); कटक (नं० 1); भुवनेश्वर (नं० 1); अहमदाबाद (नं० 2-3); राजकोट (नं० 1); जामनगर (नं० 1); भरुच (नं० 4-5); वडोदरा (नं० 4-5); इन्दौर (नं० 5); जबलपुर (नं० 6); औरंगाबाद [महाराष्ट्र] (नं० 1); सिकन्दराबाद [आ० प्र०] (नं० 1); विजयवाड़ा (नं० 6); गुवाहाटी (नं० 1); खड़गपुर (नं० 1-2); रायपुर [छत्तीसगढ़] (नं० 1); बेंगलुरु (नं० 1); यशवन्तपुर (नं० 6); हुबली (नं० 1-2); श्री सत्यसाई प्रशान्ति निलयम् [दक्षिण-मध्य रेलवे] (नं० 1)।

फुटकर पुस्तक-दूकानें—

चूरू-ऋषिकुल

ब्रह्मचर्याश्रम, पुरानी सड़क, ऋषिकेश-मुनिकी रेती; बेरहामपुर-म्युनिसिपल मार्केट काम्प्लेक्स, के० एन० रोड, नडियाड (गुजरात) संतराम मन्दिर; चेन्नई-12, अभिरामी माल, पुरासावलकम, निकट किलपौक/वेपेरी।